અત્રી
ખંડ

|| **रामकथा** ||
मानस-करनधार

मोरारिबापू

बड़ौदा (गुजरात)

दिनांक : २७-१२-२०१४ से ०४-०१-२०१५

कथा-क्रमांक : ७६८

प्रकाशन :
सितम्बर, २०१५

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

हिन्दी अनुवाद
प्रो. कमल महेता

राम-कथा पुस्तक प्राप्ति
सम्पर्क-सूत्र :
ramkatha9@yahoo.com

ग्राफिक्स
स्वर ऐनिम्स

प्रेम-पियाला

मोरारिबापू ने बडौदा(गुजरात) में दिनांक २७-१२-२०१४ से ४-१-२०१५ दरमियान 'मानस-करनधार' रामकथा का गान किया। 'मानस' के पात्र और प्रसंग हमें कर्णधार ढूंढकर देते हैं, ऐसे श्रद्धा-सूर के साथ बापू ने राष्ट्र का, परिवार का, युवापीढ़ी का, समाज-सेवा क्षेत्र का, विज्ञान-क्षेत्र का, धर्मजगत का एवम् अध्यात्मजगत का कर्णधार कौन हो सकता है, उसकी तात्त्विक तपास करते हुए कहा कि हमारे समाज को यह सात कर्णधार की आवश्यकता है।

'मानस' में निर्दिष्ट अवधरूपी जहाज के कर्णधार दशरथजी को निमित्त बनाकर बापू ने राजा को राष्ट्र के कर्णधार का बिरुद दिया। घर के कोई सदस्य में भगवान राम के पांच-सात लक्षण दिखाई दे तो उनको परिवार का कर्णधार समझने की हिमायत की। इस में भी विशेषत: सत्य, स्मित, गांभीर्य, औदार्य, सेवाभावना ईत्यादि राम के गुणों को रेखांकित कर बापू ने कहा कि ऐसी गुणसम्पन्न व्यक्ति का परिवार के कर्णधार के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। तो, बुद्धि और शक्ति के प्रतीक हनुमानजी को युवानी के कर्णधार का दर्जा देते हुए बापू ने कहा, युवाओं का कर्णधार हनुमानजी के सिवा और कोई नहीं हो सकता। न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि मानवीय दृष्टि से भी हनुमानजी के गुणों की महिमा प्रगट करते हुए बापू ने निवेदन किया कि हतोत्साह युवाओं को हनुमानजी आत्मबल या बौद्धिक बल प्रदान करते हैं।

सामाजिक क्षेत्र के कर्णधार का परिचय भी बापू ने दिया और उस संदर्भ में गांधी के ग्यारह महाव्रत का महिमागान भी किया। बापू का कहना हुआ कि जिन्होंने समाजसेवा करनी हो उन्हें यह व्रतों का यथाशक्ति पालन करना चाहिए। तो, ज्ञान-विज्ञान के कर्णधार आदि कवि वाल्मीकि को बापू ने शुद्ध और संवेदनशील वैज्ञानिक के रूप में प्रस्तुत किया।

धर्मजगत का कर्णधार कौन हो सकता है, ऐसे सवाल के साथ बापू ने कहा, ''मेरे लिए 'मानस' ही कर्णधार है। जो 'कुरान' को माने उनके लिए 'कुरान' कर्णधार; 'बाईबल' को माने उनके लिए 'बाईबल।' मुझे जो लगा वह कहता हूं; और ये तुलसी ने भी कहा है। यद्यपि आप को ऐसे ही मान लेने की जरूरत नहीं है। लेकिन मेरे लिए धर्मजगत का कर्णधार 'रामचरित मानस' है, 'रामचरित मानस' है, 'रामचरित मानस' है। 'इति त्रिसत्यम्।' ''

अध्यात्मजगत के कर्णधार के रूप में सद्गुरु का महिमागान करते हुए मोरारिबापू ने कहा कि हमारा छोटा-सा परिवार, हमारा समाज, इस समाज में रहा युवावर्ग, हमारा राष्ट्र ये सब उनकी छाया में है। उन सभी का कर्णधार सद्गुरु है, जो ओल इन वन है। मेरे अनुभव से कोई एक बुद्धपुरुष सभी कर्णधारों की पूर्ति कर देता है।

'मानस करनधार' रामकथा के माध्यम से यूं 'मानस' के विविध पात्रो एवम् प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में मोरारिबापू ने समाज के सात क्षेत्रों के कर्णधारों का परिचय दिया।

– नीतिन वडगामा

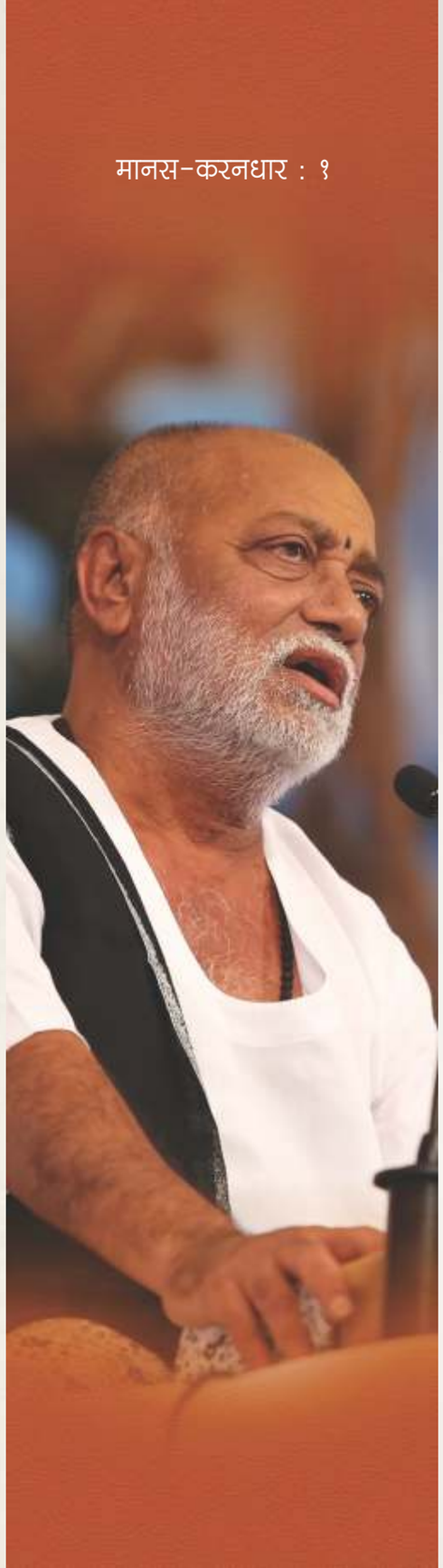

'मानस' के पात्र और प्रसंग हमें कर्णधार ढूंढकर देते हैं

करनधार तुम्ह अवध जहाजू। चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।
करनधार सदगुर दृढ नावा। दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।

बाप, पुन: अवसर मिला है; अनेक प्रकार के शुभ से पूर्ण इस संस्कार नगरी के आंगन में रामकथा गाने का अवसर मिला है, इसका मुझे भी विशेष हर्ष है। नौ दिनों की रामकथा के आरंभ में जिन्होंने औदार्य से पधारकर हमें आशीर्वाद दिये ऐसे परम पूज्य गोस्वामी महाराजश्री, सभा में उपस्थित संत महंत पूज्यगण; हमारे राज्य के हमारे आदरणीय मंत्री श्री सौरभभाई ने अपना शुभ भाव व्यक्त किया। विधविध क्षेत्र के आप सब महानुभाव, बड़े उदरवाली वड उदरी है, सब कुछ अंदर उतार दे ऐसी यह नगरी है। रामकथा के मेरी ममता के पात्र, सभी श्रावक भाई-बहन, सबको व्यासपीठ से प्रणाम।

इस कथा में 'मानस फाउन्डेशन' के अग्रणी, मेरे परम स्नेही राजुभाई दोशी और उनका समग्र परिवार जो केवल, केवल और केवल निमित्तमात्र बनकर ऐसे भव्य और दिव्य आयोजन के यजमान है उनके लिए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। बाप, खुश रहो। बड़ौदा नगरी में काफी कथाएं हुई है! याद नहीं कि कहां-कहां पर हुई है। कारेलीबाग में भगवान उपेन्द्राचार्य के आश्रम में एक छोटे से होल में हमने रामकथा गाई। फिर कभी दालियावाड़ी, कभी काछियावाड़ी, कभी दिव्य जीवन संघ, पता नहीं, कितनी कथाएं हुई। उसके विविध यजमान और आयोजक उन सभी को मैं याद करता हूं। मंदिर के एक छोटे से होल में, पचास से सौ आदमी बैठ सके बस उतने मेरे पढ़े-लिखे श्रोतागण; केवल भावक नहीं विचारक भी थे। उनके समक्ष रामकथा गाई। फिर धीरे-धीरे गोमुख से निकली गंगा का रूप बदलता गया। बड़े पैमाने पर आयोजन होते गए। जिसमें अविस्मरणीय है ललितभाई पटेल - स्वर्गस्थ है और उनकी पूरी टीम सराहनीय रही। उनके आयोजन के लिए एक बार मैंने लिखकर दिया जिस में मैंने 'रामचरित मानस' के एक शब्दब्रह्म का उपयोग किया कि ललितभाई 'भली रचना।' आज राजू को भी कहूं 'भली रचना।' बाप, यह मेरा प्रमाणपत्र नहीं है, प्रेमपत्र है।

ये हृदय के प्रेम के उद्‌गार है। ललितभाई भी इस तरह के आयोजन करते थे। फिर उनके चि.अनुजभाई पटेल ने यह बोझ उठाया। इस कथा में भी उनका पूरा सहयोग मिला है। मुझसे बातें करते रहे। फिर ऐसा भव्य और दिव्य आयोजन राजुभाई और उनके परिवार ने निमित्त बनकर किया।

हृदय में श्रद्धा हो तो अकेला आदमी भी क्या नहीं कर सकता है साहब? श्रद्धा की ट्यूब में पंक्चर नहीं होना चाहिए। मुझसे कई लोग कहते हैं राजूभाई तो जैन है। मैंने कहा तो क्या वह आदमी नहीं है? सभी को यही प्रश्न होता है। पूरी परंपरा जैन की है। उनकी माताजी को देखिए। उनके सभी आचार्य भगवंतों की परंपरा के है। साहब, सभी को उत्सुकता रहती है कि जैन ने इतना कुछ क्यों किया? यह जैन ने नहीं किया है पर कहीं जाकर किया है। किसी जगह जाकर यह आयोजन किया है। सभी अपने-अपने धर्मों का आदर करें पर ऐसी संकुचित बातों में नहीं पड़ना चाहिए। अभी-अभी ऐसा भोग बना है कि यजमान जैन ही मिले हैं। सुविधा तो है ही। किसी भी तरह से कार्य संपन्न करे। बाप, पुनः कहता हूं, यह मेरा प्रेमपत्र है। प्रसन्न रहिए। राजुभाई को तो हो, पर इन बच्चों को क्या? छोटे-छोटे जवान लड़कें जो आज के जमाने के साथ कदम मिलाकर चलते हैं, उन्हें भगवद्‌चरित्र से इतना सारा भाव! मैं स्वागत करता हूं।

बड़ें भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।

साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं परलोक संवारा।।

मुझे पता है 'मानस' की यह चौपाई आप भूले नहीं हैं। इन दो पंक्तियों के आधार पर बड़ौदा में तीन-तीन कथाएं हुई हैं। अब मैं चौथी शुरू करूं तो आपको लगेगा कि बापू को और कुछ सूझता ही नहीं है! मुझे तो गुरुकृपा, संतों के आशीर्वाद और शास्त्रकृपा से आपके सद्‌भाव से 'मानस' हंमेशा तरोताजा लगता है। हररोज आपके साथ बातें करने की इच्छा होती है। पर इस बार विषय बदलता हूं। ये शब्द भी भगवान राम के ही है। 'उत्तरकांड' की पंक्तियां है -

करनधार सदगुर दृढ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।

'अयोध्याकांड' की चौपाई -

करनधार तुम्ह अवध जहाजू।
चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।

रामपिता दशरथजी, रामजननी कौशल्याजी और मानो पूरे समाज की ध्वनि इस पंक्ति में है। इसमें समस्त राज परिवार समस्त अयोध्या की ध्वनि सुनाई देती है। मेरी कुटिया से यहां आते वक्त मन में कौंध हुई कि इस बार बड़ौदा की कथा में मूल तात्त्विक-सात्त्विक चर्चा संवाद के रूप में करेंगे उसका विषय होगा 'मानस-कर्णधार।' तुलसीजी ग्राम्यगिरा में बातें करते हैं अतः 'करनधार' शब्द प्रयुक्त करते हैं। शिष्ट संस्कृत भाषा का शब्द 'कर्णधार' है। हमारा मूल केन्द्रीय संवाद यही रहेगा।

बाप, हमारे समस्त समाज को सात कर्णधार की आवश्यकता है। युवापीढ़ी का कर्णधार, परिवार का, समाजक्षेत्र की सेवा का, कोई धर्मजगत का, कोई विज्ञान की नौका का, सबका सिरमौर शिखर कलश सम अध्यात्म जगत का कर्णधार। इस रामकथा में मैं इन सातों क्षेत्रों की बातचीत करना चाहता हूं। यह कोई उपदेश नहीं है। उपदेश की मेरी क्षमता भी नहीं है। उपदेश कौन दे सके? मैंने अभी-अभी कहना शुरू किया है कि खाकी कपड़े प्रायः पुलिसमेन पहने, पोस्टमेन पहने, थोड़ा ज्यादा गहरा रंग बनाकर संन्यासी पहने। पोस्टमेन का काम संदेश देना है, पुलिस का काम आदेश देना है। संन्यासी-महापुरुष-धर्माचार्य का काम उपदेश देना है। उपदेश और आदेश की क्षमता मुझमें नहीं है। यह समझ मुझ में है। आप आशीर्वाद दीजिए कि यह समझ बरकरार रहे। मैं तो केवल तुलसी का संदेश गांव-गांव पहुंचाता हूं।

अनेक शुभतत्त्वों से भरी हुई इस विद्या-संस्कार-कला-संगीत अध्यात्म नगरी में क्या-क्या नहीं है? इस नगरी में कैसे-कैसे आध्यात्मिक पुरुष आए! विवेकानंदजी, महर्षि अरविंद, संगीत के दिग्गज महापुरुष इस भूमि ने दिए हैं। आध्यात्मिक महापुरुष दिए हैं। कलाजगत के संपूर्ण ऐसे विद्यापुरुष, संस्कारपुरुष, शब्दउपासक, सर्जक और शिक्षण अद्वितीय है इस नगरी का। गायकवाड सरकार ने शिक्षण की प्रीति और रुचि जगाई। शुभ तत्त्वों से भरी इस नगरी को अपने बाहु में समेटना मुश्किल है। मैं पूज्यचरण की पावन परंपरा के कितने महापुरुष यहां विराजमान इन सबका स्मरण करता हूं। मुझे खास कहना चाहिए भागवतकथाक्षेत्र के समर्थ महापुरुष, तपस्वी पूज्यपाद डोंगरेबापा अविस्मरणीय है। बड़ौदा के छोटे से घर में रहते थे। अक्सर मैं उनके दर्शन करने जाता था। उसी तरह विनोबा भावे! जो-जो स्मरण में आते हैं उन सभी पुण्यश्लोक को याद करता हूं। अतः यह नगरी शुभ है। कठिन बातों को भी समझ सके ऐसे स्तरीय श्रोताजन यहां है।

विश्व को निरंतर सात कर्णधारों की आवश्यकता है। हम सब मिलकर इसको लेकर संवाद की रचना करे। हम किसी न किसी क्षेत्र में होते हैं। हमें भी किसी कर्णधार की आवश्यकता रहती है। नौ दिनों की कथा में से हम अपने कर्णधार को पसंद कर ले। रुचि अनुसार, भीतर की आवाज़ सुनकर पसंद करे। तो बाप, इन सात क्षेत्रों में से हमें कर्णधार पसंद करना है। युवाजगत को अपना कर्णधार ढूंढ लेना चाहिए। राष्ट्र का कर्णधार कौन? धर्मजगत, परिवार, विज्ञान का कर्णधार कौन? और अंत में शिरोमणि आध्यात्मिक जगत का

कर्णधार सद्गुरु! मेरी समझ में ऐसा आता है। महाराजश्री का आशीर्वाद चाहता हूं कि सद्गुरुरूपी कर्णधार मिल जाय तो सभी क्षेत्र के मार्गदर्शक मिल जाय। इसीलिए तुलसी 'रामचरित मानस' का आरंभ गुरुवंदना से करते हैं। कोई सद्गुरु मिले जो हम पर दबाव न डाले। हमारे तनाव कम करे। हमें केवल पापी-पापी कहकर दुतकारे नहीं। चाहे तू पापी हो मैं तुझे प्रेम दूंगा, ऐसा कहकर कंधे पर हाथ रखे। ऐसे कर्णधार की विश्व को जरूरत है। अत: तुलसीजी राष्ट्रनायक को भी कर्णधार कहते हैं। हम इसके बारे में और चर्चा करेंगे।

हमारे सभी सद्ग्रंथ गुप्त-प्रकट खदानों से भरे हैं। तुलसीदास को कहना पड़ा किसी गुरु की कृपा हो जाय तो 'गुपत प्रगट जहाँ जो जेहि खानिक।' एक विचार अपना गुरु हो सकता है। एक काव्य भी अपना गुरु हो सकता है। भगवतीकुमार शर्माबापा की ये खास पंक्तियां -

हरि, मने अढी अक्षर शिखवाडो!
अेंशीने आरे आव्यो छुं;
मारो अगर जिवाडो!

सूरत के एक समर्थ सर्जक भगवतीकुमार शर्मा, साहित्य परिषद के प्रमुख पद पर आसीन हो चुके हैं। ऋजु महापुरुष उनकी यह नई रचना है। उनके शेष समय में आई यह रचना। अब मुझे कुछ नया नहीं सीखना है। ढ़ाई अक्षर पढ़ा दीजिए।

आंगण सूनुं, क्यारो खाली, प्रेमनी वेल उगाडो!
हरि, मने अढी अक्षर शिखवाडो!

तो, एक विचार, एक शब्द, एक रचना, एक पुस्तक, एक घटना, एक मिलन, एक ऐसा टर्निंग पोईन्ट हमारी कर्णधार बन सकता है। हम जैसे वक्ता की श्रद्धा बढ़ती है कि कितने ही युवा सुनने को आतुर है। वृद्धकथा में आते हैं उन्हें प्रणाम। उनके लिए लाईव टेलिकास्ट की भी व्यवस्था हो चुकी है। पर मंडप के बिना जी नहीं लगता! हमें ढूंढना है स्वयं का कर्णधार। हमारा शोषण न कर प्रेम से पोषण करे। हे मालिक ऐसा कर्णधार दे। हमें सात क्षेत्रों के कर्णधार की खोज है। उसमें श्रेष्ठ है -

करनधार सदगुर दृढ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।

'रामायण' में तो आपको छोटी-छोटी बातों में से इतने सारे कर्णधार मिलेंगे कि हम धन्य हो जाय। कुछ लेना ही हो, कुछ मार्गदर्शन प्राप्त करना ही हो तो 'मानस' के पात्र और प्रसंग हमें कर्णधार ढूंढ देते हैं। आईए, नौ दिन साथ मिलकर कर्णधार की खोज करे जो सर्वकालीन हो, जो देशकाल के अनुरूप हो, जो किसी लेबल का न हो; जो स्तरीय हो, जिसकी एक अवस्था हो उसकी खोज अत्यंत आवश्यक है। यह बात सहसा मेरे दिमाग में आई तो निर्णय लिया।

'रामचरित मानस' की जो पावन प्रवाही परंपरा है। आप सब जानते हैं यह सात सोपान की यात्रा है। प्रथम सोपान 'बालकांड', द्वितीय 'अयोध्याकांड', तृतीय 'अरण्य', चतुर्थ 'किष्किन्धा', पंचम 'सुन्दरकांड', षष्ठ 'लंकाकांड' और सप्तम 'उत्तरकांड।' 'मानस' का यह सद्ग्रंथीय रूप है। आप जानते हैं यह अध्यात्म जगत की सप्तपदी है। इसका प्रथम सोपान 'बालकांड' है। इसके मंगलाचरण में सात मंत्र है। मंगलाचरण के शास्त्रीयरूप से अमुक प्रकार है। संबोधनात्मक, आशीर्वादक, विषय-दर्शनात्मक परिचयात्मक ऐसा है। मुझे 'मंगलाचरण' शब्द प्रिय है। मंगलाचरण करना इसमें उच्चारण है।

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

तुलसी ने उच्चारण किया। अत: मंगल उच्चारण को हमने मंगलाचरण कहा। मंगल उच्चारण की महत्ता तो है ही। अपने देश ने स्वीकृत की हुई वस्तु है कि मंगल आचरण की महिमा ज्यादा है। अत: हमने मंगल उच्चारण के स्थान पर मंगल आचरण शब्द से विभूषित किया। उच्चारण तो बहुत अच्छा है साहब, पर प्रश्न है आचरण का।

तो, सात मंत्रों से मंगलाचरण हुआ। उसके प्रथम मंत्र में वाणी और विनायक की वंदना हुई। फिर नित्य बोधमय ऐसे जगद्गुरु शंकर की वंदना हुई। परम विज्ञान पुरुष आदि कवि वाल्मीकि की और हनुमान महाराज की विशुद्ध वैज्ञानिक वंदना हुई। सीताराम की वंदना की और तुलसी को अंत में जो कहना है जो उनका अपना मनोभाव है उसमें सब कुछ है। 'मैं इसीलिए कहता हूं कि मुझे स्वान्त: सुख प्राप्त हो।'

स्वान्त:सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।

यों मंगल उच्चारण मंगलाचरण के रूप में करते हैं। फिर सीधे ग्राम्यगिरा में, लोकभोग्य भाषा में तुलसी समग्र शास्त्र को उतारते हैं। यह प्रवाही परंपरा है, अत: उसका स्मरण कर लें। पांच सोरठें लिखे। जिसमें गणेश, सूर्य भगवान, विष्णुभगवान, शिव और दुर्गा माँ का स्मरण किया। जगद्गुरु आदिगुरु शंकराचार्य भगवान ने सनातन धर्मावलंबी के लिए पंचदेव की उपासना हेतु आग्रह रखा। तुलसीने इस मत का स्वीकार कर एक सेतु रचकर इन पंचदेवों का स्मरण किया। फिर गुरुवंदना की।

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररुप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।

मैंने कई बार कहा है फिर भी स्मरण करा दूं कि गुरु गणेश सचमुच कर्णधार है, सद्गुरु है। गुरु गौरी है, गुरु शंकर है, गुरु विशाल विचारधारावाले विष्णु है और हमारे तमस को नष्ट करनेवाले सूर्य भी है। अत: अंत में जब गुरुवंदना करते हैं तब मेरे व्यक्तिगत मतानुसार मेरे आंतरिक विश्राम और विकास हेतु विचार करूं तो ऐसा लगे कि कोई ऐसा सद्गुरु, ऐसा कर्णधार मिले जिसके मार्गदर्शन में हम जीए तो गणेशपूजा भी हो जायगी। गौरी पूजा भी हो जायगी। विष्णुपूजा भी कही जायगी, रुद्राभिषेक भी हो जायगा और जीवन में औदार्य भी आयगा। विष्णु व्यापक है। विशाल समुद्र के बीच निवास करनेवाला तत्त्व है। दो रीति से उदारता प्रकट होती है। एक अभाव में से प्रकट होती है। जिसने जीवन में बहुत अभावग्रस्तता देखी हो वह बहुत उदार है। विचारणीय है! जो अभावग्रस्त रहे होंगे वे सहज दे देते हैं, क्योंकि उसे पता है कि उसके पास क्या था? दूसरे उदारता स्वभाव में होती है। कईयों का स्वभाव ही होता है। वे संकीर्ण हो ही नहीं सकते। ऐसे विष्णु भगवान है। तो एक कर्णधार के रूप में गुरु प्राप्त हो तो यों ही यह पंचपूजा हो जाय।

जो हमें शुभ की छाया में लाभ दिलाए वह गुरु गणेश है; जो हमें अंधकार में से उजाले की ओर ले जाय ऐसे सद्गुरु सूर्य है। जो हमें संकीर्णता से मुक्त कर औदार्य का दान प्रदान करे वह गुरु विष्णु है। जो हमें कल्याणकारी विचारों से विभूषित करे ऐसे गुरु शिव है। जो हमारी श्रद्धा को खंडित न करे ऐसे गुरु गौरी है। इस तरह गुरुपद की वंदना की है। हमारे देश ने गुरुपद की वंदना की है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

गुरुपद का अर्थ गुरु का वाक्य भी होता है। इसे प्रमाण मानकर उसके आचरण की वंदना की है। एक दोहे में तुलसीजी ने गुरु की हरकाल में पूर्ण ऐसी प्रासंगिक व्याख्या की है। गुरुचरणरच, गुरुचरणनख की ज्योति की महिमा बताई। हनुमान गुरु है।

जय जय हनुमान गोसाई।
कृपा करो गुरुदेव की नाई।।

गुरु गणेश है। गुरु गौरी है। गुरु शंकर है। गुरु विशाल विचारधारावाले विष्णु है। हमारे तमस को नष्ट करनेवाले सूर्य भी है। जो हमें शुत्र की काया में लाभ प्रदान करे वह गुरु गणेश है। जो हमें अंधकार से उजाले में जीना सीखा दे ऐसा सद्गुरु हमारे लिए सूर्य है। जो हमें संकीर्णता से मुक्त कर औदार्य प्रदान करे वह गुरु विष्णु है; जो हमें कल्याणकारी विचारों से विभूषित करे ऐसा गुरु शिव है; जो हमारी श्रद्धा को खंडित न करे ऐसा गुरु हमारे लिए गौरी है।

पर श्रद्धा गुणातीत होनी चाहिए। हजारों बार निष्फल जाय फिर भी निष्ठा न टूटे वही गुणातीत श्रद्धा है। गुणातीत श्रद्धा गुरु में होनी चाहिए। बुद्ध कहते थे, 'तू तेरा दीपक बन।' भले ही किसीने प्राकट्य किया हो। गुरु विवेकदृष्टि खोल देते हैं। जिससे हम जैसा है वैसा ही देख पाए। ऐसे गुरु की वंदना तुलसीजी ने प्रथम सोपान के प्रथम प्रकरण में की है। इसे मैं 'मानस-गुरुगीता' मानता हूं। एक बार गुरुकृपा से हमारी आंख स्वच्छ हो जाय फिर निंदा हो ही नहीं सकती।

किस पर पथ्थर फेंके कैसर, कौन पराया है?
शिशमहल में हरएक चेहरा मुझ-सा लगता है।

जिसे विवेक प्राप्त हुआ है वह किसी की निंदा नहीं करता। सबको प्रणाम करेगा। तुलसीजी ने सभी की वंदना की उसमें राक्षसों की भी वंदना की। किन्नर, गंधर्व, रजनीचर, राठो, खल, साधु, ज्ञानी, पंडित, स्त्री पुरुष, आबाल वृद्ध सभी की वंदना की। समस्त जगत प्रणम्य लगा। गोस्वामीजी की प्रसिद्ध पंक्ति-

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

समस्त जगत ब्रह्ममय मानकर, सीताराममय जानकर करबद्ध हो प्रणाम किए। अपने यहां कहा जाता है कि जूठ को प्रणाम नहीं करना चाहिए। जो सुवर्ण नहीं है उसे खरीद नहीं सकते। पर तुलसीजी कहते हैं मेरे लिए जगत जूठा नहीं है, अत: प्रणाम करता हूं। सत्य है, अत: प्रणाम करता हूं।

ए प्रेम कर, तुं प्रेम कर ...

क्रमश: यह प्रेम भगवद्चरण में समर्पित हो। जीवन जीने जैसा है। पर कवि की एक शर्त है -

प्रेम कर, तुं प्रेम कर,
प्रपंच सघळा परिहरी...

प्रपंच छोड तू प्रेम कर; तो क्या होगा?

सत्य-करुणा सहाय करशे,
भरोसो दिलमां भरी भरी...

प्रपंच छोड़कर प्रेम करने से सत्य और करुणा दोनों ओर से सुरक्षा प्राप्त होगी। कवच मिलेगा। साहब, आप जो व्यवसाय करते हैं उसमें नीति और प्रामाणिकता रखिए तो वह भी भजन हो जायगा। समर्थ सितारवादक खांसाहब नमाज़ नहीं पढ़ते थे। एक दिन शागिर्द ने पूछा, 'आप यूं ही बजाते रहेंगे? गुनगुनाते रहेंगे? अपने धर्म में यू नमाज तो पढ़नी चाहिए। आप बड़े नहीं करेंगे तो छोटे कैसे करेंगे?' खां साहब ने कहा, 'मैं जिस वाद्य को बजाता हूं वह मेरी चौबीस घंटे की नमाज ही है।' सा'ब आप अपने क्षेत्र के प्रपंच छोड़कर कर्म करे तो आप का क्षेत्र भजन बने। इस रीति से आदमी का जिर्णोद्धार होता है; उसके पुरानापन का विसर्जन हो जाय और उसी भूमिका पर नवसर्जन हो जाय।

जल कमल छांडी जाने बाळा...

बड़ौदा के समर्थ साहित्यकार का स्मरण करूं। उन्होंने इस पर वाचिकम् प्रस्तुत किया, साहब! मेरी उपस्थिति में युवाओं ने अहमदाबाद में प्रस्तुत किया। तब मुझे लगा उन्होंने नरसिंह मेहता को किस दृष्टि से देखा है। सितांशुजी के वाचिकम् से मेरी पसंदीदा एक पंक्ति -

अमे अपराधी कांई न समज्या,
न ओळख्या भगवंतने...

तुलसीजी ने सीयाराममय सब जानकर वंदना की। उसमें कौशल्याजी महाराज दशरथजी, जनकजी, भरतजी, लक्ष्मणजी, शत्रुघ्नजी और बीच में हनुमानजी की वंदना की है।

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सरचाप धर।।

हम सब 'विनयपत्रिका' की अति प्रसिद्ध पंक्ति से हनुमानजी की वंदना करें -

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल अमंगल मूल-निकंदन।।
पवनतनय संतन-हितकारी।
हृदय बिराजत अवध-बिहारी।।

आज की कथा को हनुमानजी की वंदना के साथ विराम देता हूं।

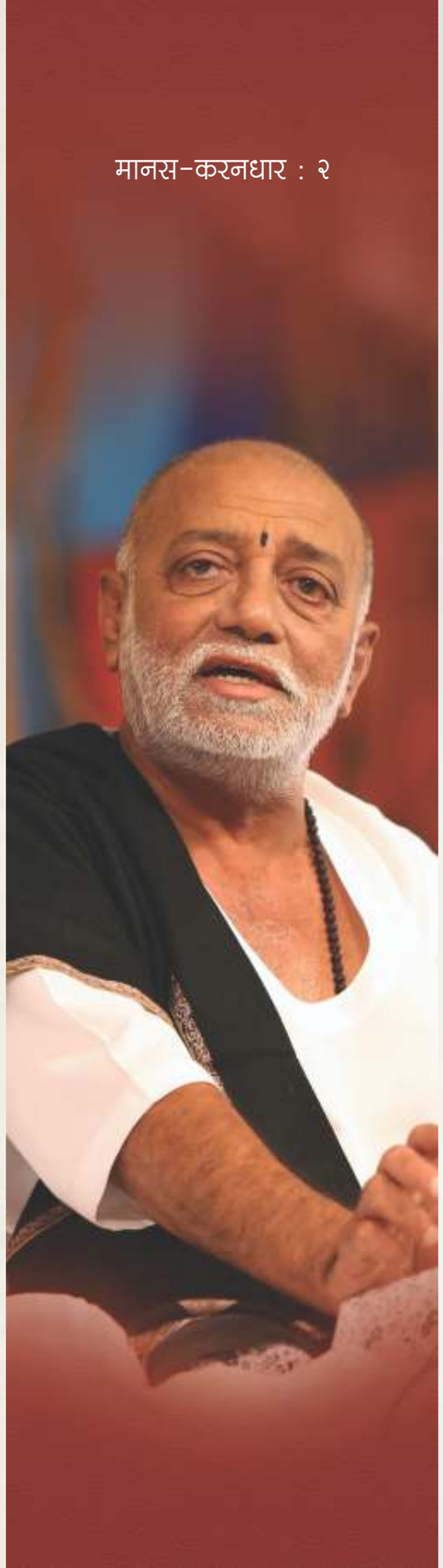

कथा हमें जीवन की मुक्तता प्रदान करती है

अनेक 'रामायण' लिखे जा चुके हैं। महर्षि विश्वामित्र कहते हैं, 'शत कोटि प्रविस्तरम्'; तुलसी कहते हैं, 'राम चरित सत कोटि अपारा'; सौ करोड 'रामायण' है। प्रत्येक 'रामायण' से हमें सन्देश मिलता है। शुरूआत यहां से करने का कारण यह है कि आज प्रश्न पूछा गया है 'रामायण' कितनी है? जैन 'रामायण', बौद्धों ने गाई जातक कथाएं; आदिवासी विस्तार में रामकथा; लोकगीतों में, भारत के प्रत्येक प्रांत में, दुनिया की विविध भाषाओं में, विविध संस्कृतियों में भी, 'रामायण' के लिए काफी सामग्री मिलती है। मूल में आदिकवि वाल्मीकि का 'रामायण' है। दक्षिण से भी हमें कुछेक 'रामायण' प्राप्त हुए। आदि कवि वाल्मीकि के बाद अधिक से अधिक रामकथा का विस्तार 'रामचरित मानस' में हुआ है। विश्व की कितनी ही भाषाओं में 'रामायण' के अनुवाद हुए। कितने 'रामायण' हुए? मुझे तो यहां 'मानस' का आधार लेना है। फिर भी सभी को प्रणाम करता हूं। किसीके आश्रय के बिना चलता नहीं है।

एक बार राम राज सिंहासन पर बिराजमान है। चर्चा चल रही है। सचिव, महाजन, धर्मगुरु, कुलगुरु सभी बिराजमान है। बातें करते-करते रामजी के हाथ में से एक अंगूठी गिर पड़ती है जिस पर रामनाम अंकित था। वह नीचे गिरकर जमीन के एक छिद्र में से सीधे पाताल पहुंच जाती है। भगवान राम के साथ सभा स्तब्ध रह गई।

आदि कवि भगवान वेदव्यास ने 'ब्रह्मसूत्र' जैसा महान ग्रन्थ लिखा। जिसमें पहला सूत्र 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' है। वाल्मीकिजी ने जो 'रामायण' लिखा उसमें 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' नहीं है। उसमें 'अथातो मानवजिज्ञासा' है। वाल्मीकि की खोज एक मानव की खोज है। मैं गुरुकृपा से देखूं तो ऐसा लगे कि तुलसी में तीन जिज्ञासा है, 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' तो है ही; 'अथातो मानवजिज्ञासा' भी है और 'अथातो मानसजिज्ञासा' है। मानस माने हृदय। 'रामचरित मानस' में तीन

जिज्ञासा का संगम है। ब्रह्मजिज्ञासा उत्तम है। क्या कहूं? बिना मानव की खोज किए ब्रह्म जिज्ञासा के शिखर पर कैसे चढ़े यह बात मेरी समझ में नहीं आती है। व्याख्या हो तब अच्छा लगता है। राम मानव है, 'मानव' की कोई वस्तु खो जाय तो उदासीनता आ जाय। प्रिय वस्तु की प्राप्ति से प्रसन्नता होती है। रामजी की प्रिय मुद्रिका गिर पड़ी तब हनुमानजी ने जिज्ञासा की, 'आपकी अंगूठी पाताल में गुम हो गई है, आप आदेश दे तो ले आऊं।' स्वीकृति मिली। हनुमानजी सभी जगह जा सकते हैं। 'हनुमान' का एक अर्थ है मानव का मन। मन स्वर्ग में भी जा सकता है और पाताल में भी। मन जंगल में भी जाय और भवन में भी। कोपभवन में भी और कनकभवन में भी जा सकता है। हनुमानजी पाताल में पहुंचे। पाताल के राजा ने स्वागत किया। ब्यौरा किया कि मेरे प्रभु की एक चीज गुम हो गई है, खोजने आया हूं। यदि अंगूठी यहां है तो दीजिए। एक लाख आदमियों के लिए दाल बने इतना बड़ा पतीला लाया गया। उसमें सभी अंगूठियां थीं। सभी पर रामनाम लिखा था। हनुमान से कहा, 'इनमें से खोज लीजिए।' बोले, इनमें से कौन-सी है? तो कहा, 'सभी रामावतार हुए ऐसे रामकी गिर चुकी ये अंगूठिया हैं। तुम कौन-से राम की अंगूठी की बात करते हो?' जहां 'राम' लिखा हो वही 'रामायण'। 'राम' 'रामायण' का पर्याय है। यहां हमें 'मानस' का आश्रय लेकर अंगूठी खोजनी है।

तो, 'मानस' अंतर्गत 'करनधार' शब्द लेकर संवाद रचने जा रहे हैं। 'मानस' में तीन बार 'करनधार' शब्द आया है। शायद तुलसीदासजी 'त्रिसत्य' करना चाहते है। दो पंक्तियां हमने ली। एक ओर पंक्ति है जिसमें 'करनधार' शब्द आया है -

सोह न राम प्रेम बिनु ग्यानु।
करनधार बिनु जिमि जलजानु।।

राम के प्रेम के बिना ज्ञान सोहाता नहीं। ज्ञान की शोभा रामप्रेम है। ज्ञान की मूर्ति की आंगी रामप्रेम है। परिवार के पात्रों का हमें ज्ञान हो प्रेम न हो, तो? रामभजन के मिश्रण से ज्ञान शोभा देता है। कैसे? जैसे बिना कर्णधार जहाज सूना सा लगता है। कर्णधार का अर्थ नाविक है। प्राय: 'कर्णधार' शब्द जहाज के लिए लागू पड़ता है। प्लेन के पायलोट को कप्तान कहते हैं। हमें हमारी पसंददीदा जगह तक पहुंचानेवाला और फिर निर्लेप भाव से लौट जानेवाला चालक होता है, कर्णधार होता है। वह ठहरता नहीं। कर्णधार हो तो भी। अपना जो गन्तव्य है, लक्ष्य है वहां हमें सरलता से पहुंचाकर 'राम राम' कहकर निकल जाय वही सद्गुरु है। हमें नियत जगह पहुंचा दे निर्लेप होकर असंग हो जाय ऐसा कर्णधार सद्गुरु है।

करनधार तुम्ह अवध जहाजू।

यह पंक्ति कहां की है इसकी भूमिका दूं। 'अयोध्याकांड' में रामबनबास के बाद सुमंतजी रामजी को गंगातट तक पहुंचाकर अयोध्या लौटते हैं। मानो सर्वस्व गंवा दिया हो यों खाली रथ लेकर लौटते हैं। कैकेयी के कोपभवन से दशरथजी कौशल्याभवन लाए गए है। दशरथजी पूछते हैं, राम कहां है? दशरथजी को भरोसा हो गया कि सुमंत अकेले आए हैं। तीनों में से कोई लौटा नहीं है। फिर चिर बिदाई का निर्णय ले लिया। चेहरा म्लान हो गया, ज्योति बुझने की तैयारी में थी। उस वक्त कौशल्या को लगा कि सूर्यकुल का सूर्य अस्त होने की तैयारी में है। धैर्य धारण कर राममाता कौशल्या कालानुसार वचन बोले; सुमंत असमर्थ बन गए। फिर स्वयं को संभालकर प्रिय पथिक समाज की आवाज़ लेकर मा बोले हैं कि हे महिपति, धैर्य धारण कीजिए। कारण? इस समय यह कविता आई -

करनधार तुम्ह अवध जहाजू।

सुंदर रूपक है। कौशल्याजी कहती है, महाराज, आप कर्णधार हैं। अयोध्या जहाज है। अयोध्या इतना बड़ा जहाज है। यात्री कौन है? पुरजन, परिजन, प्रियजन -

चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।

अयोध्यारूपी जहाज में परिजन, पुरजन, सभी यात्री है। प्रभु, आप कप्तान है। धैर्य धारण करेंगे तो जहाज तट तक पहुंचेगा। नहीं तो बीच में डूब जायगा। सोच समझकर माँ यह बात करती है। इसलिए मैंने आपसे कहा कि एक कर्णधार है राजा, राष्ट्र का कर्णधार।

कथा तीन तरह से होनी चाहिए। यह मैं आपको उपदेश नहीं देता। संदेश की कोशिश जरूर करता हूं। पता नहीं यह भी मुझसे होता है या नहीं। कल कहा था, संदेश दे सकता हूं। आज विचार बदला है। लगता है यह भी कठिन है। कल मैंने कहा था, उपदेश और आदेश की मेरी क्षमता नहीं है। आज सुबह से ऐसा होता है, संदेश की मेरी क्षमता नहीं है।

मीरांबाई ने विषपान किया फिर भी जीवित रही। यह बात यथार्थ लगती है? ज़हर से मृत्यु होती है। जिसने ज़हर भेजा है वह घातक ही होगा। होठों को छूते ही नीला रंग पड जाय। फिर शरीर काला पड जाय और खेल खतम! फिर भी मीरांबाई जीवित रही। यह श्रद्धाजगत का सत्य है या नहीं मुझे पता नहीं। फिर भी वे जीवित रही ऐसा हम सुनते हैं, कहते हैं। मुझे ऐसा लगता है, मीरां विषपान करे तो मृत्यु निश्चित है। बोडी के कुछेक धर्म है। इसमें हलाहल जाय तो आदमी मर ही जाय। जीवित न रहने पाए। मुझे लगता है कि होठ मीरां के होंगे और कोई दूसरा ही पी गया होगा। क्या आपको नहीं लगता कि जब हम सच्ची राह पर हो बिना किसी एषणा के तब हमारा विष कोई ओर ही पीता है? नहीं तो व्यक्ति कैसे जीवित रह सके? मानव की मर्यादा है।

जैसी जिसकी श्रद्धा! कथा विश्वास की छाया में, वटवृक्ष की छाया में ही होती है और श्रवण श्रद्धा की छाया में होता है। गुणातीत श्रद्धा! आप राजसी श्रद्धा लेकर कथा सुनिए। मैं कथा सुनुं तो मेरी फेक्टरी ठीकठाक चले! आप भ्रान्ति में न रहे अत: थोड़ा-थोड़ा समझाता हूं। इसमें आपको आर्थिक लाभ नहीं होगा पर पारमार्थिक लाभ जरूर होगा। साहब, आपका दुनिया कुछ बिगाड़ न सके। 'दिखा दूंगा' यह तमोगुणी कथाश्रवण है। 'मुझे यह मिल जाय' यह रजोगुणी श्रवण है। कथा श्रवण से 'मोक्ष प्राप्ति हो जाय' यह सत्त्वगुणी है। गुणातीत श्रद्धा से कथाश्रवण होना चाहिए। विश्वास की छाया में कथागायन होना चाहिए। हृदयपूर्वक विचार के दोनों से खेला जाय। आदमी विचारमुक्त नहीं होना चाहिए। विचार को ही आप छीन ले तो कैसे चलेगा?

विश्वास की छाया में रामकथा सुनियेगा। हृदयपूर्वक विचार और गुणातीत के साथ सुनिए। कथा और धर्म प्रलोभन नहीं देते। प्रलोभन दे वह धर्म नहीं है। हमें धर्म मुक्त दशा में जीने दे। तो हृदयपूर्वक विचार के साथ कथाश्रवण हो सके। स्वर्ग प्रश्नचिह्न है। स्वर्ग तो अभी बड़ौदा में है! तीस करोड देवता नहीं देखे हैं। पर यह हजार हाथ, हजार पांव, हजार मुख ये सभी देवता है। और क्या? आप यहां आकर देखे तो पता चले! मत आईए। एक मिनट, मुझे किसीने प्रश्न पूछा है -

बापू, हमको पता है, आप मेहफिल-ए-खास है।

हुजूर, पर क्या आपके पास व्यासपीठ का पास है? या यों ही बैठ गए हैं! अच्छा प्रश्न है। मेरे पास पास है, नहीं तो यहां क्या मुझे कोई घूसने दे? यह हनुमानजी मेरा पास है। राजुभाई चेक करते हैं न? पास है। क्या आपको नहीं लगता है कि मैं आपके साथ घरेलू होकर बात कर रहा हूं। बाप, मेरा परिवार है। सा'ब, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ऐसा यह भारतदेश ही सोच सके। अपनी सभ्यता और संस्कृति इस विचार का दान कर सके। निश्चितरूप से आप देव जैसे लग रहे हैं।

कौन-सा स्वर्ग? साहब, जहां अच्छे विचारों की बातें होती हो, जहां परस्पर प्रेम से हम साथ बैठे हो वही स्वर्ग है। अत: यहां सब देवता है। यहां बैठकर देखिए तो सही तो पता चले।

कोई मेरी आंखों से देखे तो समझे,
कि तुम मेर क्या हो...

मैं आपको खुश करने के लिए नहीं गा रहा। मेरे दिल में आपके लिए ऐसा ही भाव है। व्यासपीठ पर बैठा हूं, साहब! आदमी हूं। शायद शब्दों का खेल रच सकूं। पर यह तो व्यासपीठ है। 'गीता' पर हाथ रखकर नहीं, 'रामायण' पर हाथ रखकर बोल रहा हूं, साहब!

कथा मुझे और आपको जीवन की मुक्तता प्रदान करती है। देर-सबेर कथा का परिणाम निकलता है। हमें विशेष प्रसन्नता मिले। हम अपनी अदा में जी सके। चाहे संसारी हो पर अपनी फकीरी को कोई चुराकर ले गया है। अपनी कथा वह मुक्तता प्रदान करती है। दीक्षित दनकौरी का शे'र है -

अलग ही मज़ा है फ़कीरी का अपना।
न पाने की चिंता, न खोने का डर है।।

महाराज दशरथजी को कौशल्या कहती है आप राष्ट्र जहाज के कर्णधार है। परिजन, प्रियजन, पुरजन ये आपके अयोध्यारूपी जहाज में चढ़े हुए पथिक समाजयात्री है। धैर्य धारण करेंगे तो किनारा मिलेगा, नहीं तो बीच में ही जहाज डूब जायगा। कौशल्या की इस वाणी में समस्त अयोध्यानगरी का प्रतिघोष है।

मैं आपको अपील करूं, आपका छोटा-सा परिवार हो और उसमें भी कोई कर्णधार, वरिष्ठजन, यदि सुस्त पड़ जाय, तो उनको यह चौपाई सुनाना। युवाओं को मार्गभ्रष्ट करे, पोषण के बदले शोषण करे तो कहना कि कर्णधार, सावधान रहिए, यह चौपाई मंत्र जैसा काम करेगी। बाप! मैं तो यहां तक कहूं, हृदय के निकट बैठकर कहता हूं कि घर में सास-बहू का झगडा हो और सास बिना वजह बहू को दु:खी करती हो तो यह चौपाई सीखकर सास को कहना कि आप इस घर की कर्णधार है। कहना कि बापू कहते थे। प्रयोग कीजिए। परिणाम मिलेगा।

कौशल्या ने 'कर्णधार' शब्द क्यों प्रयुक्त किया? यह मात्र आश्वासन है? खाली शब्दरचना या तुलसी का काव्य कौशल्य है? नहीं तो। यह बहुत बड़ा मेसेज है। कौशल्या ने दशरथ को कर्णधार कहा। तो राष्ट्र का कर्णधार कैसा होना चाहिए? पुन: वाल्मीकि की ओर जाय। मानसिक स्थिति में उनके आश्रम पर जाय। वाल्मीकि के आश्रम में एकबार नारदजी आते हैं। साधु के घर कोई सहसा साधु आए और वह घटना कुछ अलग ही हो। एक मित्र के यहां सहसा कोई मित्र बिना वजह आ जाय; न महेमान को कोई अपेक्षा हो न यजमान को कोई एषणा हो। कोई आकर खटिया पर बैठ जाय इसकी महिमा अनोखी है। धन्य है मेरे देश के ऋषि की आवाज़ जो अतिथि को देव मानता है। दोनों मुनि बिराजमान है। मुनि वाल्मीकि, मुनि नारद। वाल्मीकि जिज्ञासा करते हैं कि कौन-सा राजा, कौन ऐसा महापुरुष है जो सभी की देखभाल करे।

साहब, सुंदर कथा है। साहब, वाल्मीकि ही जिज्ञासा कर सकते हैं। वाल्मीकि ही वर्णन करते हैं। सोलह लक्षण बताते हैं। ये लक्षण जिनमें हो वह राज्य का, विश्व का कर्णधार बन सकता है। आज भी यह प्रासंगिक है। जिनमें प्रशंसा करने योग्य गुण हो, खुशामद नहीं। सचमुच जिनमें ऐसे लक्षण हो ऐसे मानव के चित्रण के रूप में राजाराम का चित्र उत्पन्न करता है। इन लक्षणों में दशरथ के लक्षण समाहित है। अनुभवी दशरथ प्रशंसा प्राप्त कर सके ऐसे शीलगुण रखते हैं। राष्ट्र के कर्णधार में ऐसी अपेक्षा तो रहे। दूसरे, पराक्रमी हो तो कर्णधार बन सके। राष्ट्रनेता या सम्राट कायर हो तो यह चल नहीं सकता। कायर सेनापति व्यर्थ है। सैन्य का जवान कायर नहीं होना चाहिए। तीनों कायर से पतन होता है। उसी तरह भजन में कायर नहीं चल सकता। तीसरा, धर्म के रहस्य को यथार्थ जाननेवाला राजा होना चाहिए। मेरी दृष्टि से प्रेम, सत्य, करुणा धर्म है। कोई समझा दे और व्याख्या हम कर दे ऐसा नहीं। यथार्थ को समझनेवाला। राजा में यह लक्षण होना चाहिए। वाल्मीकि कहते हैं, राजा खूबसूरत होना चाहिए। मुझे भी यह पसंद है। दर्शनीय होना चाहिए। सिर झुक जाय ऐसा होना चाहिए। दशरथजी महापुरुष है, धर्मधुरंधर है।

राजा का चौथा लक्षण वह क्रोधजयी होना चाहिए। राजा बारबार क्रोध करे, नेता भयानक क्रोध करे तो समझना कि ये झूठे हैं। वाल्मीकि विरोधाभास कर कहते हैं कि राजा क्रोधजयी होना चाहिए। राजा युद्धकोपी होना चाहिए। युद्ध के मैदान में युद्ध का कोप होना चाहिए। अपने समाज के सामने क्रोधजयी हो और युद्ध के मैदान में युद्धकोपी होना चाहिए। दशरथजी पराक्रमी है, सुंदर भी है, युद्धकोपी भी है। राजा प्रजा का शुभ करता हो। प्रजा को सुख दे ऐसा राजा होना चाहिए, हितेच्छु होना चाहिए। मेरा पसंददीदा लक्षण कि राजा द्वेषमुक्त होना चाहिए। चाणक्य नीति पढ़िये गा।

आत्मद्वेषाद्भवेन्मृत्यु: परद्वेषाद्धनक्षय:।
राष्ट्रद्वेषाद्भवेन्नाशो ब्रह्मद्वेषात्कुलक्षय:।

यह चाणक्य नीति है। जो अपने आत्मा का द्वेष करता है उसकी मृत्यु होती है। समझने योग्य सूत्र है। जो स्वयं का द्वेष करे, आत्मग्लानि से पीडित हो कि मुझसे कुछ नहीं होता, मुझे कोई बुलाता नहीं है इत्यादि। अंत में वह आत्महत्या की ओर जाता है, डिप्रेस होते हैं। परीक्षा में फेइल हो जाय तो शीघ्र ही आत्महत्या कर डाले। युवाओं को मेरी खास बिनती कि आत्मद्वेष मत कीजिए। हिम्मत रखिए। कई आदमी स्वपीडित होते हैं। कथाश्रवण के बाद तो हौसला बुलंद रखिए। उड़ान भरे वही थके। हौसला और हिम्मत से उडे वह थके नहीं। वह मंझिल प्राप्त करता है।

आत्मद्वेष से बचिए। 'परद्वेषाद्धनक्षय:', यह मुझे पसंद है। धनिक लोग सावधान रहिए। दूसरों का द्वेष करने से धीरेधीरे धन का क्षय होता है। क्या कारण है? निरंतर दूसरों का द्वेष करने से आंतरिक मनोबल कमजोर होता है। इससे अपनी प्रवृत्ति निर्बल होती है। फिर हम सच्चे निर्णय नहीं ले सकते। गलत निर्णय से नुकसान होता है। दूसरों के द्वेष के मूल में समानधर्मी होते हैं। कलाकार कलाकार का द्वेष करता हो, कथाकार कथाकार का द्वेष करता हो, वकील वकील का द्वेष करता हो, एक विद्वान दूसरे विद्वान का द्वेष करता हो! बिलकुल दो-टूक बात चाणक्य कहता है, 'ब्रह्मद्वेषात्कुलक्षय:।' ब्रह्म का द्वेष करे उसके कुल का नाश होता है। ब्रह्म का द्वेष माने परमात्मा का द्वेष। वे तो जीवित ही मार डाले! परमतत्त्व, प्रेम, सत्य, करुणा का द्वेष हमें मार डाले। पर ब्रह्म के द्वेष का अर्थ विद्वान यों भी करते हैं कि सज्जन आदमियों का द्वेष करना। अच्छा चरित्र हो, अच्छी तरह से जीते हो, अच्छी बातें करते हो। अच्छा चले, अच्छी बातें करें, अच्छा देखें, अच्छा खानपान हो ऐसे सज्जन का द्वेष मत करना। यदि कोई करे तो नष्ट हो जाता है।

वाल्मीकि कहते हैं महाराज नारदजी, कर्णधार बनने के योग्य वही है। जो किसी का द्वेष नहीं करता। सबके हित की इच्छा रखता है। राजा में यह लक्षण जरूरी है। द्वेषमुक्त अच्छी तरह से जी सकते हैं। द्वेष की सीधी-सादी व्याख्या कहूं? अपना कोई समानधर्मी हो उसके गुण सुनने की इच्छा न हो पर निन्दा सुनने में रुचि हो तो समझना कि आपने द्वेष का ड्रेस पहना है। एक गायक दूसरे गायक की प्रशंसा सुनने में खुश न हो पर टीका हो

तब खुश हो जाय तो समझना कि आपकी द्वेष के क्षेत्र में पसंदगी हो चुकी है।

सोचिए, इतने बड़े अध्यात्म का विस्तार हुआ है; सभाएं होती है, कथाएं होती हैं। कितनी बड़ी श्रद्धा से और कितनी बड़ी संख्या में श्रवण करते हैं! फिर भी होनी चाहिए उतनी जागृति नहीं हुई। परिणाम तो निश्चित आयेगा पर द्वेषमुक्ति आ जाय तो बहुत बड़ा सुधार हो जायगा। स्वामीनारायण संप्रदाय के एक संत निष्कुळानंदजी ने एक पद लिखा जो मुझे बहुत पसंद है। वह एक बोध, एक 'गीता' है -

त्याग न टके रे वैराग विना, करीए कोटि उपायजी;
अंतर ऊंडी इच्छा रहे, ते केम करीने तजायजी.
वेष लीधो वेरागनो, देश रही गयो दूरजी;
उपर वेश आछो बन्यो, मांहि मोह भरपूरजी.

धीरे-धीरे भजन में वृद्धि होगी तो रागद्वेष कम होंगे। बाप, भजन के कई लक्षण है। भजन माने आप माला लेकर बैठ जाए ऐसा नहीं कहता। कथा कीजिए, सुनिए इतना नहीं पर भजन माने? बिना वजह किसी की याद आया करे और किसी को पता न चले उसका नाम भजन है। बिना कारण स्मृति-स्मरण। फिर वह स्मृति से छलोछल भर जाय और गाये, पुकारे। उसे श्रोताओं की आवश्यकता नहीं है। वह अकेला-अकेला गाता है। उसे पता ही नहीं, कौन गाता है और कौन सुनता है? यह भजन है रागद्वेष से मुक्त है। बाप, गुणातीत श्रद्धा होगी तो व्यासपीठ पर भरोसा रहेगा। फायदा होगा। तीसरा, आपके बुद्धपुरुष, जाग्रतपुरुष ने आपको जो मंत्र दिया है कि किसी परम का नाम जपिए और कुछ भी न हो सके तो तुलसी कहते हैं, जहां जगह मिले वहां भगवद्चर्चा-गुणातीत भगवद्चर्चा होती हो वहां मौन रखकर श्रवण कर लेना यही भजन है। यों तुलसी शास्त्र को निचोड़कर सार देते हैं। बिना किसी योजना के उसका स्मरण हुआ करे हरि, हरि, हरि या आप जिसे मानते हो।

वाल्मीकिजी का कथन कि राजा द्वेषमुक्त होना चाहिए। वही कर्णधार बन सकता है। राजा ने अपना मन करीब-करीब वश में कर लेना चाहिए। दसों इन्द्रियों का राजा मन है। मन भी एक राजा है। वह तमाम इन्द्रियों का कर्णधार है। आध्यात्मिक जगत की मनोभूमिका में जाय तो उसका आदेश मिले उसी तरह इन्द्रियां कार्य करे। सो मन भी एक राजा है। मन को वश में करनेवाला राजा कर्णधार बन सकता है। ऐसे सोलह लक्षण वाल्मीकिजी ने बताए हैं।

कथा प्रवाह लें। कल हमने हनुमंत वंदना की। मैंने कई बार कहा है कि आपको किसी गुरु में श्रद्धा न हो, आपकी परख में खरा न ऊतरे तो हनुमानजी को गुरु मानिए। हनुमानजी शंकरावतार है। शंकर ओलरेडी त्रिभुवन गुरु है। बहनें भी 'हनुमानचालीसा'-'सुन्दरकांड' कर सकती है। प्रणाम कर सकती है। कोई प्रतिबंध नहीं है। युद्ध के बाद हनुमानजी लंका में सीताजी को लेने के लिए गए तब राक्षसों और राक्षसियों ने हनुमानजी की पूजा की। राक्षसियों को यह अधिकार हो तो मेरे देश की बेटी-बहनों को क्यों नहीं? हनुमानजी प्राणतत्त्व है। हमें इसका स्वीकार करना ही रहा।

तुलसीजी ने हनुमानजी की वंदना की। फिर सीता-रामजी की वंदना करने के बाद नौ दोहों में बहत्तर पंक्तियों में पूर्णांक में रामनाम की महिमा का गान किया। रामनाम की महिमा का अद्भुत गायन किया। रामनाम आदि-अनादि मंत्र है। अद्भुत वर्णन है! अभी कम समय है। स्वतंत्र बोलना है, पर फिर कभी। मैं जब 'राम' शब्द की बात करता हूं तब संकीर्ण राम नहीं। आकाश जैसे विशाल अर्थ में कहता हूं। कोई भी नाम ले। भाव-अभाव से, क्रोध (अनख) से, आलस्य से किसी भी स्थिति में नाम मदद करेगा। इतनी बिनती कर आगे बढ़ूं। आप जिस नाम को मानते हैं वह श्रेष्ठ है। पर अन्य नाम को हीन न माने। भिन्न माने। आप भिन्नता मानिए। भिन्न मानेंगे तो नुकसान का धंधा होगा। बुद्धिपूर्वक के ऐसे प्रयास नहीं मानने चाहिए। रामतत्त्व आदि-अनादि है। आपको पूरी छूट है। एक लाख घडे में पानी भरकर रख दीजिए और उसमें सूरज दिखे तो भी सूरज तो एक ही है। रामनाम सूरज जैसा तत्त्व है। भिन्न-भिन्न रूप से उच्चारण करे इसमें क्या आपत्ति है?

तुलसीजी कथा का आरंभ करते हैं। शरणागति का घाट है। तीरथराज प्रयाग में कुंभमेला है। वर्षों से भरद्वाजजी वहां बैठे हैं। शिवजी की कथा कही। सेतु निर्माण किया। समन्वय साधा। एक बार शिवजी सती को लेकर, कुंभज ऋषि के यहां कथा सुनने गए। कथा सुनकर शिव और सती बिदा हुए। दंण्डाकारण्य में से गुजर रहे थे तब त्रेतायुग की लीला चल रही थी। भगवान राम सीताहरण के बाद वियोग में दु:खी, ललित नरलीला करते हुए जा रहे हैं। शिवजी भगवान की लीला समझ गए। सती ने संशय किया। शिवजी ने बहुत समझाया। आखिर शिवजी ने सतीजी को परीक्षा लेने के लिए कहा। एक बात याद रखिए, ईश्वर की परीक्षा नहीं, प्रतीक्षा करनी चाहिए।

आवशे, अे आवशे, अे आवशे, अे आवशे.
तुं प्रतीक्षामां अगर शबरीपणुं जो लावशे.
- कृष्ण दवे

शबरी और अहल्या ने परीक्षा नहीं, प्रतीक्षा की है। सती ने सीता का रूप लिया। राम ने अपना व्यापक रूप बताया। सती से सहन नहीं हुआ। सती ने जूठ कहा। शिवजी ने ध्यान में सबकुछ देखा। शिवजी को दु:ख हुआ। अंत में शिवजी को प्रेरणा हुई। शिवसंकल्प हुआ कि सती का यह शरीर होगा तब तक मेरा और उनका गृहस्थ संबंध नहीं रहेगा। संदेह अलग करते हैं, विश्वास से जुड़ना होता है।

कैलास आकर शिवजी ने निजस्वरूप का अनुसंधान किया। समाधि लग गई। सती सत्ताशी हजार साल तक अकेली रही। समाधि खुली। शिवजी सती का दु:ख हल्का करने के लिए रसप्रद कथा कहने लगे। उसी वक्त सती के पिता ने यज्ञ किया। शिवजी के साथ मनदु:ख के कारण आमंत्रित नहीं है। शिवजी के मनाने पर भी सती मानी नहीं। वहां गई। शिवजी का अपमान सहन नहीं हुआ। सती दक्ष के यज्ञ में देहत्याग करती है। हाहाकार मचा। सती ने पर्वतराज हिमालय के यहां दूसरा जन्म लिया। वहां बड़ी होती है। नारद आते हैं। भावि कथन करते हैं। पार्वती तप करती है। आकाशवाणी से वचनप्राप्ति होती है। रामजी ने शिवजी से ब्याह के लिए स्वीकृति ली। शिवजी ने स्वीकृति दी। शिव पार्वती ब्याह का प्रसंग कल पर, आज कथा को विराम देता हूं।

> दूसरों का द्वेष करने से भीतरी मनोबल कमजोर होता है। दूसरों के द्वेष के मूल में समानधर्मी होते हैं। कलाकार कलाकार से, कथाकार कथाकार से, वकील वकील से, विद्वान विद्वान से द्वेष करता है! अपना कोई समानधर्मी हो उसका गुणगान सुनना पसंद न करे, निंदा सुननी पसंद आए तो समझना कि आपने द्वेष का ड्रेस पहना है। एक गायक जब दूसरे गायक की प्रशंसा सुनने पर खुश न हो और उसकी टीका कोई करे तो पसंद आए तो समझना कि द्वेष के क्षेत्र में हमारी पसंदगी हुई है!

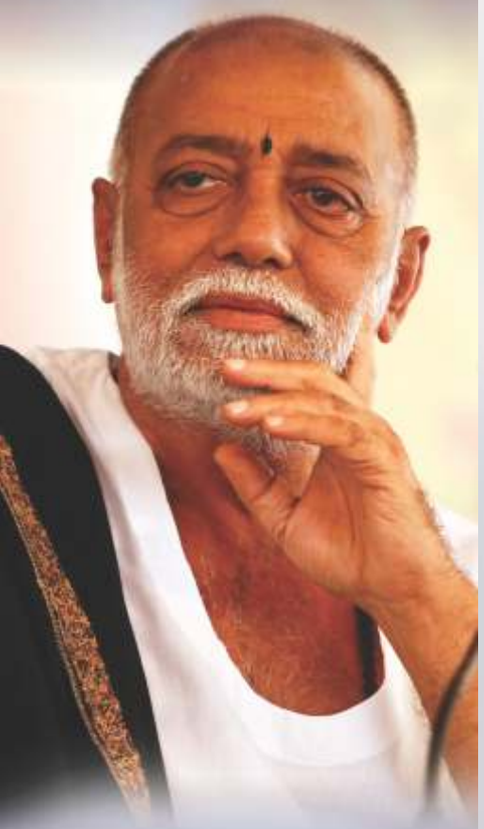

इक्कीसवीं सदी प्रेम करने की सदी है, शाप देने की सदी नहीं है

रामकथा अंतर्गत 'मानस' को आधार बनाकर जिसकी तात्त्विक-सात्त्विक चर्चा विशेषरूप में हम करते हैं वह है कर्णधार, अपने जीवन का नायक-नाविक, अपने जीवन को सुरक्षित किनारे पर पहुंचाये ऐसा कर्णधार कौन हो सकता है? हम साथ मिलकर खोज करें। कल राष्ट्र के कर्णधार ऐसे राजा के सोलह-सोलह लक्षण मैंने अपनी स्मृति में आए वैसे बताए।

आज एक दूसरा क्षेत्र 'रामायण' के आधार पर आपके सामने रखना है। अपने छोटे-से ऐसे परिवार का कर्णधार कौन बने? प्राय: दादा कर्णधार है। उनसे पूछे, वे कहे वैसा करे। दादा समझदार हो और उन्हें लगे मुझ से ज्यादा अनुभवी दादी है तो वह ऐसा कहे कि तुम्हारी दादी से पूछो। फिर दादी को पूछना ही पड़े वह दिशा अलग है! वह अध्याय अलग है! तो दादी ज्यादा विवेकपूर्ण हो तो वह कर्णधार बने। यदि दादा-दादी उम्र के कारण तथा जमाना आगे बढ़ गया है और वे निर्णय लेने में असमर्थ मानते हो स्वयं को तो फिर पुत्र और पुत्रवधू को जिम्मेदारी सौंपे।

कभी ऐसा भी हो कि परिवार में एक व्यक्ति कोई ऐसी जाग्रत हो कि पूरे परिवार को आश्चर्य हो कि मेरे परिवार में नया पौधा उग निकला है! यह बिलकुल नई चेतना है। गुरुजनों को भी उनके प्रति पूज्यभाव जाग्रत होने लगे कि यह कौन है? मुझे कृष्णचरित्र की बात पसंद है कि नंद-यशोदा का कृष्ण जरा कुमारावस्था में आया तो माँ उसे नहलाकर, साज सज्जा करे इतने में नंद दो-तीन बार आकर कृष्ण के चरणों का स्पर्श करे। यशोदा ने कहा, यह आप क्या कर रहे हैं? तब नंद ने कहा कि तूने अभी तक ममता का पर्दा डाल रखा है। पर मैं नंद हूं। मैं उसे पहचान गया हूं कि यह अपना बेटा नहीं है, पूरे विश्व का पिता है। इसलिए मैं चरणस्पर्श करता हूं। यह मेरा पुत्र पूज्यों का भी पूज्य है।

घर में कोई ऐसा तत्त्व आता है कि हमें उसकी ओर पूज्यभाव प्रकट हो। हमें लगे, हम उम्र में बड़े हैं पर विमर्श का यह सही ठिकाना है। वह व्यक्ति परिवार की कर्णधार बन सकती है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि परिवार में पुत्रवधू इतनी समझदार हो कि सास को भी अहोभाव जगे। घर में एक पुत्री हो, पुत्रवधू हो तो माताओं को बहुत ध्यान रखना चाहिए कि पुत्रवधू को जरा भी ठेस न पहुंचे इस तरह पुत्री के साथ व्यवहार रखना चाहिए। पुत्री की ओर आकर्षण हो यह समझ में आता है। पर घर में जो आई है वह भी किसी की पुत्री है। कथा श्रवण के बाद यह विचार कीजिएगा। स्वर्ग और मोक्ष यह सब छोड़ दीजिए। मिल जाय तो लीजिए। पहले यह सीखिए। घर में असंतोष पैदा होगा। ब्याह के बाद बहू को भी ध्यान रखना है; चाहे जन्म मिला मायके में पर जीवन मिला है ससुराल में। सास के प्रति दायित्व निर्वाह करना ही है। यह नहीं भूलना है। आप चाहे मोर्डन हो, शिक्षित हो तो शिक्षण को विद्या में बदल डालिए। आप सास की परवा ही न कर! पानी के लिए भी न पूछे! कोई आदर नहीं! उसके माँ-बाप से पूछा जाय कि इसे क्या सीखाया? पति को पानी का प्याला न मिले, खाने की डीश तैयार न मिले, साथ में खाना न खाय! यह उपालंभ नहीं देता। कथा सार्थक करनी है।

ईश्वर मनुष्य जीवन देता है, हम समस्याएं खड़ी करते हैं। कथा इसीलिए है कि कथा का विवेक मिले, वह समस्या का समाधान कर सके। मैंने देखा है कथा सभी को पसंद है। पर अमल करना हो तो सभी चूप हो जाते हैं! जो अति समझदार होते हैं वे जग गए हैं। उस आदमी को फिर बहुत पीड़ा सहन करनी पड़ती है। इसीलिए कहता हूं कि यह केवल धर्मसभा नहीं है कि यहां केवल मोक्ष की ही बात होती रहे, अद्वैत की ही बातें होती रहे। यह जगत आशीर्वाद लेकर बैठा है अत: ऐसा सुंदर लगता है। हमारा परस्पर मतभेद हो तो क्या सीधा शाप दे। काठियावाड में कहते है, 'इसका शूल निकल जाय!' साधु शाप नहीं देता, असाधु का शाप लगता नहीं। किसी बुद्धपुरुष को आप जरा नाराज कर के देखिए। वे नाराज नहीं होते। पर आप को लगे आपसे चूक हो गई है, उस समय आपको जो पीड़ा होती है वही आपका प्रायश्चित्त है। उस वक्त भीतर अशांति होती है यह ग्लानि ही प्रायश्चित्त है।

इक्कीसवीं सदी में शाप निकल जाना चाहिए। अपने यहां अमुक वस्तु आई है, यह संशोधन का विषय है। मैं तो कितने समय से कहता हूं कि 'भागवतजी' में ऐसा लिखा हो कि 'वेद शास्त्र विशुद्धिकृत।' वक्ता ऐसा होना चाहिए कि जो वेदशास्त्र को समयानुरूप संशुद्धिकृत करे। मूल सुरक्षित रहे। फूल नए-नए खिलने चाहिए। इक्कीसवीं सदी प्रेम करने की सदी है, शाप देने की सदी नहीं है। इक्कीसवीं सदी धक्का मारने की नहीं है। दूसरों का धक्का खाकर मार्ग दे देने की सदी है। यह शुभ सूर्योदय है इसका प्रोक्षण होना चाहिए।

कल हमने 'मानस' के आधार पर कहा कि राष्ट्र का कर्णधार राजा हो। अब परिवार के कर्णधार की 'मानस' में खोज करे तो वह राम है। भगवान राम परमात्मा है, थोड़ी देर के लिए भूल जाइए। वह ब्रह्म है, परमतत्त्व है, ईश्वर है पर 'निज इच्छा निर्मित तनु।' उसने मनुज का अवतार लिया है। इसीसे वह मनुज रूप से व्यवहार करता है। एक मानवरूप में भगवान ने जो-जो लक्षण 'रामायण' में बताए वह अपने परिवाररूपी जहाज का कर्णधार बन सकता है। हम जो अपने परिवार का कर्णधार मानते हो तो हमें अपने जीवन में राम का कर्णधारपन उतारना चाहिए। उसके थोड़े से लक्षण 'रामायण' के आधार पर समझ लें तो परिवार हराभरा रहे। राम के कितने गुण? पूरी जिंदगी राम के गुण गाने में बीता दी! अभी और कितनी ही जिन्दगियां गाऊं तो भी अंत नहीं आयेगा!

चरितसिंधु गिरिजारमन बेद न पावहि पार।
बरनै तुलसीदास किमी अति मतिमंद गवाँर।

भगवान के गुण कैसे गाए जाए? भगवान के पांच-सात लक्षणों की 'मानस' के आधार पर संवाद के रूप में बातें करेंगे। घर के किसी भी सभ्य में ये लक्षण दिखाई दे तो उसे कर्णधार समझना। ऐसे लक्षणवालों को परिवार का जहाज सौंपना। उस जहाज में हम यात्री बनेंगे। वह हमें सुरक्षित जगह पहुंचा देगा।

सात सूत्र। एक, राम प्रभावशाली कर्णधार के रूप में यह राम का सत्यत्व है। मेरे भाईयों और बहनों, अपने-अपने परिवार का शांति से सोचना। आपको ऐसा

लगे यह व्यक्ति सत्य का अधिक निर्वाह करता है; उसे पतवार सौंपनी, बागडोर सौंपनी। काफी कठिन है। मैं हंमेशा कहता हूं जहां सत्य होगा वहां अभय आयेगा, आयेगा, आयेगा। हमारे सत्य से कोई नुक्सान न हो; उसकी पीड़ा न हो, भय न रहे। मैं समझता हूं कि हम पूर्ण सत्य का आचरण नहीं कर सकते। राम तो सत्यरूप है। राम तो सत्-चित्-आनंद है। पूर्ण सत्य तो मुश्किल है। पर कम अज कम सत्य की मात्रा हमारे जीवन में ज्यादा हो तो कर्णधारपन हमने जीवन में उज्वल किया है। हम क्यों होमवर्क नहीं करते? मैं आपके सामने दिल की किताब खोलकर बात करता हूं। सोचिए कि आज हम कितना झूठ बोले? उसमें कितना वैसे ही या वजह के साथ झूठ बोले? दूसरों को दु:खी करने, दूसरों को शीशे में उतारने झूठ बोले? शायद धनलाभ होगा, पर पीड़ा बढ़ जायगी। फिर वह पीड़ा निकालनी मुश्किल होगी।

कुछेक आदमियों का स्वभाव ही झूठ बोलना होता है। जोर-जोर से झूठ बोले, बिलकुल एकदम झूठ बोले। सफेद झूठ बोले। मेरे एक परिचित कलाकार। पूछे कि कहां थे? तो कहे, 'ड्यूटी दिल्ही में थी।' क्यों? तो कहे, 'गुजराती समाचार पढ़ने के लिए। कल आपने जो सुने न वह मैं था।' अरे भई, कल तो तू बेन्च पर बैठा हुआ चाय पी रहा था! कुछेक कहे अभी सी.एम. का फोन आया था। पूछे कि क्या हुआ? तो कहे, 'सुनाई नहीं देता था।' सी.एम.का फोन नहीं था पर लोन का हफ्ता नहीं भरा था तो चेरमेन का फोन था! गुजरात में लोग पूनम भरते हैं, डाकोर की पूनम भरते हैं, कई अपने-अपने गुरु के पास पूनम भरते हैं। यह पूनम भरने का बंद कर हफ्ता भरने का चालू कर दे तो वही पूनम है। तुलसी की चौपाई है -

झूठइ लेना झूठइ देना।
झूठइ भोजन झूठ चबेना।।

तीसरा कारण असत्य बोलने का मजाक विनोद है। यह थोड़ा क्षम्य है। विनोद में अनृत क्षमा योग्य है। चौथा मगरूरी-अहंकार। 'हम तो किसी को भी सुना दे!' ऐसे तो कितने ही प्रकार है। हमारा यह दर्शन होना चाहिए। जितनी मात्रा में हम सत्य का निर्वहण कर सके, बिना दावपेच के, इतना ही हम कर्णधारपन सिद्ध कर सके। तो, राम पारिवारिक समाज के कर्णधार है। उसका एक लक्षण है सत्यत्व। हमें भरोसा होता है कि यह हमारे घर के वरिष्ठजन है। झूठ नहीं बोलेंगे। कुछ गुप्त रखेंगे तो सभी के कल्याण हेतु ही होगा। ऐसा एक भरोसा उत्पन्न होना चाहिए। आपके वरिष्ठजन आप की हर बात माने पर कभी किसी बात से इन्कार कर दे और आपको ठेस पहुंचे, तो आप अपने वरिष्ठजन को समझ नहीं पाए हैं। आप उनके कर्णधारपन का बुद्धिपूर्वक उपयोग कर रहे हैं! उसमें आस्था नहीं है। दस बार हां कहनेवाला एक बार ना बोल दे तब उत्सव मनाना चाहिए कि मेरे कितने हित की बात होगी कि जिसके स्वभाव में ना बोलना नहीं है उसने ना कही। उसने मेरे कितने कल्याण की बात सोची होगी? विवेक जाग्रत हो तो एक प्रकार का सुशासन, सुराज्य प्रकट हो जो राम के राज्य में घर-घर में था। दूसरा लक्षण -

भगवान राम का एक लक्षण वाल्मीकिजी ने भी कहा है और 'मानस' में भी परमात्मा के चेहरे पर ऐसी रेखाएं बताई है -

मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी।
मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि।।
सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन।।

हमारे परिवार का कर्णधार उसे समझना जो मुंह फूलाकार न घूमता हो। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट हो। मुस्कुराहट परमात्मा का वरदान है। तीसरा लक्षण राम का; उम्र चाहे कितनी भी हो। भगवान राम का गांभीर्य, एक प्रौढता है। आदमी धैर्य खो बैठता है। रामजी का गांभीर्य धैर्य खोता नहीं था।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।

दोनों विरोधाभास। आदमी हंसता हुआ भी होना चाहिए और प्रौढ़ भी। जगद्गुरु शंकराचार्य ने कहा कि आदमी महंत बने इसमें आपत्ति नहीं पर संतत्व नहीं खोना चाहिए। एक प्रज्ञावान स्थिति होनी चाहिए। गांभीर्य, उच्छृंखलता यह सब माँ की कोख से मिलता है। कर्णधार वही है जो गंभीर भी हो और मुस्कुराता भी हो।

चौथा लक्षण, कुटुंब का कर्णधार उदार होना चाहिए। तुलसीजी ने रामजी के लिए कहा है -

ऐसो को उदार जग मांही।

उदार माने अनेक तरह से उदार। जो अपने परिवार को प्यार कर थोड़ी स्वाधीनता देने में भी उदार हो। जकड न रखे। भूल करने पर क्षमा कर दे। ऐसा उदार होना चाहिए। कोई परिवार में वरिष्ठ जन जो कहे सो न करे तो मानवस्वभाव को लेकर ठेस पहुंचे 'इसे थोड़ा नुकसान होगा तो अकल ठिकाने आयेगी।' ऐसी वृत्ति हममें पनपती है। पर कर्णधार वह हो सकता है जिसका कहा न माना जाय फिर भी उसके मन में कभी भी ऐसा न हो कि इसकी अकल ठिकाने पर आए इसलिए थोड़ी शिक्षा देनी चाहिए। चाहे कई बार मेरा कहा न माने, पर उसका नुकसान न हो। यह परम उदार है। मैंने पहले भी कहा था उदारता कभी-कभी अभाव में से जन्म लेती है। जिसके पास कुछ भी नहीं है वह प्राय: उदार होता है। क्योंकि उसे क्या बचाना है? वह दे ही दे। या वो उदारता स्वभावजन्य है। आदमी खुद बिक जाता है।

दो-चार दिन पहले मैं चित्रकूट में बैठा था वहां मोची जाति के एक दादा आए। अस्सी-नब्बे साल की उम्र थी। थोड़े अस्तव्यस्त! मैंने कहा, दादा, थोड़ी सेवा दीजिए न। बोले, कैसी सेवा? मैं एक बार आया था। आपने सेवा की थी। अब कोई सेवा नहीं। मैंने खाने के लिए पूछा। कहे, खाकर ही जाऊंगा। मैंने आग्रह किया कि मुझे खुश कीजिए न! कुछ सेवा तो दीजिए। हुक्म कीजिए न बाप! मैं देख रहा था उनके मन में लेने की इच्छा नहीं थी। बिलकुल अकिंचन! कुछ दिया तो अत्यंत आग्रहवश होकर। यह उदारता है। जिसस क्राईस्ट का वाक्य है, जो देगा उसे अधिक मिलेगा, जो जमाखोरी करेगा उसका छीन लिया जायगा। अत: अपने त्रापजकर कवि लिख गए -

अे, सुकाणां हाड पाडोशीनां बाळना मुखे,
कांक मुठ्ठी चण नाखतो जाजे,
दीधुं होय तो देतो जाजे...

ऐसा उदार कि जहाज डूबनेवाला हो तो सबसे पहले सब को बचाए फिर अनिवार्य हो तो स्वयं डूब जाए। राम परम उदार है। राम परमसत्य का पर्याय है। राम प्रसन्न चित्त रहते हैं।

पांचवां लक्षण, परिवार के एक-एक सदस्य की विचार से, संकल्प से उसकी मर्यादा में रहकर सेवा करे। राम लक्ष्मण को वन में ले गए तब राम लक्ष्मण की कैसी देखभाल करते हैं? सीता-राम दो, लक्ष्मण एक; पर तुलसी कहते हैं, ज्यों आंख की दो पलकें पुतली की रक्षा करती हैं यों सीता और राम दो पलकें बनकर अपनी दृष्टि में रखकर लक्ष्मण का ध्यान रखते हैं। यह एक परिवार के सदस्य का जतन है। बन में जाय तब कहते जाय भरत आए तब उसे समझाइयेगा और कहना, धैर्य न खोये। यह सब सत्य के लिए हुआ है। ऐसा वरिष्ठजन करें तो आश्रितजन डबल करे। लक्ष्मणजी रामजी की सेवा कैसे करते हैं? तुलसीजी को दृष्टांत न मिला तो कहा कि ज्यों अविवेकी आदमी अपने शरीर का जतन करता है यों लक्ष्मणजी सीता रामजी का जतन करता है। श्वास लेने में जरासी तकलीफ हो तो शोर मचाए, 'ए...एम्ब्युलन्स बुलाईए!' आज का आदमी छोटी-छोटी बातों में घबडा जाता है। जितनी सुविधाएं बढ़ी भयवृद्धि भी हुई। हार्टएटेक तो पहले भी होते थे। तब कहते थे, नीलगिरि का तेल लगाइए, गरम सेंक कीजिए तो बूढ़ा उठ खडा हो! शरीर का जतन बिना डर के करना है। इसीलिए कई लोग सुबह-सुबह दौड़ते हैं। जो काम करना है वही कीजिए। वोक करने जाय और वोकमेन भी सुने! आदमी एक में केन्द्रित नहीं होता है।

लक्ष्मण जाग्रत है फिर भी तुलसी उसे अविवेकी कहते हैं। सीतारामजी मर्यादासह कुटिया में विश्राम करे और लक्ष्मणजी कटि पर निषंग धारण कर सावधान रहकर समस्त चित्रकूट के प्रांगण की परिक्रमा करे; एक ही मंत्र 'श्री सीताराम' 'श्री सीताराम' बोले। एक दिन ऐसा हुआ लक्ष्मण का दैनिक क्रम था कि कुटिया की परिक्रमा करे और विक्षेप न हो इस तरह कुटिया के द्वार पर सिर झुकाकर प्रणाम करे। और पुनः परिक्रमा शुरू करे। आधी रात बीत चुकी है। बाप! चित्रकूट में लगभग तेरह वर्ष बीत चुके हैं। अयोध्या अनाथ है। सूर्यवंश का सूर्य अस्त हो चुका है। लक्ष्मणजी कुटिया के द्वार पर प्रणाम करते हैं। उन्होंने देखा कि आज अपनी दर्म शय्या पर प्रभु बैठे हें। डर गए। आज इस समय मेरा हरि क्यों बैठा होगा? स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा? क्या कारण होगा? यह प्रेम का एक लक्षण है। उसे आशंका हो। प्रेम शंकाधर्मी है। बालक बालमंदिर से देरी आए और माँ की शंका बढ़ती जाय कि रीक्षा को कुछ हुआ होगा?

यह पक्ष भी विचारणीय है। आप अपने परिवार को थोड़ा समय दीजिए। कल की बात हो रही थी कि पैसा न हो यह गरीबी है। अब संपत्ति सबके पास है, पर समय नहीं है! समय की गरीबी आई। ये दोनों सहन कर जाय पर समझदारी न हो तो वह भयानक गरीबी है। यह समझ निर्वाण हो अतः भगवद्कथाएं हैं, प्रयोगशालाएं हैं, यह वस्तु निर्मित हो और समझ आए।

अपने परिवार का कर्णधार चूप बैठ जाय। कुछ बोले नहीं। खाने के लिए बुलाए तो कहे इच्छा नहीं है। सोने को कहे तो जवाब दे, बाद में सो जाऊंगा। तब परिवारवालों की मनोदशा कैसी हो? वे डर जाय कि क्या हुआ? उन्हें पता है यह किसीसे कुछ नहीं कहेगा। आज अयोध्या के राज परिवार के कर्णधार चित्रकूट की कुटिया में मौन बैठे हैं। जानकीजी विश्राम में है। दो-तीन परिक्रमा की कि प्रभु अभी सो जायेंगे। पर अभी भी बैठे हैं। यह देखकर लक्ष्मण से रहा नहीं गया। धनुष-बाण रखकर डरते-डरते शील और संकोच के साथ-साथ चिंता सह प्रणाम करते हैं, 'भगवन्, सौमित्र प्रणाम करता है।' 'लखन! बाप, क्यों?' 'प्रभु इतने वर्षों का क्रम चलता है, मैंने आपको इस तरह बैठे हुए नहीं देखे हैं। मैं काल हूं। शेषावतार हूं, परंतु मुझे डर लगता है! बड़ा डर यह है कि कुछ होगा और आप कहेंगे नहीं। मैं काल हूं। शेषावतार हूं। पर मुझे डर लगता है।' इतनी बातें धीरे-धीरे हो रही है। सीताजी जग गई। पूछती है, 'क्या है लक्ष्मणजी?' कहते हैं, 'माँ, मैंने प्रभु को ऐसे जागते हुए नहीं देखा है। मुझसे सेवा में कोई भूल तो नहीं हुई? कोई मर्यादा भंग तो नहीं हुआ? मुझे पता है मुझसे चूक हो जायगी तो उपालंभ नहीं देंगे, दंड भी नहीं देंगे।' कर्णधार की भूमिका बड़ी अजीब होती है। साथ में रहनेवाले की दशा भी कभी-कभी इतनी ही वेदनामय हो जाती है।

सीताजी ने वृक्ष के पत्ते में मंदाकिनी का जल लेकर लक्ष्मणजी को दिया। लक्ष्मणजी ने प्रभु को दिया। जल पिया। पूछा, 'क्या कारण है?' भगवान ने कहा, 'मुझे मेरा भरत याद आ रहा है। मेरा भरत सोने नहीं देता।' किसी की याद में प्रयुक्त होता है उसी को ले तो ही विरह की अवस्था का ख्याल आये। कवि थारो भगत -

श्याम विना व्रज सूनुं लागे,
ओधाजी हमको न भावे...

साहित्य में नौ रस है। रसज्ञ अपने-अपने ढंग से वर्णन करते हैं। पर भवभूति कहते हैं, रस में तो एक ही रस करुणरस है। करुणरस की महिमा यह है कि हमें भीतर से धो डालता है। गालिब का शे'र है -

अश्कों से मुहब्बत में हम बेबाक हो गये।
रोये बस इतने कि पाक हो गये।

कितने प्रसंग कहूं? लंका के युद्धमैदान में युद्ध चल रहा है। जहां ईश्वर है वही विजय है। क्या आपको ऐसा लगता है कि इन्द्रजित लक्ष्मण को बाण मारे और वे मूर्छित हो जाय? फिर राम रोने लगे? वैद्यजी बुलाने पडे? वैद्य हनुमानजी को समयमर्यादा में औषधि लाने को कहे? रामजी लक्ष्मणजी का सिर गोदी में लेकर रोने लगे? यह प्रसंग है, दृश्य है। पर भीतर की लीला अलग है। हमारी कोई बेहद सेवा करता हो और उस पर हमें ममता हो जाय, हम सो जाय और वह जगा ही करे, इतनी अधिक सेवा करता रहे कि हमें कर्णधार के रूप में यों ही लगता रहे कि वह सोता ही नहीं। रामजी को लगा कि इतने वर्षों से जाग रहा है, एकाध रात सो जाय। पर इसे कैसे सुलाया जाय? तो, अंतरंग लीला शुरू की कि इन्द्रजित बाण मारे और इसी बहाने एक रात मेरी गोद में सोया रहे तो इस बहाने थकान उतर जाय। यह है, 'प्रनत कुटुंब पाल रघुराई।'

छठ्ठा लक्षण 'रामचरित मानस' के कर्णधार राम का। भगवान ने रावण को निर्वाण दिया। सभी भवन में आए। वसिष्ठ ने कह दिया, आज ही राजतिलक कर दे। जटा उतारने में आई। सभी ने स्नान किया। कर्णधार ने स्वयं अपनी जटा उतारी। अब तो राजाधिराज बननेवाले हैं। पर रामजी ने कर्णधारों को धर्म बताया कि कर्णधार को छोटों से कैसा व्यवहार रखना चाहिए।

कृष्णावतार में यदि मुझे कर्णधार खोजना हो तो यदुकुल के कर्णधार कृष्ण ही है। पांडवकुल भी वही है। यादवास्थली के पूर्व दिन जब कृष्ण-बलराम सोमनाथ के दर्शन आए तब उन्हें पता चल गया कि थोड़े समय में जाना है। शंकर का अभिषेक करते हैं। हम शिवालय में जाकर पूजा करे, बीलीपत्र लेकर छोटे हो उसके मस्तक पर रखे, बाद में हम अपने मस्तक पर रखे। यहां उल्टा हुआ। कृष्ण ने बड़े भाई के मस्तक पर बीलीपत्र रखा। बलराम समझ गए यह आखिरी बार है, मेरे भाई-बहन अवतार की कथा को थोड़ी देर एक ओर रख दें।

हमें इसमें से सीख लेनी है और हमारे परिवार के कर्णधार बने। बाप, सुंदर जीवन बनेगा। भगवान का कर्णधारत्व अद्भुत है! मुझसे ज्यादा छोटों को मिलना चाहिए। यह एक पवित्र शिव-संकल्प है। राम का है। आपके साथ छोटे-से बच्चें को आप ज्यादा दे तो सबकुछ अपने पास नहीं रखेगा; आपको लौटा देगा। आप छोटों को देंगे तो वह आपके पास ही आनेवाला है। जगत में ऐसे कितने ही कर्णधार होंगे। वसुधा वंध्या नहीं है। आज समझदार कितने हैं? कई तो सुनी-अनसुनी कर देते हैं। जानते हैं बिल्ली हमला करे और कबूतर आंख बंद कर दे तो हमला बंद नहीं होगा। आंख बंद कर देनी आत्मप्रपंच है। दो वस्तु याद रखियेगा। न तो आत्मद्वेष, न तो आत्मश्लाधा करनी है। ये दोनों नुक्सान करती है। नरसिंह महेता -

हुं करुं, हुं करुं ए ज अज्ञानता,
शकटनो भार जयम श्वान ताणे.

आप इतनी शांति से कथा सुनते हैं, मुझे लगता है यह शिबिर है।

> ईश्वर मनुष्यजीवन देता है, हम समस्याएं खड़ी करते हैं। कथा इसीलिए हैं कि कथा से विवेक मिले तो वह समस्या का समाधान दे सके। मैंने देखा, कथा सबको पसंद है। पर जब करना हो तो चूप हो जाते हैं! उसमें भी जो अतिशय समझदार होगा, जो जाग्रत होगा, उसे बहुत पीड़ा सहन करनी होती है। अतः कहता हूं, यह केवल धर्मसभा नहीं है कि यहां मोक्ष की ही बातें हो, अद्वैत की ही बातें हो। यह जगत आशीर्वाद लेकर बैठा है इसलिए सुंदर है। हम में मतभेद हो तो सीधा शाप ही दे देना! साधु शाप नहीं देता; असाधु के शाप लगते नहीं। इक्कीसवीं सदी प्रेम करने की सदी है, शाप देने की नहीं। बहुत सुंदर-शुभ सूरज निकला है, उसका प्रोक्षण करे।

हमारी प्रत्येक इन्द्रिय का कर्णधार शरीर है

नौ दिन की इस रामकथा में दो पंक्तियों का आश्रय लेकर जीवन के अलग-अलग क्षेत्रों में उपयोगी ऐसी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा केन्द्र में रखी है। 'मानस-करनधार' के रूप में। 'करन' का एक अर्थ इन्द्रिय है। 'कर्ण' लिखे तो कान हो पर तुलसीदासजी जब लोकभाषा में लिखते हैं तब 'करन' लिखते हैं। 'करन' और 'धार' शब्द को विशेष समझने के लिए एक पल के लिए अलग करे तो करन माने इन्द्रिय-कान, नाक, आंख, जीभ, त्वचा। पांच कर्मेन्द्रियां; पांच ज्ञानेन्द्रियां और सबसे उपर मन। इन सभी इन्द्रियों को कर्ण कहे। बाहर दीखे वह बाह्य इन्द्रियां। जो परोक्ष है वे अंत:करण की है। अंदर की इन्द्रियों के चार विभाग है - मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार।

मुझे यह कहना है बाप, 'कर्णधार' का, 'करनधार' का एक अर्थ होता है 'इन्द्रियों को धारण करनेवाला तत्त्व।' मेरा विचार है 'करनधार' का शरीर होता है। यह मनुष्यदेह सभी इन्द्रियों का धारक है। इसका आधार अपनी इन्द्रियां हैं। न देखती आंख भी देह के ऊपर ही है। इससे ऐसा हो तो भी अपना धारक तत्त्व देह ही है। तो देह भी एक धारक तत्त्व ही है। भगवान राम ने भी देह की प्रशंसा की है।

बड़े भाग मानुष तनु पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।
साधन धाम मोच्छ कर द्वारा।
पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।।

तुलसीदासजी ने मनुष्यदेह की महिमा की है। अभी और होनी चाहिए। देहधारी मानव की महिमा बहुत होनी चाहिए। मैं अभी-अभी कहता हूं कि हमारे निकट के देहधारी हरि की हमें खोज करनी चाहिए। मैं 'मानस' के एक प्रसंग के आधार पर कहता रहा कि सीता-राम का जब ब्याह हुआ तब मिथिला में वह लोकरीति-कोहबर की लीला कहते हैं। सीता-रामजी कोहबर में है और कौडी-करडा में गुलाल के पानी में उनके हाथ है। सीता के हाथ में मणिजडित स्वर्ण कंगन में राम का प्रतिबिंब दिखाई पड़ा। अब अंगूठी खोजने हाथ हिलाए तो प्रतिबिंब जाता रहे यह जानकी को पसंद नहीं था। हाथ स्थिर कर दिए। मर्यादा को लेकर सन्मुख हो नहीं सकती। प्रतिबिंब देखती है। अब विचार यह आए बाप कि सीताजी अपने कंगन में ही राम को क्यों देखे? भारतीय संस्कृति की दृष्टि से देखे तो सुहागिन का पति उसकी चूडियों में ही होता है। पति की मृत्यु केह बाद चूड़ियां उतार देती है। अब देश कालानुसार सुधार होने चाहिए।

ऐसा माना जाता है कि द्वारिकाधीश का दर्शन करने जाय तो समय पर दर्शन होते हैं। भीड़ हो, व्यवस्था हो, एक सरीखा न हो सके। श्रीनाथजी में अत्याधिक भीड के कारण शांति से दर्शन नहीं हो सकते। बांके बिहारी में पर्दा आए। मंदिर में स्थित भगवान एक समान सुलभ नहीं है। तुलसी का शायद यह संकेत है कि जानकी ने कंकण में राम को देखकर अपना भाव केन्द्रित किया। इसका अर्थ यह है कि इक्कीसवीं सदी में ईश्वर सुलभ होना चाहिए। यद्यपि वेदांत में परमात्मा सर्वत्र है। पर बड़ी प्रक्रिया करे तब वह प्राप्त हो। या तो दूध में मक्खन-घी है ही। पर सीधे मक्खन नहीं मिलता है। पूरी प्रक्रिया में से हमें गुजरना ही पड़े। हर तिल में तेल है ही। ये सभी वेदांत के दृष्टांत है। पर उस तिल को हमें पीसना पड़े। यों ब्रह्म तो 'सर्वं खल्विदं ब्रह्मं।' पर 'मानस' का यह सूत्र हरि सर्वसुलभ ज्यादा आत्मीय है। हमारा परमात्मा हमारे हाथ में होना चाहिए। इसीलिए भगवतीश्रुति कहती है -

अयं मे हस्तो भगवान अयं मे भगवत्तर:।

हमें अपना संत भी, देश का नेता भी, देश के अधिकारी भी, देश के डोक्टर भी सुलभ होने चाहिए। सब कुछ दूर-दूर होता जा रहा है। युवा-भाई-बहन परमात्मा सुलभ होना चाहिए। इस शरीर की महिमा का बहुत गान हुआ। देह की निंदा मत कीजिए। 'रामायण' ने ना कही है। अपने धर्मगुरु को जिस समय ऐसा कहना पड़ा होगा तब कहा होगा या उसके अपने विचार ऐसे होंगे अत: कहा होगा। जो हो सो हो। हमें पोस्टमोर्टम नहीं करना है।

यह देह कर्णधार है। अत: देह का मूल्य होना चाहिए। जरा, व्याधि यह सारी अवस्था तो क्रम है। यह तो आयेगी ही। हम योग्य रीति से देह का जतनकरे तो यह देह जिस अवस्था में जाय उतनी ही सुंदर लगेगी। लडका छुटपन में सुंदर लगे; युवा बने तब ज्यादा सुंदर लगे। फिर ब्याह करे, अरे उसकी तो बात ही जाने दीजिए! प्रौढ़ बने तब ज्यादा दर्शनीय लगे। हमें भी लगे जब युवा था तब इतना अच्छा नहीं लगता था। दाढी सफेद हो तब और भी अच्छा लगे। सफेद दाढी में रवीन्द्रनाथ कितने भव्य लगते थे! कालिदास ने कहा, 'वार्धक्ये मुनिवृत्तिनां...' वार्धक्य में मुनि की वृत्ति कैसी सुशोभित लगती है! कालिदास वार्धक्य का वर्णन करता है। बूढापा अच्छा लगता है। कईयों को बूढापा अच्छा नहीं लगता है! बाकी बूढापा तो पूरे घर को ऊपर-नीचे कर सकता है। एक-एक अवस्था सुंदर है। कल मैंने रास देखे। एक घंटे तक युवा खेलते रहे! शरीर सुगठित हो तभी न! बचपन से ही उपवास पर चढा दिया हो तो! धरम-धरम! रमेश पारेख ने कहा, 'वसंतना फूल खील्यां छे ने भगवो पहेरीने मंदिरे क्यां उपड्या?'

घांघां! घांघा! क्यां हाल्यो?

वसंतमां तें फूलने बदले धरम हाथमां कां झाल्यो?

फूल को देख ले। ऐसी बसंत ऋतु खिली है और तूने धरम को याद किया! बड़े से बड़ा धर्म यह प्रकृति है, साहब! पर गलत गतानुगत बहुत हुआ। तो शरीर का जतन कीजिए। शरीर कर्णधार है। यह शरीर साधन का धाम है। इस शरीर में सभी साधन मिल सकते हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजकीय, आर्थिक, मोक्ष तक के साधन इस शरीर द्वारा कर सकते हैं। ऐसा यह शरीर कर्णधार है। अलग-अलग क्षेत्रों में प्रदान की जाती अलग-अलग सेवाएं जिसका कर्णधार यह शरीर बन सकता है।

सामाजिक सेवाक्षेत्र का कर्णधार कौन? यह शरीर हो सकता है। किसी के जीवन में उपयोगी होना है। अन्नक्षेत्र चला न सके पर परोसने जाए; अस्पताल न बांध सके पर किसीको दवाई दिलवाए, रास्ते में पडे पेशन्ट को रीक्षा में डालकर अस्पताल पहुंचा दे। ऐसे जो-जो सामाजिक कार्य हैं, जैसे ऊंच-नीच के भेद मिटाए; चमत्कार-परचा नाबूद करे। यह 'चमत्कार' शब्द मुझे

अच्छा नहीं लगता। पर इस्तमाल करता हूं। मैं प्राइमरी स्कूल में छठ्ठी या सातवीं कक्षा में पढ़ा रहा था। जिसमें ३५-४० छात्र थे। उनको संभालना मुश्किल होता था! उसकी जगह इतने बड़े मंडप में इतनी बड़ी संख्या में आप शांत चित्त से श्रवण करते हैं। यह चमत्कार नहीं तो और क्या है? चमत्कार का लेबल नहीं देता। याद रखना, मैं कथा की शुरूआत से पहले चारों ओर देखता हूं तो लोग कहते हैं, इसमें भी कोई राज़ है! क्या कहूं? ये लोग आदमी को आदमी नहीं, कुछ और ही बना देते हैं! क्योंकि अपनो जैसा आदमी ऐसा कैसे कर सके? वह उसे जचता नहीं अत: वह कोई न कोई उसे वेष पहना देता है। पल जकड़नी है। साहब, जादूगर पल बांधता है। जोगंदर नहीं। जोगंदर का काम जो सोया है उसे जगाना है। यह मेरी सेवा है। इसीलिए शरीररूपी कर्णधार चाहिए। रमण महर्षि ने कहा, मैं यहां बैठा-बैठा समाज सेवा करता हूं। कोई आंखें बंद कर समाजसेवा करे। कोई एकान्त सेवन कर सेवा करे। पर शरीर चाहिए। धर्म का साधन शरीर है। अत: शरीर को तोड़िए मत। शरीर के जतन करने से सेवा हो सकती है।

दूसरा, यदि शरीर को कर्णधार कहे तो उससे जुड़ी गलत मान्यताएं फेंक देनी पड़ेगी। फिर बड़ी मान्यता है कि शरीर नाशवंत है। नष्ट हो जायगा यह सत्य है, पर इसे बहुत ऊपर चढ़ा दिया है। पर शरीर को पहले से ही नाशवंत बना दे तो मानव को सहज ही लगे ये सब क्यों करे? आखिर में नाशवंत ही है। एक विचारधारा ऐसी आई कि शरीर कष्ट है। जन्म से मृत्यु तक कष्ट ही कष्ट है। दु:ख ही है। कईयों का शरीर सत्संग के विवेक बिना भ्रष्ट हो चुका है। यह भी एक पक्ष है। मैंने सतत परिभ्रमण किया है। यह सब मैंने देखा है। बहुत घूमा हूं 'रामायण' को लेकर।

तथाकथित धर्म शरीर को नाशवंत बताते हैं। शरीर को तोड़ डाला! नीचोड़ दो, इतना बड़ा तप करे कि कुछ भी न रहे। भाई, मैं किसी के तप तोड़ने नहीं आया। मैं तो चरणस्पर्श भी करूं। उस युग में तप की विचारधारा अच्छी थी। 'रामायण' में पार्वती ने कितना तप किया? वर्षों तक किया। खाली सूखे पत्ते खाये। फिर वह भी छोड़ दिया। सो उनका नाम अपर्णा पड़ा। पर वह युग दूसरा था। अमुक धर्मो में जो तपस्वी आए वह ईश्वरीय देन होगी इसीलिए कर सके। क्षमा कीजिए, शरीर को इतनी हद तक खतम कर दे और आत्मसाक्षात्कार हो ऐसा विचार आदर्श नहीं बनना चाहिए। संशोधन होना चाहिए। यह तो उमा ही कर सके। मनु-शतरूपा कर सके। अमुक धर्म के साधुसंत सौ-दोसौ उपवास कर सके पर पूरा जगत, भारत की सवा सौ करोड प्रजा उपवास करे तो? हम समाज को कौन-सा मेसेज दे सकते हैं? शरीर उत्तम है। देवता सिर धूनने लगे कि हमें धरती पर उतारकर मनुष्य देह क्यों नहीं दिया है? अत: तुलसी ने लिखा 'सुर दुर्लभ...' देवताओं को ऐसी देह नहीं मिली। हमें जो शरीर मिला है वह दुर्लभ है। उसे क्यों नष्ट करना? तपस्वी की अपनी एक व्यवस्था है; वह उन्हें मुबारक! सभी के लिए वह प्रेरणा नहीं हो सकती।

मैं एक जगह प्रवचन देने गया। सभी तपस्वी थे। छोटे-छोटे लड़के भी तपस्वी थे। लड़के यों खिले फूल की तरह थे। मैं उन्हें देख मुस्कुराया। उनका स्पर्श पसंददीदा! मेरे निकट आना अच्छा लगे। मैंने उनसे पूछा, क्रिकेट खेल सकते हो? उन्होंने संकेत में कहा, मत बोलिए! गुरुजी बैठे हैं! समाज में यह क्या हो रहा है? समाधि तो लगे तब लगे, उपाधि तो लग गई है! धर्म नई चेतना से दुलार करे; उदासीन न हो। मैं बड़ौदा आ रहा था वहां महुआ-तलाजा के बीच एक स्कूल है। गांव के लड़के पढ़ने आए तो घर से अपने साथ टिफिन लेकर आए। वे सब खाना खा रहे थे। दूसरी-तीसरी कक्षा में पढ़ रहे थे। हमारी कार आगे निकल गई। मैंने वापिस लेने को कहा। यह चिराग था; नीचे उतरा। सभी के टिफिन में आलू की भाजी, उडद की दाल, बाजरे की रोटी थी। आधा खा चुके थे। साथ खाने की इच्छा हो आई थी। व्यासपीठ पर बैठा हूं, हृदय से कहता हूं, किसीने अभी ही टिफिन खोलकर मुझे खाने के लिए कहा होता तो मैं गंगाजल का

व्रत एक ओर रखकर खा लेता। आप इसी तरह धर्म का पालन कीजिए। हम इसको छूते नहीं! हम यह खाते नहीं! मेरा तो वर्षों से गंगाजल का व्रत है। मेरे रक्त में गंगाजल के सिवा कुछ भी नहीं है। फिर भी मैं उस दिन खा लेता। हिलते-डुलते आश्रमों में धर्म को स्थित होना चाहिए।

शरीर को कर्णधार कहता हूं। तब मेरी व्यासपीठ के मत से शरीर नष्ट भी नहीं, कष्ट भी नहीं, भ्रष्ट भी नहीं, यदि आंख खुले तो शरीर इष्ट है। मेरे भाईयों-बहनों, शरीर को इतना भोग भी नहीं चढ़ाना है तो शरीर को इतना तोड़ना भी नहीं है, क्योंकि शरीर अपनी प्रत्येक इन्द्रिय का कर्णधार है। हम भ्रष्ट या भग्न हुए तो पुन: जोड़ सके। हमें ग्लानि हो तो भगवान श्रीकृष्ण हमें बल देते हैं कि तू थोड़ा करेगा तो 'क्षिप्रं भवति धर्मात्मा।' मैं तुझे क्षण में साधु बना दूंगा, मैं तुझे क्षण में पवित्र कर दूंगा। कीजिए सत्संग, रखिए अच्छा संग। अच्छी कंपनी रखिए, अच्छी किताबें पढ़िए। अच्छे लेख पढ़िए। अच्छे लोगों के साथ अच्छे प्रोग्राम देखिए। इस जीवन को भ्रष्टता से बाहर निकाल सकते हैं। यों देखें तो भ्रष्ट कौन नहीं है?

सत्संग का संकीर्ण अर्थ नहीं करना है। आप किसी सज्जन के साथ दो घंटे बैठे वह सत्संग है। आपने अच्छी कविता सुनी वह सत्संग है। आप अखबार में अच्छा लेख पढ़े वह सत्संग है। आप अच्छा नाटक देखें सत्संग है। अच्छी फिल्म देखे मेरी ओर से छूट है। 'अच्छा' शब्द याद रखिए। आपको नृत्य के सुंदर संवाद प्राप्त हो पर जो संवाद एक दूसरे के धर्म पर प्रहार करे उससे बचिए। सावधान रहिए। शुभ का स्वीकार कीजिए। वेदों ने छूट दे रखी है। 'आनो भद्रा क्रतव:।' हमें दसों दिशाओं से शुभ प्राप्त हो। चित्त विकृत न हो। चित्त की प्रसन्नता रूठे नहीं। देह को इष्ट बनाइए। हमें देह के कर्णधार से पूछना है कि मेरी इन्द्रियरूपी खिड़कियों में से क्या देखना, क्या सुनना इत्यादि।

गांधीजी ने समाज सेवा के लिए ग्यारह महाव्रत लिए। एक कर्णधार सूत्र उन्होंने दिया। हम कितना कर सके, कितना प्रेक्टिकल है, उस पर सोचा जा सकता है। सोचने की छूट होनी चाहिए। युवाओं, यदि आप अपने देह को समाजसेवा का कर्णधार बनाना चाहते हैं तो गांधीजी से अच्छी सीख मिलती है। कुछेक अपनी बात तो कुछेक योग में से ली हुई बात है। व्रत जड़ नहीं होने चाहिए। हो सके उतना कीजिए। मैं भी जड़ नियम की बात नहीं करूंगा। साहब, मैं गाय का ही दूध पीता हूं। मैं ग्राम्य विस्तार से गुजरता हूं और मुझे चाय पीने की इच्छा होती है पर किसान के यहां गाय नहीं, भैंस है। वे बेचारे प्रेम से चाय बनाए और मैं न पीऊं तो वे कितना बुरा मान जाय? मैं सामने से चाय की इच्छा रखूं तो वे कितने खुश हो जाय! मैं पानीवाली चाय पीता हूं तो मैं गंगाजल डालता हूं तो गंगाजी की महिमा इतनी बड़ी है कि उसमें मृत की एक हड्डी जाय तो उसकी इकहत्तर पीढ़ी मोक्ष प्राप्त हो, तो भैंस का दूध गाय का दूध क्यों न हो जाय? व्रत माने जड़-तीव्र व्रत नहीं। गांधीबापू के तीव्र व्रत थे। वे तो अवतारी पुरुष थे। पर हमसे जितना हो सके उतना करना है। समाज सेवा करनी हो तो ऐसे कर्णधार व्रतों की यथाक्षमता, यथारुचि जितना स्वाद मिले उतने व्रत रखने हैं। तो कर्णधारत्व हममें आयगा। गांधीजी ने ग्यारह दिए -

सत्य, अहिंसा, चोरी न करवी, वणजोतुं नव संघरवुं,
ब्रह्मचर्य ने जाते महेनत, कोइ अडे ना अभडावुं,
अभय, स्वदेशी; स्वादत्याग ने सर्वधर्म सरखा गणवा,
ए अगियार महाव्रत समजी, नम्रपणे नित आचरवां।

ये ग्यारह महाव्रत सोचसमझकर विनम्र हो पालन करना। व्रतों से कर्णधार का सार्थक्य है। पहला व्रत सत्य है। आदमी सत्य का जितना निर्वाह कर सके इतनी समाज सेवा बढ़ा सके। गांधीजी की तुलना में किसकी समाजसेवा लायेंगे? हम संसारी है जितनी मात्रा में सत्य का जितना जतन हो सके, पूर्ण सत्य न बोल पाए पर कम अज कम युवा भाइयों और बहनों को इतनी प्रार्थना तो

जरूर करूंगा कि किसी का सत्य आपको सत्य लगे तो स्वीकार कीजियेगा। बोलना महान वस्तु है। पर जीवन जीना यह इससे भी महान वस्तु है। अपनी तकलीफ यह है कि हम किसी और का सत्य स्वीकार नहीं कर सकते! मैंने तो अनुभव किया है कि सत्य की दुहाई देनेवाले आदमी या तो सत्य की विचारधारा में जीवित लोगों के बारे में साक्षीभाव से कहता हूं, नाम भी जानता हूं, वे दूसरों के सत्य का स्वीकार नहीं करते हैं!

सत्य दर्शन का विषय है, प्रदर्शन का नहीं। हमारे यहां स्वच्छता अभिमान चल रहा है। बहुत अच्छा विचार है। गांधीजी के स्वच्छता के विचारों को लेकर प्रधानमन्त्री ने भारत स्वच्छता अभियान शुरू किया। मैंने त्रिवेदीसाहब को अहमदाबाद में किडनी अस्पताल के लिए कथा करने का वचन दिया है त्रिवेदी साहब को बड़ा राष्ट्रीय पारितोषिक मिले इतना बड़ा काम कर रहे हैं। इसके बाद की कथा स्वच्छता अभियान पर अहमदाबाद करेंगे ऐसा दाणीभाई बता रहे थे। मैं दाताओं को ढूंढूंगा और हर गांव में शौचालय की व्यवस्था करनी है। इस तरह कथा के माध्यम से स्वच्छता अभियान में मेरी आहुति होगी। रमणबापा के विचार से एक बार बारडोली में कथा की।

यह स्वच्छता अभियान तो व्यासपीठ ने वर्षों से शुरू कर दिया है। तलगाजरडा और बारडोली के आसपास जितना हो सका उतना किया। मैं राजू से कहता हूं, इस कथा में भी एकाद छोटा-सा गांव लेकर वहां शौचालय की व्यवस्था कर देनी है। क्यों न हम बड़ौदा की दिव्य और भव्यकथा से श्रीगणेश न करे? हम से पांच, दस, पच्चीस जितना हो सके उतना ठोस करना चाहिए। न हो सके तो तेरा खेल खत्म, मेरा खेल खत्म! कथा की फलश्रुति सौ साल के बाद पता चलेगी। विज्ञान युग है। शायद जल्दी भी मिल जाय। यह मण्डप डाला है सा'ब, यह कोई बांझ प्रवृत्ति नहीं है। यह सगर्भा प्रवृत्ति है। इसमें से कितनी ही चेतनाएं प्रस्फूटित होगी, जिसके बारे में हम जानते भी नहीं है।

मैं टी.वी. पर स्वच्छता अभियान देख रहा था। उसमें एक महाराष्ट्र का राजपरिवार; नाम नहीं दूंगा, व्यासपीठ की अपनी मर्यादा के कारण! सबकुछ स्वच्छ है। उनका भतीजा एक पत्ते को गिराकर उसे उस स्थान पर ले जाय जहां राजवी परिवार जाय! टी.वी.वाले बोलते जाय इस पत्तों का क्या गुनाह होगा? जो मुखिया था वो केमेरा में आ जाय इसलिए दूसरों को हटा देता था!। वह समाजसेवा नहीं है। समाजसेवा में सत्य होता है, कचरा नहीं होता। पहले कचरा डालो फिर सफाई करा! ऐसे भी नाटक होते हैं! अहमदाबाद की पूरी कथा स्वच्छता अभियान के लिए होगी। पर इस कथा से हम श्रीगणेश करेंगे। मैं राजू को कहूंगा। इस कथा से हमें समाज को प्रेरणा तो देनी ही है।

समाजसेवा के कर्णधार के लिए पहली शर्त सत्य है। यह न हो सके तो दूसरों का सत्य स्वीकार करने

> यदि शरीर को कर्णधार कहना है तो उसके साथ जुड़ी गलत मान्यताएं निकालनी पड़ेगी। बड़ी मान्यता है कि शरीर नाशवंत है। यह सच है, पर बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा है। शरीर को पहले से नाशवंत बता दे तो फिर आदमी को लगे ये सब क्यों करना? एक विचारधारा ऐसी आई कि शरीर कष्ट है; शरीर रोग का घर है। शरीर को जो नष्ट नहीं मानते वो इतना तो स्वीकार करते हैं कि शरीर कष्ट है। जन्म से मृत्यु तक कष्ट ही कष्ट है। दुःख ही है। कईयों का शरीर सत्संग विवेक के अभाव में भ्रष्ट हो जाता है। मेरी व्यासपीठ के मत से शरीर नष्ट भी नहीं है, कष्ट भी नहीं है, भ्रष्ट भी नहीं है। आंख खुले तो शरीर इष्ट है।

की तैयारी रखनी चाहिए। इसमें कुछ है। अतः उसका प्रोक्षण करे। दाद देनी चाहिए। मुझे खुश होना चाहिए। सत्य, अहिंसा, चोरी न करनी। सत्य के बाद अहिंसा। हमें प्राप्त देह, इन्द्रियों द्वारा मन-वचन-कर्म से किसी की हत्या न करे, किसी को दिल को दुःख न दे यह बड़ी समाज सेवा है। मेरी स्पष्ट मान्यता है कि अहिंसा का जन्म करुणा में से होता है। करुणा जगेगी तो हिंसा नष्ट हो जायगी। मेरी दृष्टि से करुणा की पुत्री का नाम अहिंसा है। सत्य के पुत्र का नाम अभय है। प्रेम का पुत्र न्याय है। जिसके पास सत्य और अभय होगा उसका कुल महान होगा। हम इतनी शांति से श्रवण करते हैं तो क्या निश्चित न कर सके कि क्यों हम वचन-कर्म-मन से बेवजह किसी को पीड़ा पहुंचाये? सब अपने प्रारब्ध से आनंदित रहते हैं। गांधीबापू कर सके क्योंकि उन्होंने बराबर पालन किया।

'चोरी न करनी', अस्तेय; इस राष्ट्र में जो काला धन चर्चित है। तो समाज सेवक को चोरी नहीं करनी चाहिए। विद्वान कहते हैं, यह कठिन है।

जिस दीये में हो तेल खैरात का,
उस दीये को जलाना नहीं चाहिए।
जिस बुलंदी से इन्सान छोटा लगे,
उस बुलंदी पे जाना नहीं चाहिए।

जिस बुलंदी पर पहुंचने के बाद दूसरे आदमी हमें छोटे लगे, हे अल्लाह, हमें ऐसी ऊंचाई मत देना। हमें सब हमारे जैसे लगने चाहिए। चोरी न करनी। किसी का समय नहीं चुराना। किसी के संस्कार नहीं चुराने। टेढा-मेढा करके किसीका धर्म नहीं चुराना! बेवजह किसी को उसकी संस्कृति से तलाक नहीं दिलवाना! ये सब चोरी है। केवल जान-माल की चोरी नहीं होती। बेवजह जमाखोरी मत कीजिए। अपरिग्रह। बहुत अच्छा व्रत है। ये सारी बातें होती है। साहब, बात में वजन तो लगे। कर्णधार के लिए तो खास। मैं मानता हूं कि वस्तु का अधिक संग्रह तरंग पैदा करता है। वस्तु के अतिरेक से शांति नहीं रहती। व्यक्ति में बढ़ोतरी हो तो बहुत बड़ा समाज पैदा होता है तब आपको अपना थोड़ा एकांत बचाना चाहिए। यह भी एक परिग्रह है। अपने यहां स्पर्धा चलती है कि मेरे पास बहुत सारे आदमी है! खास कर धर्मक्षेत्र में चलता है कि मेरे पास इतने फोलोअर्स है! इससे तरंग बढ़ते ही है। हथेली में जल का संकल्प करे, इससे कटोरी में पानी डाले तो ज्यादा तरंगित होगा। पतीले में डाले, घडे में डाले, स्विमिंग पुल में डाले फिर तालाब में डाले। ज्यों-ज्यों जल की मात्रा बढ़ेगी त्यों-त्यों तरंग बढ़ती जायेगी। यही नियम है। वस्तु, वसु, व्यक्ति और मुझे कहने दीजिए अधिकतम विचार भी परिग्रह है। फिर हमें शांति न लेने दे। एक के बाद एक विचार ओवरटेइक करते जाय। जरूरी हो उतने विचार, जरूरी हो उतने पैसे और जरूरी हो उतनी ही व्यक्ति;

सत्कर्म में उपयोगी हो उतना ही। कोई ज्यादा दे, ठीक है। पर यह स्थायी वृत्ति नहीं होनी चाहिए।

ब्रह्मचर्य; हम संसारी को सरलता से संयम का निर्वहण करना चाहिए। डींग नहीं हांकनी है। वढवाण की मेरी कथा में तालाब के किनारे मेरी कुटिया! एक आदमी मिलने आया, 'मैं चालीस वर्ष का ब्रह्मचारी हूं। मुझे एक प्रश्न है, कितने लोगों से पूछा!' मैंने कहा, 'आप चालीस वर्ष के ब्रह्मचारी नहीं पर कुंआरे हैं।' कहा, 'आपको कैसे पता चला?' मैंने कहा कि, 'मैं कुछ नहीं जानता पर मुझे ऐसा लगा। चालीस वर्ष का ब्रह्मचर्य हो तो क्या मुझसे पूछने आना पड़े, साहब!' तो कहे, 'बापू, अब मैं क्या करूं?' मैंने कहा, 'चालीस हो गए हैं। पात्र मिल जाय तो ब्याह कर ले!' बाप, सरलता से जितना संयम रहे, अपने प्रेक्टिकल शास्त्र दे उस तरह संयम से जो जीए वह कर्णधार बन सके।

स्वयं परिश्रम; पहले मैं यह करता था। खुद के कपड़े धोना, झाड़ू-पोंछा करना; खाने के बर्तन साफ करना। अब लड़के भाव से कर देते हैं। पहले मैं तीन बजे उठ जाता था। यह मेरा नियम था। लगभग दस-बारह साल चला। देरी से सोऊं, जल्दी जग जाऊं। लेकिन हुआ, वह पंथ अनजाना था! गलत होता था। सहज सरल भाव से जीना अच्छा है। हम हल्के-फुल्के रहे। बाकी दुनिया तो हमें कुछ न कुछ समझती है! साहब, जैसे है वैसे रहे तो दुनिया पूजने लगे। जैसे है वैसे न रहे तो भ्रम टूटेगा। और संसार आपको दूर फेंक देगा। ज्यों बने त्यों आदमी निरावरण रहे। 'मानस' में रामजी ने कहा, मुझे इतनी वस्तु नापसंद है -

मोही कपट छल छिद्र न भावा।
दंभ मान मद करहिं न काउ।

हम विशेष नहीं है, पर लोग हमें ऐसा कहे ऐसे अपने नेटवर्क नियोजित होते हैं! आखिर में आत्मग्लानि होती है, साहब!

'कोई अडे न अभडावुं'; किसी को अछूत नहीं मानना। इसका ठीक पालन कीजिए। बहुत हुआ! इस देश में अस्पृश्यता आने से राष्ट्र का काफी नुक्सान हुआ! युवा भाई-बहन, आप भिन्न रहे, किसी को हीन मत माने। ईश्वर ने एक समान सबको नहीं बनाए हैं। अभय-निर्भय रहना है। सत्य हो तो ही अभय आए। यह निश्चित है। मेरे जीवन का पक्का अनुभव है कि बिना सत्य के अभय नहीं रह सकते। झूठ बोलना पड़े। इधर-उधर करना पड़े!

स्वदेशी;जिन्हें समाजसेवा करनी है उसे तो कम अज कम स्वदेशी को आदर्श बनाना हे। मैं भी स्वदेशी का आग्रह रखूं। पर विदेशी वस्तु से घृणा भी मत रखिए। गुणात्मक और सात्त्विक होना अच्छा है। मैं खादी ही पहनता हूं। स्वादत्याग, इसमें मेरी समझ कम है! कई कहते हैं इसमें 'स्वार्थत्याग' है। बापू स्वयं स्वाद त्याग के आग्रही थे। जैन में अस्वाद होता है। इनमें से कई जैन व्रत है। सभी तीक्ष्ण व्रत है। मैं तो लिज्जत से जलेबी और गांठिया खाता हूं! भुजिया खाता हूं! इसमें स्वाद त्याग कर कैसे खाए? हम संपूर्ण पालन न कर सके तो महापुरुष नाराज नहीं होते। जितना अनुकूल पड़े उतना करो तो भी खुश रहे। आप कहे, आज मुझे 'हनुमानचालीसा' करने की इच्छा हुई थी पर कर न सका। तो भी मैं खुश; भाव तो हुआ।

इन नौ दिनों की कथा में हम कर्णधारों की खोज की सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा करते थे। कथा का थोड़ा क्रम ले। भगवान शिव के ब्याह की तैयारियां हो रही है। शंकर के गण अपनी मानसिकता अनुसार शिवजी को सजाते हैं। शिवजी का सन्मान हुआ। महारानी मयना ऐसा रूप देखकर बेहोश हो गई। सप्तऋषि, नारद और हिमालय भवन में गए। सब भ्रान्ति टूटी कि शिव कौन है? परिचय दिया गया। शंकर दुल्हे का रूप लेकर तैयार हुए। अष्टसखियों के साथ पार्वतीजी धीरे-धीरे मंडप आई। पाणिग्रहण हुआ। जयजयकार हुआ। लोकरीति और वेदरीति से हिमालय पुत्री शिव के साथ ब्याही है। दोनों कैलास पहुंचे। पार्वती ने कार्तिकेय को जन्म दिया। एक दिन शिव कैलास के वटवृक्ष के नीचे बैठे है। पार्वती रामकथा हेतु जिज्ञासा करती है। शिव कैलास की ज्ञानपीठ से रामकथा का आरंभ करते हैं।

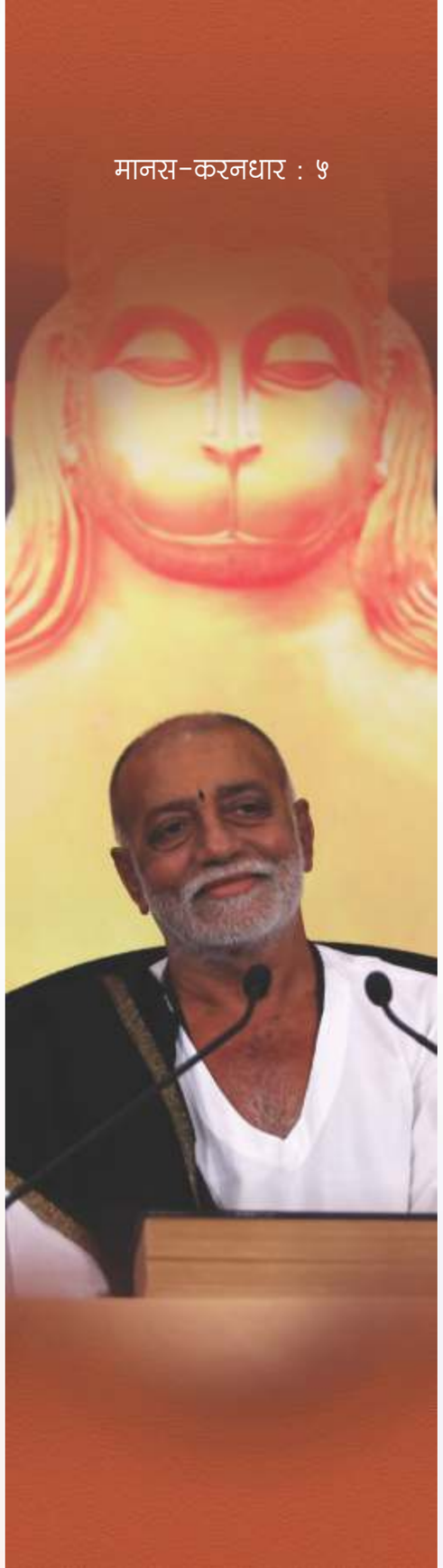

मेरे लिए धर्म का कर्णधार 'रामचरित मानस' है

इस कथा के केन्द्र में 'मानस-कर्णधार' है। जिसकी तात्त्विक-सात्त्विक चर्चा साथ में बैठकर कर रहे हैं। यह व्यासपीठ निश्चित किए गए सात क्षेत्रों और उनके कर्णधार कौन-कौन हो सकते हैं और हमें पार उतारे ऐसे कौन-से केवट हो सकते हैं इसकी हम अपने जीवन विकास और विश्राम के लिए बातें कर रहे हैं। राष्ट्र का कर्णधार कौन हो सकता है और कैसा होना चाहिए? सामाजिक सेवा क्षेत्र में डूबे समाज का कर्णधार कैसा होना चाहिए? विज्ञान, धर्म, जवानी और अध्यात्म इन सबके कर्णधार कैसे होने चाहिए? हमें डूबोए नहीं, पार लगा दे। वेद में एक मंत्र है; बहुत ही सरल शब्दों में है। उच्चार करें -

चत्वारि शृंग त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां आ विवेश।।

इस मंत्र का सीधासादा अर्थ है; एक ऐसा वृषभ, एक बैल जिसके चार सींग है, तीन पैर है। भगवान वेद जिस वृषभ का वर्णन करते हैं उसके दो मुंह है, सात हाथ है। यह वृषभ तीन जगह बंधा हुआ है। पहली की तरह लगता है, कूट प्रश्न लगे, परंतु भगवान वेद जब बात करते हैं तब बहुत ही रहस्यपूर्ण लगती है।

बाप, अपने यहां धर्म को एक प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है तब धर्म को भी वृषभ कहा है। जिसके चार पैर है। पुराण के वृषभ के चार पैर है। पौराणिक धर्म के चार चरण सत्य, दया, तप और शौच है। तुलसी भी कहते हैं -

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान।।

पर इस वेद का वृषभ मुझे पसंद है कि वेद इतनी ऊंचाई पर भी धर्म की व्याख्या करे तब जमीन में, खेत में काम करता हो उस किसान की समझ में आए इस रीति से बैल के रूप में धर्म का वर्णन करते हैं। यह वेद की महत्ता है। हमारे खेत और आंगन में धर्म को ले आए; बैल को जब भी बांधना हो, छोड़ना हो, जोतना हो, पानी पिलाने ले जाता हो; बिठाना हो, बैलगाडी में जोड़ना हो यों यह अतिसुलभ वाहन है। इसीलिए शंकर ने इसे पसंद किया। कहां शंकर? कहां नंदी? वेद का

ऋषि धरती से जुड़ा है। बातें आसमान की है। हमने धर्म के नाम पर बहुत कठिनाईयां की जिससे सामान्य आदमी निकट न आ सके।

अपने यहां हंमेशा कहा गया है कि ये बातें सूक्ष्म है। ऐसे-वैसे का काम नहीं! यूं कहकहकर हमें खत्म कर दिया! हेतु चाहे कुछ भी हो। मैं आलोचना में जाना नहीं चाहता। साधु निंदा नहीं, निदान करता है। निदान करना धर्म है। डोक्टर दर्दी से कभी न कहे कि तू ऐसा है, तू वर्णाधम है, तू कैसा खाता है, तुझे तो ऐसा ही रोग होना चाहिए! उसकी निंदा नहीं करनी है। आप इतनी शांति से सुनते हैं तो एक-एक बात खोलनी है। मैं उपदेश देने नहीं बैठा हूं। एक माँ अपनी बेटी को गोद में बिठाकर बालों में तेल डालती हो, बालों को साफ करती हो, एक-एक बाल में तेल सींचती हो उसमें जू पड़ी हो तो निकाल देती हो, यही काम व्यासपीठ का है। सिर्फ आपके मस्तक पर हाथ रखकर भाग निकलने का काम नहीं है, नहीं है, नहीं है। कब हम धर्म को इस तरह समझ सकेंगे? बाप! देरी न हो जाय! यूं ही देरी तो हो गई है। और यदि जाग जाय, युवा भाईयों और बहनों, तो अभी भी देरी इतनी नहीं हुई है।

धर्म की बात पर युवा भाईयों-बहनों भड़ककर भागते हैं। धर्म माने हमारा स्वभाव। उसे आप छोड़ नहीं सकते। वेद-धर्म का मुझे गौरव है। काठियावाडी शब्द कहूं तो 'फांको' है। मेरे लिए सनातन धर्म की बड़ी अस्मिता है। हिन्दु धर्म में जन्म लेना सबसे बड़ा सन्मान है। गांधीजी भी कहते थे, हिन्दु होने का मुझे गौरव है। विवेकानंद भी यही कहते थे। धर्म बिना लेबल का होता है। धर्म की एक स्टान्डर्ड अवस्था होती है। 'मानस' का अर्थ क्या है? 'मानस' का अर्थ हृदय है। 'रचि महेस निज मानस राखा।'

मुझे कोई पूछे तो कहूं कि वेद हमारा बड़ा सनातन धर्म है। विशाल है। परंतु उसमें से सीख-सीख कर हम इतना कह सके कि हृदय हमारा धर्म है, स्वभाव हमारा धर्म है। धर्म को कितना कठिन कर डाला, साहब! विधिओं में धर्म गुम हो गया। निज रीति रखनी; निज स्वभाव, धर्म रखना। प्रसन्न रहना हो, चाहे कुछ भी हो जाय खुश रहना हो, तो स्वीकृति को प्रकृति बनाइए। जैसा समय आया हो उसका स्वीकार कीजिए। स्वीकृति यही मेरी प्रकृति है। कोई गाली दे, प्रशंसा करे, बैठने न दे; खड़ा कर दे तो भी प्रसन्न रहिए। जिसने स्वीकृति को प्रकृति बना दी उसे आठों प्रहर आनंद है। क्यों नरसिंह महेता आनंद में रहा? हमने कौन से पाप किए हैं? उसके मुल्क के बाशिन्दे होकर हम उदासी में क्यों घूमे? शंकराचार्य प्रसन्न रह सके तो हम क्यों नहीं? क्योंकि हम स्वीकार नहीं कर सकते! धर्म के वृषभ को खेत में ऊतरने दो। किसान को धर्म समझा दें। नींव खोदते मज़दूर को धर्म समझा दो। रोड-फूटपाथ पर सोए हुए को धर्मप्रसाद समझा दो। साहब, धर्म किसी एक की बपौती नहीं! धर्म माने हृदय, धर्म माने 'मानस'।

आज मुझे ये बात करनी है कि धर्मजगत का कर्णधार कौन हो सकता है? इसीलिए यह वेदमंत्र मेरे दिमाग में सुबह से घूम रहा है। इस मंत्र की मैंने अलग संदर्भ में बात भी की है। एक परम श्लोक को वेद के श्वास के पास में उतारा। इसकी महिमा है। उगे तो उगने दीजिए। स्वर्ग-मोक्ष मिलने की बातें झूठ है। डायरेक्ट फ्लाइट! धर्म फेक्टरी में, धर्म आदत में, दुकान के काउन्टर में; धर्म के आंगन में; घर के कोने-कोने में आना चाहिए। घर की छोटी से देहरी में हो तो अच्छा है। मंदिर की व्यवस्था स्वागत योग्य मानता हूं, पर धर्म को आप लक्ष्मण रेखा में बांध मत दीजिए। बाप! यह निंदा नहीं, निदान है। निंदा परमपाप है, निदान परमपुण्य है। कहां तक उलझन में रहेंगे?

तो, धर्मजगत का कर्णधार कौन बन सकता है? मेरी तरह तिलक करे वह? ये अपने मार्ग का विशेष परिचय हो सकता है। ये अच्छी चीज है। न रखे तो अधार्मिक हो गए यह कहने का किसी को अधिकार नहीं है। धर्म तो हाफपेन्ट में भी हो सकता है; धर्म दिगंबर भी हो सकता है; श्वेतांबर भी हो सकता है; पीतांबर भी हो सकता है। हमें कर्णधार चाहिए। जो हमारे जहाज को पार लगा दे।

श्रीमद् राजचंद्र, कृपालु भगवान, ववाणिया। गांधीजी भी जिनसे मार्गदर्शन लेते थे। वे यों कहते थे कि परमात्मा, तू हमें मिले, न मिले, कोई चिन्ता नहीं। एक भीख मांगता हूं। हे देव, तेरी परीक्षा में जो उत्तीर्ण हुआ हो और जिसे याद कर तेरी आंखें भीगती हो ऐसे किसी संतपुरुष से मिला दे। ऐसा कोई बुद्धपुरुष मुझे मिल जाय! तू एकदम सीधा मिल जायगा तो मैं तुझे पचा नहीं सकूंगा!

अपूर्व अवसर एवो क्यारे ए आवशे,
क्यारे थईशुं बाह्यांतर निर्ग्रंथ जो.
सर्व संबंधनुं बंधन तीक्ष्ण छे दिले,
विचरशुं कव महापुरुषने पंथ जो...

- श्रीमद् राजचंद्र

परमात्मा मागने जैसी चीज़ नहीं है। आंख खूल जाय तो आप ही परमात्मा है। परमात्मा जिसे प्रेम करे ऐसा बुद्धपुरुष मागने जैसी चीज है।

सत संगति दुर्लभ संसारा।
निमिष दंड भरि एकउ बारा।।

तुलसी कहते हैं, जो जाग्रत हो उसके साथ पल दो पल गुजारने को मिल जाय। किसी संत के आश्रय से हमें प्राप्त विद्या और कला को हम हजम कर सके। यह जगत में दुर्लभ से दुर्लभ है। संत चूर्ण है। वह लिया नहीं जाता। पास में बैठिए और पाचन शुरू हो जाता है विद्या और कला का पद-प्रतिष्ठा, पुरुषार्थ और प्रभुकृपा से मिला पैसा पच जाता है। साधु एक ऐसा चूर्ण है, औषधि है।

तो, वेद के मंत्र का क्या अर्थ करना? कोई वेशभूषा, तिलक, लेबल ये धर्म का परिचय नहीं है। एक अवस्था, एक लेवल, एक स्टान्डर्ड धर्म का परिचय है। धर्म माने हृदय, धर्म माने 'मानस', धर्म माने स्वभाव। सभी धर्म का सार हृदय है। मैं आपको स्लेट पर वृषभ का चित्र बताऊं। चार सींग, तीन पैर, सात हाथ, गले में रस्सी, यह बैल रस्सी से तीन खूंट से बंधा है। दो सिर है। वेद जिस वृषभ की बात करते हैं उसे चार सींग है; पुराण जिस धर्म वृषभ की बात करते हैं उसके चार चरण है। वैदिक वृषभ को तीन चरण है। पौराणिक धर्म को एक ही मुख है। वैदिक धर्म में दो मुख का उल्लेख है। ऐसा कोई धर्मपुरुष, धर्माचार्य, बुद्धपुरुष, ऐसा कोई धर्मग्रंथ या सद्ग्रंथ यदि हमें मिल जाय तो अपना कर्णधार बन सके। हमें पार लगा सके। मैंने स्पष्टरूप से कहा है, मेरा आग्रह नहीं है पर मुझे गुरुकृपा से सत्य समझ में आया हो उसे साक्षीभाव से प्रस्तुत करता हूं। जरूरी नहीं कि आप इसे मान ले। आप स्वतंत्र है। एकदम आपको फ्रीडम है। शायद मेरी व्यासपीठ जितनी स्वतंत्रता कहीं पर दी नहीं जाती। मुझे यह कहना पड़े इसलिए कहता हूं। बाकी भले ही पचास वर्षों के बाद समाज मूल्यांकन करे; मुझे कोई आपत्ति नहीं है। जायेंगे तो लौटकर आयेंगे! मरने की तो बात ही मत कीजिए। जो मरने की बात करते हैं उसके क्रियाकर्म जल्दी कर डालिए! मरण मरने जैसा नहीं, वरण करने जैसा है।

तो, जिसे चार सींग है वह कौन-सा धर्म है? ऐसा कौन-सा धर्मग्रंथ है? हमने नाम ही ऐसा रखा है 'मानस-कर्णधार।' कुर्रान को माने उसके लिए 'कुर्रान' कर्णधार; 'बाइबल' को माने उसके लिए 'बाईबल।' तो हमारे जहाज को तट पर कौन लाए? ऐसा कौन-सा महापुरुष है जो विशेषण मुक्त हो? लेबल मुक्त हो? एक लेवल होना चाहिए। श्रीमद् राजचंद्र जिसकी मांग करते है ऐसा कौन हैं? मुझे जो लगा वही कहता हूं। तुलसी ने भी कहा। पर जरूरी नहीं कि आप मान ले। परंतु मेरे लिए धर्म का कर्णधार 'रामचरित मानस' है, 'रामचरित मानस' है, 'रामचरित मानस' है। 'इति त्रिसत्यम्।'

अब वेदमन्त्र इनके साथ जोडिए। मैं जोड़-तोड़ नहीं करता। मेरी जिम्मेदारी है। मेरा एक-एक शब्द रेकॉर्ड हो रहा है। विज्ञान के माध्यम से शब्द सालों तक पकड़ में रहेगा। आपकी निष्ठा होगी तो आपका सद्ग्रन्थ भी आपका कर्णधार हो सकता है। इस्लाम धर्म का कर्णधार 'कुर्रान' बन सकता है। 'बाईबल', 'धम्मपद' कोई भी लीजिए। भारत ने किसका इन्कार किया है? ऐसी सभ्यता, ऐसा देश, वेद से लेकर आज तक आते विचार और महापुरुषों का काफी योगदान है, साहब!

अब इस 'मानस'रूपी ग्रंन्थ के धर्म वृषभ के चार श्रृंग कौन-से है? नाम, रूप, लीला और धाम है। कृष्णकथा में ये चार वस्तु आती ही है। यों इनके शीर्षक है। 'एहिं महं रघुपति नाम उदारा।' नाम आता ही है। 'अमित रूप प्रगटे तेहि काला।' रूप आता ही है। 'असि रघुपति लीला उरगारी।' लीला आए ही। 'राम धामदा पुरी सुहावनि' धाम आए ही।

हमारी चर्चा वेदमंत्र 'मानस' में कहां जुड़ता है उसकी है। यह जो धर्म वृषभ है, कर्णधार है, 'रामचरित मानस' उसके चार सींग है। नाम, रूप, लीला, धाम। किसी भी अवतार का चरित्र हो तब सगुण स्वरूप का कोई नाम होता है। अवतार से संबंधित विशिष्ट नाम। इसमें नाम तो है ही। इसमें लीला माने चरित्र यह भी है। इसका एक विशिष्ट रूप होता है। और ठाकोरजी का धाम। धर्म के ये चार सींग है। तीन पैर धर्म-वृषभ के और 'मानस' कर्णधार हो तो उसके भी तीन-तीन चरण है। चरण गति का प्रतीक है। हमारे प्राचीन भजनों में कहा है, 'अमने चरणोमां वास देजो।' कभी भी किसी ने ऐसा नहीं कहा कि हमें उनके चेहरे में बास देना। कारण? हम संकुचित न हो जाय? चरण की तरह हमारी गति भी बढ़ती जाय। धर्म तो प्रवाह है। निरंतर चलता है। वह केनाल नहीं है। अपनी मस्ती में आकर अनेक मोड़ ले। उसे बांध नहीं सकते। शास्त्रों में भक्ति मांगी तो चरणों में ही मांगी।

तो, धर्म के कर्णधार के तीन पैर; रामकथारूपी 'मानस' कर्णधार के तीन चरण जो गति करते हैं। यह कथागति कैसे करे? तीन रीति से कथा होती है। यह इसकी गति है। कथन उसका एक चरण हैं। दूसरा चरण कथा श्रवण है। सबका अनुभव है कि कथा जब शुरू करे तब गौमुख की गंगा जितना स्वरूप होता है। धर्मरूपी 'मानस' वृषभ का तीसरा चरण है अनुमोदन। कथा तीन रीति से गति करती है। कथाकार से कथा की गति हो, श्रोता से हो और तुलसीजी ने हद की! आप सुने नहीं, कहे नहीं, कथा में आए नहीं, आपको कथा शायद पसंद न हो पर राजु ने कथा आयोजन किया है इसका अनुमोदन तो कीजिए! अनुमोदन करना है, आलोचना नहीं। कथा की आलोचना क्या नहीं होती? मैं चौवन वर्षो से गा रहा हूं। क्या मुझे अनुभव नहीं होते? अनुमोदन तो कीजिए। यह तीसरा चरण है, साहब! ठीक है, अनुमोदन भी न करे एक टूकड़ा मैं अपनी ओर से डालूं कम अज कम आलोचना तो न करिए!

मैं आपसे एक प्रश्न पूछुं साहब, जवाब देना पड़ेगा। परमात्मा की सद्कथा जो है यह कथा सत्य है कि नहीं? यह कहिए, है न? हम संसारी है तो अपनी छोटी-बड़ी व्यथा होती है कि नहीं? यह कहिए, है न? हम संसारी है तो अपनी छोटी-बड़ी व्यथा होती है कि नहीं? ठीक। अब वह व्यथा सत्य है या नहीं? तो कथा भी सत्य है। व्यथा भी सत्य है। इतना सत्य मिला। अब 'रामायण' ने कौन-सी सीख दी? भगवान ने हनुमानजी से यों कहा कि 'हे ब्राह्मण देवता, मुझे वह कथा सुनाइए। तो, हनुमानजी ने क्या किया? व्यथा सुनाई! मैं तो मंद हूं, मोहवश हूं। आप मुझे भूल गए!' यहां दोनों ही सच्चे हैं।

भगवान ने कथा पूछी। हनुमानजी व्यथा कहने लगे। यहां तुलसी ने हमें मार्गदर्शन दिया कि राम की कथा सुनने से हम में प्रेम जगे। हमारी व्यथा सुनाने से प्रभु के हृदय में करुणा जगे। अत: सूत्र हुआ सत्य, प्रेम, करुणा।

'द्वै शीर्ष'; जिस लीला का निरूपण होता हो उसके दो रूप मस्तक के सगुण और निर्गुण; एक निराकार, एक साकार। 'भगत प्रेम बस, सगुन सो होई।' भक्त प्रेमवश है उसे कोई कार्य-कारण सिद्धांत लागू नहीं पड़ते हैं। सगुण-साकार रूप धारण करता है। परमात्मा के सगुण-निर्गुण दो रूप है। एक व्यापक तो दूसरा व्यक्तिरूप है। एक निराकार, दूसरा साकार है। 'सप्त हस्तासो'; उसमें सात हाथ है। 'रामचरित मानस' कर्णधार है। उसके सात हाथ उसके सात कांड-सोपान है। युवाजनों आप बराबर ध्यान देकर सुनियेगा। बिना दबाव के आपकी चाहत हो वहां तक, स्वभाव स्वीकार करे वहां तक सुनियेगा। हम मानव हैं ऐसे रास्ते जायेंगे तब 'बालकांड' हाथ पकड़ेगा, 'नहीं, ज्येष्ठजन का अपमान मत कर।' 'बालकांड' हमें रोकेगा। हम व्यथित होते हो, हमारे हाथ में बाजी आ गई हो, सफलता नजदीक ही हो, उसी क्षण विपरीत हो, निष्फलता हाथ लगे तब हम थक जाय, तब कथा श्रवण उचित किया होगा तो 'अयोध्याकांड' का हाथ सीख देगा, 'बाप, राज्य मिलता था, हर्ष न हुआ, बनवास मिला, शोक न हुआ।' तब यह सीख मिलेगी। कभी अपनी प्रिय वस्तु, विचार, या व्यक्ति का हरण हो या गुम हो जाय तब 'अरण्यकांड' हाथ आयेगा। कभी हम अमुक वस्तु के लायक हो, अधिकार हो; दोनों भाईयों को हक्क हो और फिर भी एक भाई सशक्त हो, अभिमानी हो वह छोटे भाई का सबकुछ दर्शन ले और उसको वन भेज दे, अन्याय से ऐसा करे ऐसी दशा में 'किष्किन्धाकांड' आपका हाथ पकड़ेगा, 'चिन्ता न कर। वालि ने सुग्रीव का सब कुछ छीन लिया; पर एक दिन ऐसा आयेगा जब राम और हनुमान दोनों तुम्हारे पास आयेंगे और तुमने खो दिया है वह सब वापिस मिल जायगा।'

कोई घटना विपरीत हो गई है; एक सूत्र कहता रहा हूं यदि हृदय को आए तो उस पर गौर कीजियेगा। जो समस्या आती है उससे पहले ओलरेडी समाधान आ गया होता है। भरोसा रखिए। ऐसी सीख 'रामायण' देता है। हम समस्या के आने से समाधान के लिए दौड़ पड़ते हैं! अस्तित्व का नियम है कि ईश्वर यदि पानी की व्यवस्था न करे तो उसे हमें प्यास देने का कोई अधिकार नहीं है। अन्न की व्यवस्था न करे तो भूख देने का अधिकार नहीं है। दांत नहीं थे तो माँ स्तनपान कराती थी। अत: समस्या के लिए 'सुन्दरकांड' हाथ पकड़ेगा। कहेगा, 'थोड़ा ऊपर देख, समाधान ओलरेडी आकर बैठा है।' रावण मंदोदरी के साथ सीताजी को वश करने के लिए अशोकवाटिका में आया है। अंत में तलवार निकाली। सीताजी व्यथित हुई। रावण से पहले तो हनुमानजी पहुंच गए थे। अशोकवृक्ष पर बैठ गए थे। हमें 'रामायण' बताती है कि समस्या से पहले हरि समाधान भेज देते हैं। हम आसपास देख लें; कोई न कोई आकर बैठा होगा। जब समस्या आए तो इधर-उधर नहीं देखना, पर ऊपर देखना। ऊपर किसी सद्गुरु का हाथ होगा। ये सभी भरोसे के विषय है। इसे गणित की तरह सिद्ध न कर सको। जो अनुभवी है वही 'इति सिद्धम्' बोल सके। हम समस्या के आने से घबड़ा जाते हैं। हडबडी में पड़ जाते हैं। उस समय थोड़ा ऊपर देखे। हम भी आखिर जीव है, शायद ऊपर न देख पाए तब भी मौका आयेगा तब वह रामनाम लेते-लेते प्रकट होने की कोशिश करेगा! फिल्म का एक गीत-कीर्तन है, गोपीगीत है -

तुम मेरे पास होते हो, कोई दूसरा नहीं होता...

बाप, सद्गुरु ऐसा तत्त्व है। परमात्मा का हाथ अपने ऊपर होता है। इसीलिए जीवित है सा'ब! हमारी हैसियत नहीं कि जीवन का ज़हर पचा सके। होठ हमारे ही होते हैं। पी जानेवाला कोई और ही होता है। नहीं तो मीरां की मृत्यु हो जाती। केमिकल्स का स्वभाव है कि हलाहल विष पीनेवाला मर ही जाता है। परंतु मीरां को पता था कि होठ मेरे थे, विष मीठा लगा था पर पी जानेवाला हरि था।

तो, समाधान प्रतीक्षा करता बैठा होगा। समस्या आने पर 'सुन्दरकांड' हाथ पकड़ेगा। शर्त? आशा छोड़कर भरोसा रखिए। जीवन में सुरी और असुरी विचारों

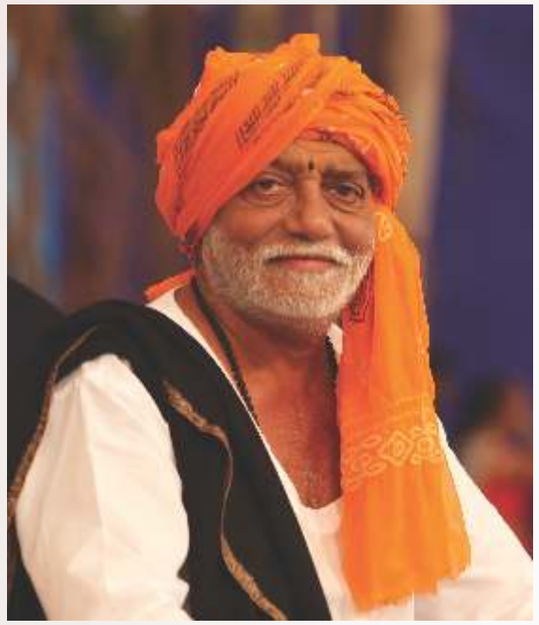

का सर्जन होगा। पता भी नहीं चलेगा कि कौन-सा पक्ष हम पर कब्जा कर बैठेगा। मूर्छित हो जाने पर 'लंकाकांड' हाथ पकड़ेगा। आपके लिए हनुमान संजीवनी लायेंगे ठीक समय पर दवा हाजिर कर देंगे। ऐसा समय आये कि जीवन प्रश्नों से भर जाय, कोई जवाब न मिले, कोई कागभुशुंडि होगा, सद्गुरु होगा तो जीवन के तमाम उत्तर हाथ पकड़कर देंगे। वह ऐसा नहीं पूछेगा, 'तू कैसा है?' हम ही कहेंगे, 'पायो परम विश्राम', माने मैं ठीक हो गया। अब मैं सबकुछ खा सकूंगा। अब मैं चल सकूंगा। ये सात हाथ धर्मजगत के कर्णधार 'रामचरित मानस' के हैं।

त्रिधा बद्धो वृषभो; इस धर्मजगत का कर्णधार तीन जगह बंधा हुआ है यों तो यह कर्णधार किसी भी तरह से बंधता नहीं। यदि उसे रोकना है, आत्मसात् करना है तो हमें तीन कारणरूपी खूंटे इस्तेमाल करने पड़े। पहला कारण, 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।' हमें स्वान्तः सुख मिले अतः रूक जाईए। आप जायेंगे तो हमारा स्वान्तः सुख भी नहीं रहेगा। हे सन्त, हमें और कुछ नहीं चाहिए। हमारी प्रसन्नता बनी रहे। तू होगा तो सबकुछ होगा। दूसरा कारण 'भाषाबद्ध करब मैं सोई।' खूंटे से बंधना है। अतः 'बद्ध' शब्द है। मेरे मन को बोध मिले। मैं आपको मेरे मन के साथ बांधूं। अलग न पड़ने दूं। मेरा मन आपकी रटण किया करे। तीसरा कारण, 'निज गिरा पावन करन कारन।' इनको बांधने के हेतु तुलसी ने कहे। भगवान वेद का वृषभ इस तरह वर्णित हुआ। जो मेरे व्यक्तिगत अनुभव के लिए 'रामचरित मानस' कर्णधार है। आप जिसे मानते हैं उसे पकड़कर चले।

कैलास की पीठ पर प्रभु शंकर सहज आसन पर विराजित है। पार्वती जिज्ञासा करती है, 'भगवन्, आप मुझे रामकथा सुनाकर मेरे संदेह का नाश कीजिए।' पार्वती की शरणागति देखकर शंकर रामकथा सुनाते हैं। रामकथा में राम के प्राकट्य से पहले रावण, कुंभकर्ण और विभीषण की कथा है। सूर्योदय से पहले अंधकार होता है। अतः निशिचर की कथा पहले होती है। फिर सूर्यवंशी की कथा आती है। तीनों भाईयों ने खूब तप किया। अद्भुत वरदान प्राप्त किए। रावण के आतंक से धरती संत्रस्त हो गई। धरती ने गाय का रूप लिया। ऋषिमुनियों के पास जाकर रोने लगी, 'हे प्रभु! हमें बचाईए।' ऋषिमुनियों ने कहा, 'हम सब देवताओं के पास जाय।' देवताओं ने कहा कि 'हम ब्रह्मा के पास जाय।' ब्रह्मा को नेता बनाकर समूह में प्रभु की स्तुति की। आकाशवाणी हुई, 'धैर्य रखिए, मैं अंश के साथ प्रकट बनूंगा।'

तुलसी अब हमें अयोध्या की ओर ले जाते हैं। महाराज दशरथ का सार्वभौम शासन, कौशल्यादि प्रिय रानियां; दिव्य दाम्पत्य; पर राजा को एक ग्लानि है। पुत्र नहीं है। दुनिया दुःखी हो तो राजा के द्वार पहुंच जाय पर राजा को पीड़ा हो तो कहां जाय? यह गुरुद्वार पहुंच जाते हैं। निज के सुख-दुःख बताए। जब कोई हल न मिले तब तुलसी मार्गदर्शन देते हैं कि अपने बुद्धपुरुष के पास पहुंचना चाहिए। कह सके तो कहे। शास्त्र का एक नियम कह दूं बाप, गुरु के पास कही पीड़ा का अंत या तीन वर्ष में होता है या तो गुरु को ऐसा लगे कि अब देरी नहीं होनी चाहिए। तीन माह में पूरा होना चाहिए। गुरु को ऐसा लगे अभी भी सिरियस मामला है, तो साहब, तीन दिनों में घटना घटित होती है। ये बुद्धपुरुषों की बात है। ये तथाकथित गुरुओं की बात नहीं है। जिस गुरु का नाम लेते ही हरि गद्गद् हो जाय ऐसे गुरुओं की बात है। तीन वर्ष, तीन माह या तीन दिन; साहब, अनुभव तो ऐसा है तीन घंटे में हो! छोडिए, छोडिए, छोडिए, तीन मिनिट में हो जाय! अपना परमहित किसमें है? इतनी मुदत आती है। वह कंजूस नहीं है, परम उदार है। अपनी पात्रता, अपना परमहित किसमें है? क्योंकि अपनी दृष्टि तो संकीर्ण है। तीन मिनट लगे, साहब! नहीं नहीं साहब, कभी ऐसा भी हो कि यहां कहा नहीं, इससे पहले वहां हुआ नहीं! ऐसा एक नियम तो क्या अनुभव है। दशरथजी ने बात रखी। गुरु ने कहा, धैर्य रखिए। चार पुत्रों के पिता बनेंगे। बुद्धपुरुष समर्थ हो तो भी कैसे निमित्त बनते हैं! साहब, सिर पर हाथ फेरे तो लेख सुधर जाय! दूर बैठा-बैठा यों करे तो भी बहाना ढूंढे, निमित्त खोजे, निजत्व प्रकट न होने दे। अतः महर्षि शृंगीऋषि बुलाए गए। पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया और प्रसाद की खीर वितरित की। रानियां सगर्भा स्थिति का अनुभव करने लगी है।

योग, लग्न, ग्रह, वार, तिथि अनुकूल होते हैं। सुख के मूल ऐसे परमात्मा प्रकट करने की बेला आई। चैत सुद नौमी, त्रेतायुग, मध्याह्न का सूरज है; न ज्यादा धूप, न ज्यादा ठंडी। अचानक मंद, सुगंध, शीतल पवन बहने लगा। वृक्ष फलित-पुष्पित होने लगे हैं। वेदगान सुनाई दे रहा है। पुष्पवृष्टि होने लगी। देवता गर्भस्तुति करने लगे। उसी समय समस्त जगत में जिनका निवास है और समस्त जगत का जिनमें निवास है ऐसे ईश्वर, ब्रह्मत्व, परमात्मा, कौशल्या के महल में चतुर्भुज स्वरूप प्रकट हुए हैं। तुलसीजी की लेखिनी गाने लगी -

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।।

कौशल्या के महल में चतुर्भुज स्वरूप नारायण का प्राकट्य हुआ। कौशल्या ने अद्भुत रूप के दर्शन किए। धीरे-धीरे माता ने प्रभु को बालक बनने का पाठ पढ़ाया। अंत में प्रभु ने शिशुरूप में रुदन शुरू किया। रुदन सुनकर भ्रमवश दूसरी रानियों दौड़कर आ गई। लोगों ने बधाई देनी शुरू की। दशरथजी को खबर दी गई। दशरथजी ने ब्रह्मानंद का अनुभव किया। गुरु का आगमन हुआ। कहा, आपकी इच्छा परिपूर्ण हुई। वे साक्षात् परमतत्त्व ललित नरलीला करने पधारे हैं। पूरे अवध में रामजन्म की बधाई शुरू हो गई। इसु के वर्ष के अंत में मेरे ईश्वर का प्राकट्य हो रहा है। बड़ौदावासियों को और समस्त खलक को बधाई हो, बधाई हो।

धर्म की बात आने पर जवान भाई-बहन भड़ककर भागते हैं! डरते हैं! धर्म माने मेरा और आपका स्वभाव। झूठी बातें करते है! जैसे आपको स्वर्ग और मोक्ष मिल जाय! डायरेक्ट फलाइट! धर्म फेक्टरी में होना चाहिए। धर्म आढ़त पर होना चाहिए। दुकान के काउन्टर पर आना चाहिए। धर्म आंगन में आना चाहिए। धर्म घर के कोने-कोने में होना चाहिए। घर के ताक पर हो यह अच्छा है। मंदिर की व्यवस्था रखे। मैं स्वागत करता हूं। पर आप धर्म को लक्ष्मणरेखा में बांध मत दीजिए। बाप, सोचिए! यह निदान है, निंदा नहीं। निंदा परमपाप है, निंदा परमपुण्य है। कहां तक हम यों उलझे रहेंगे?

कथा-दर्शन

- धर्म का लेबल नहीं होता, धर्म का एक लेबल-स्टान्डर्ड होता है।
- प्रलोभन दे वह धर्म नहीं है। हमें धर्म मुक्त दशा में जीने दे।
- निंदा करनी पाप है, निदान करना धर्म है।
- परमतत्त्व अपना हित नहीं करता है, परमहित करता है।
- गुणातीत श्रद्धा होगी तो व्यासपीठ पर भरोसा रहेगा।
- भक्ति तो भरोसे का पर्याय है।
- ज्ञान में जब भेदबुद्धि आए, तब ज्ञान खंडित होता है।
- ज्ञान में दीक्षा हो; दीक्षा में परंपरा है।
- बुद्धपुरुष को पूजनीय बनने की लालसा नहीं होती।
- एक दरवाजा बन्द हो तो गुरु सौ दरवाजे खोल देता है।
- कोई भी कला-विद्या बगैर गुरु के हजम नहीं होती; गुरु पाचकतत्त्व है।
- साधु शाप नहीं देता, असाधु का शाप लगता नहीं।
- संदेह अलग करते हैं, विश्वास से जुड़ना होता है।
- कर्णधार ज्ञानी होना चाहिए, समझदार होना चाहिए।
- जहां प्रयोजन है वहां दीवारें हैं, जहां प्रेम है वहां द्वार है।
- सुधारने की कोशिश मत करो, स्वीकृति की महेनत शुरू कीजिए।
- प्रसन्न रहना हो, तो स्वीकृति को प्रकृति बनाइए।
- मुस्कुराहट परमात्मा का वरदान है।
- आत्मद्वेष भी नहीं करना चाहिए और आत्मश्लाघा भी नहीं करनी चाहिए।
- जिनमें विवेक है उन्हें ही विघ्न आते हैं।
- जो वस्तु अपने बिना कारण के मोह का क्षय करे वही मोक्ष है।

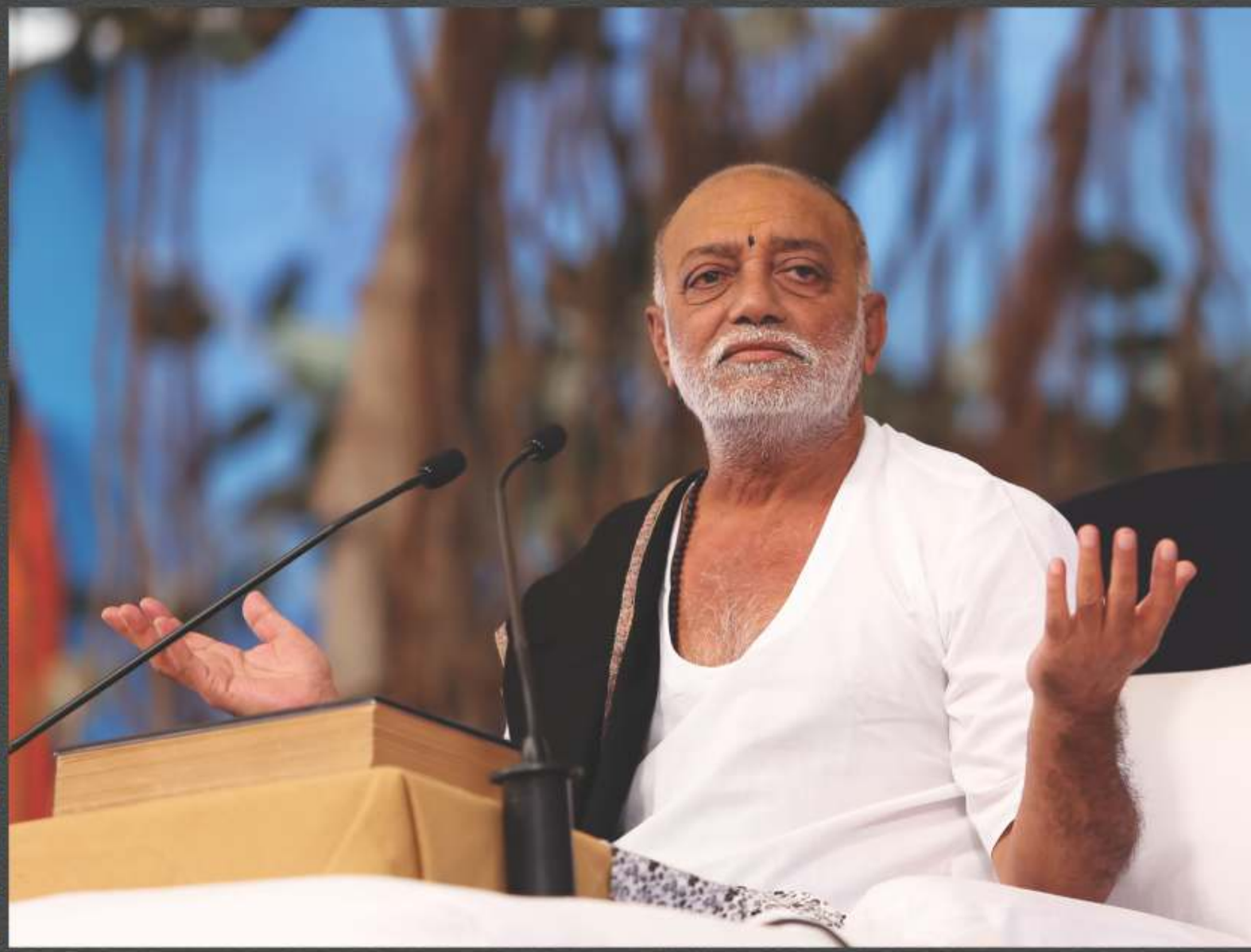

युवाओं का कर्णधार हनुमानजी के सिवा और कोई नहीं हो सकता

बाप! नौ दिनों की रामकथा के आज के दिन की कथा के आरंभ में कथा में उपस्थित सभी पूज्य चरणों में मेरे प्रणाम। विधविध विद्या-कलाक्षेत्र के सभी आदरणीय महानुभव, आप सभी श्रोता भाईयों-बहनो को व्यासपीठ पर से ईसु के नव वर्ष के मेरे प्रणाम, जय सीयाराम। आशा रखता हूं, मूल को समझकर आपने नया वर्ष मनाया होगा। बाप, यह भारत देश है। नए फूल तो खीलने ही चाहिए। यह दाढ़ीधारी का देश है। जिन्होंने जगत में किसीकी भी दाढ़ी में हाथ नहीं डाला है। असंग, अनासक्त, निर्दंभ, अभेद ऐसी महान हस्तियों का देश है। हम सबका आदर करते हैं। भगवान ईसु के नव वर्ष की आप सब को हार्दिक बधाई, शुभकामना।

'रामचरित मानस' में माँ कौशल्या और समस्त अयोध्या की एक ध्वनि इस पंक्ति में प्रकट हुई है। दूसरी पंक्ति 'उत्तरकांड' में भगवान-परमात्मा राम के शब्द है। जिसकी सात्त्विक और तात्त्विक चर्चा हम अपने आंतरिक विकास और विश्राम के लिए कर रहे हैं। महाराज दशरथजी मूर्छित है। जब सुमंत समाचार देता है कि अब बन से कोई लौटकर नहीं आयेगा। फिर दशरथ की स्थिति का वर्णन है। माँ कौशल्या कहती है कि अयोध्या एक बहुत बड़ा जहाज है। जिसमें सभी पुरजन, प्रियजन मुसाफिर बनकर चढ़े हैं। आप उस जहाज के कर्णधार है। यदि कर्णधार धैर्य खो बैठेगा तो सपरिवार, स-समाज अयोध्या का जहाज डूब जायगा।

दशरथजी कैकेयी भवन में गए। मूर्छित क्यों हुए? व्हाय? दशरथ कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। 'वाल्मीकि रामायण' के आधार पर कहूं कि गोस्वामीजी के शब्दों में कहूं; हम सब एक ही वाक्य में स्वीकार करे तो भी दशरथ की महत्ता विश्व को स्वीकार करनी ही पड़ेगी। कारण? यह ब्रह्म का बाप है। बाकी सब जाने दीजिए। गोस्वामीजी कहते हैं, कोई संत सम्राट के सामने झुकता नहीं है। इसका अर्थ साधु अभिमानी नहीं है। पर साधु को पता है कि अपना मस्तक कैसे रखना, कहां रखना, कितने समय तक रखना। परवाझ साहब की गज़ल है -

शबभर रहा खयाल में तकिया फ़कीर का।
दिनभर सुनाउँगा तुम्हें किस्सा फ़कीर का।

मैं पूरा दिन साधु की बात करूंग। क्योंकि साधु कहता है मैं पूरी रात कमाई करके आया हूं।

हिलने लगे हैं तख्त उछलने लगे हैं ताज,
शाहों ने जब सुना कोई किस्सा फ़कीर का।

तुलसी साधु है। क्या वे सम्राट का चरणस्पर्श करे? तुलसी कहे, बस मेरी ज़रूरत इतनी-सी है। केले के सूखे पत्ते; गंगाजल पीने के लिए बर्तन है। मैं भाजी खाता हूं। समझ में नहीं आता बाप कि तुलसी सम्राट की वंदना क्यों करे?

बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद।

दशरथ के पैर पर मस्तक रखा! अब कल्पना कीजिए, दशरथ कौन होंगे? 'बंदउँ अवध भुआल' शब्द प्रयुक्त किया है। राम के पिता कहकर चरणस्पर्श किए होते तो मुझे तकलीफ न होती। पर नमन के समय सम्राट का संबोधन किया है। साधु ने सम्राट को नमन किया। बाप, साधु अहंकारी नहीं होता पर उसे पता है मस्तक कहां पर रखा जाय और कितनी देर में वापिस लिया जाय। मस्तक तो हम सबके हैं। पर उचित जगह पर रखना नहीं आया सो कट गया! 'बंदउँ अवध भुआल'; कारण? 'सत्य प्रेम जेहि राम पद।' उन्हें राम के चरण में सच्चा प्रेम है इसलिए; वे सच्चे रामप्रेमी थे। अत: मैं प्रणाम करता हूं। तुलसीजी दशरथ का परिचय देते कहते हैं -

धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी।
हृदयँ भगति मति सारँगपानी।।

धर्म धुरंधर है, गुणनिधि है, ज्ञानी है। उसमें भक्ति भी है। ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग का संगम दशरथजी है। तो मूर्छित क्यों हुए? कहां गये सभी योग? दशरथजी मूर्छित हुए इसका कारण? ज्ञान, कर्म और भक्ति कब खंडित होती है? बाप! ज्ञान में जब भेदबुद्धि आए, तब ज्ञान खंडित होता है। दशरथजी में भेदबुद्धि नहीं है पर नारी को प्रसन्न रखने के लिए रामबनवास और भरत का शासन; इसे स्वीकारने के लिए मज़बूर हुए। हमारी समझ का विघ्न भेदबुद्धि है। भक्ति का विघ्न संदेहबुद्धि है। बाप, भक्ति तभी खंडित होती है जब वहम होता है कि मैंने जिसको भजा था वह यह है? गरुड की पीठ पर ठाकोरजी आसीन हो फिर भी गरुड को विष्णुजी पर संदेह हुआ? भगवान निशाचर के हाथों बंध गए? संदेह हुआ कि भक्ति कुंठित हुई! जिस क्षेत्र में काम करना हो उसमें विघ्नों की अपेक्षा तत्त्वों का अभ्यास ज़रूरी है। भेदबुद्धियुक्त-ज्ञानियों से प्रमाणिक दूरी रखकर चरणस्पर्श कर लेना बेहतर है।

मैं युवाओं को अपील करता हूं कि मुझे वर्ष में नौ दिन दीजिए, मैं आपको नवजीवन दूंगा। आपके सामने साधु तुंबी लेकर खड़ा है; भिक्षा दीजिए। सिर्फ नौ दिन दीजिए। कुछ फायदा हुआ या नहीं यह आपको तय करना है। मुझे आज एक चिठ्ठी मिली है कि 'बापू, आपने कल कहा था कि कथा के मूल्यांकन पचास वर्ष बाद होंगे। बापू, आपने ज्यादा बता दिया। पचास वर्ष नहीं पर अभी हमारे जीवन में सीधा ही ऊतरता है। इसलिए हम खुले दिल से, निर्भीकता से जो भी कहना होता है कह देते हैं।'

मैं आपको क्या कहता था, बाप! ज्ञान का विघ्न है भेदबुद्धि। भक्ति का विघ्न संदेहबुद्धि है। संदेह खत्म कर देता है! गरुड को भी संदेह हुआ। संभलकर रहना। भक्ति तो भरोसे का पर्याय है। कर्म का विघ्न है लोभबुद्धि, संतोष नहीं। शास्त्रों में कर्म का विघ्न कहा गया है। कर्म में फल मिले या न मिले इसकी कृष्ण ने ना कही। पर मैंने ठीक कहा है, इसका संतोष होना चाहिए। यह संतोष की बात है। कोई बालक बहुत श्रम करे और परिणाम मन चाहा न मिले तो 'गीता' आश्वासन दे कि बेटा, चिंता मत कर, तूने अपने कर्म करने में जरा भी गफलत नहीं की है। तेरी लोभबुद्धि नहीं है तो तेरा कर्मयोग विघ्न से मुक्त है। एक वस्तु आप समझ ले। ऐसी बात शायद माने या ना माने, मैं तो भरोसेवाला आदमी हूं इसीलिए कहता हूं, एक वस्तु जब समझ में आए तब; यहां जो होना है, होकर ही रहेगा। व्यर्थ प्रयत्न मत कीजिए।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा।।

युवा भाईयों और बहनों, थोड़ी राह देखिए। तुलसी कहते हें, 'जेहि बिधि होइहि परम हित।' परमतत्त्व अपना हित नहीं करता है, परमहित करता है। आपको अपने कार्य से संतोष होना चाहिए। परिणाम को छोड़िए। आपने पढ़ाई पूरी की, स्वाध्याय कर लिया, आप जितना तप किसीने नहीं किया है। ऐसी तृप्ति आपको मिलती हो फिर परिणाम न मिले इसकी चिंता मत कीजिए। कर्म का संतोष मिलना चाहिए। मैं यह कथा कहूं तो इसमें मेरी रुचि होनी चाहिए। मुझे कौन-सा फल चाहिए? मैं मुक्ति नहीं चाहता। स्वर्ग मुझे जाना नहीं। लौटकर आना है, हो सके इतना जल्दी तलगाजरडा

में ही आना है। उसी माँ की कोख में आना है, यदि तेरे घर में व्यवस्था हो तो! शंकराचार्य कहते हैं -

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।

शंकराचार्यजी कहते हैं, मुझे मोक्ष नहीं चाहिए। मुझे धन-वैभव की एषणा नहीं। ज्ञान-विज्ञान की भी अपेक्षा नहीं। मुझे किसी विषय की इच्छा नहीं। बस, हे माँ! मुझे इतना दे कि मैं हर पल शिव, शिव, शिव का स्मरण करता रहूं।

आप कथा क्यों सुनते हैं? आपको क्या मिलेगा? मैं तो स्वर्ग को रद्द करता हूं। मैं मोक्षवादी नहीं! आपको कोई प्रलोभन नहीं देता। आपको जो आनंद मिलता है वही नगद है। वर्तमान में जो मिले वह अपना है। शास्त्रकारों ने कहा है कि उसे अतीत अनुसंधान नहीं रहा। भविष्य की ओर नज़र नहीं की। जो पल मिली उसीमें जी लिया।

आगे भी जाने ना तू, पीछे भी जाने ना तू...

सूत्र सिद्ध होता है, जिसके द्वारा व्यक्त होता है, उस शुभ का सद्उपयोग क्यों नहीं करना? अस्पृश्यता क्यों?

जो भी है, बस यही एक पल है...

रामकथा का फल क्या? हम गा सके, सुन सके, बस यही। इसके सिवा और कोई फल नहीं। दशरथजी कैकेयीभवन में गए। राम के पिता जो कर्मयोगी है, ज्ञानयोगी है, भक्तियोगी है। भेदबुद्धि ने विघ्न किया। कारण? मंथरा ने भेदबुद्धि का आरोपण किया। युवा भाईयों-बहनों, सत्संग न हो तो कोई चिंता नहीं पर मैं सिर्फ इतना कहूं कि ऐसे लोगों का संग मत करना कि जिससे भेदवृद्धि का प्राकट्य हो। संदेहबुद्धि प्रकट हो। लोभबुद्धि का जन्म हो। दशरथ के सामने कैकेयी को रखूं तो क्या वह सामान्य महिला है? साहब! भरत जैसे संत को जन्म दिया। उस माँ का उदर कैसा होगा? जहां ऐसा रत्न हुआ। ऐसी महान माँ की मति को कुसंग बदल सके, एक मंथरा की भेदबुद्धि उसे विपरीत दिशा में ले जाती हो तो मेरी और आपकी हैसियत क्या?

संतों ने आध्यात्मिक अर्थ में कैकेयी को क्रिया का रूप कहा है। सुमित्रा को उपासना का रूप माना है। कौशल्या को ज्ञान का रूप माना है। 'गीता' के नियमानुसार हम एक क्षण भी कार्य किए बिना नहीं रह सकते। कैकेयी के भवन में जाना ही पड़ेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं। कैकेयी क्रिया का रूप है। क्रिया करनी ही होगी। कैकेयी के भवन में यूं तो कई गए। पर 'मानस' के आधार पर कहूं तो तीन पात्र गए और तीनों के परिणाम अलग-अलग आए। सबसे पहले दशरथ गए। आप कहेंगे, दशरथ में भेदबुद्धि कहां से आई? जिनके उदर से राम का प्राकट्य हुआ क्या उन्हें खबर नहीं देनी चाहिए? सुमित्रा मौन रहे तो क्या उसकी उपेक्षा करनी चाहिए? परंतु कैकेयी की ओर थोड़ा लगाव और आसक्ति ने भेदबुद्धि उत्पन्न की है। भेदबुद्धि लेकर जानेवाला मूर्छित ही होता है। जागृति आ ही नहीं सकती। यह केवल रामकाल का सत्य नहीं है। हम सबके जीवन का सत्य है। हम में 'रामायण' प्रतिपल जीवित है।

आज किसीने लिख भेजा है, 'बापू, क्या आपको नहीं लगता कि जहां कथा हो वहां कितने ही अशरीरी होते हैं?' बिलकुल। मेरा तो अनुभव है, कथा होती है वहां कोने में कितने ही अशरीरी बैठे होते हैं। बाकी मानवी की ताकत नहीं साहब! जिसे गुरु की कृपा होती है वह अशरीरी ही रहता है। यह किसी चेतना का प्रभाव है। यों मैं बोलूं और आप चूपचाप सुनते रहे! यह शक्य ही नहीं। यह किसी व्यक्ति का जादू हो ही नहीं सकता। या तो यहां 'रामचरित मानस' प्रत्यक्ष बिराजमान है। यह 'मानस' की कृपा है। नहीं तो मैं वही मोरारिबापू हूं जो प्राइमरी स्कूल में चालीस विद्यार्थीयों को मुश्किल से संभाल पाता था! पथ्थर नहीं तैरते; बंदर सेतु बांधे नहीं, तोड़ डाले! फिर भी हो सका। इसका एक ही कारण है -

श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण।

किसी की ओर से विशेष आसक्ति भेदबुद्धि उत्पन्न करती है। तुलना होती है। दशरथजी को मूर्छा आई। राम के पिता होने के नाते यह भी विचार करने मजबूर करते हैं कि दशरथजी दूसरे अर्थ में भी बोले हो। सुमुखी माने वही सुंदर मुख जो रामनाम लेता हो। कैकेयी निरंतर भरत को याद नहीं करती, राम को याद करती है। दशरथजी यों मानते होंगे कि सुलोचना उनकी ही है। जिसे बिना राम को देखे तृप्ति होती ही नहीं। वही कोयलकंठी है। जिसके मुख से रामनाम निकलता है।

गजगामिनी, मतलब राम का उपासक, कृष्ण का उपासक धीर धरता है।

भक्ति का दूसरा विघ्न संदेहबुद्धि है। दशरथजी जिस भवन में गए उसी भवन में राम गए। मूर्छित न हुए, मुस्कुराए। कैकेयी ने वही बात कही, राम तेरा बनवास और भरत को राजगद्दी। पर यह बात सुनकर राम के चेहरे पर मुस्कुराहट आई। उसी कार्यक्षेत्र में राम का प्रवेश पर मूर्छित नहीं हुए। क्योंकि वहां भेदबुद्धि नहीं है। संदेहबुद्धि या लोभबुद्धि भी नहीं है।

मन मुसुकाइ भानुकुल भानू।
रामु सहज आनंद निधानू।।

भेदबुद्धि नहीं है। मैं राजा बनूं या भरत बने क्या फर्क पड़ता है? माँ ने ऐसा किया इसके पीछे कोई षड्यंत्र होगा, ऐसा कोई संदेह नहीं। लोभबुद्धि भी नहीं है। राम को राम होने का संतोष है। शासन का फल मिले न मिले कोई लोभ नहीं है। कोपभवन में जानेवाली तीसरी व्यक्ति भरतजी है। कार्यक्षेत्र वही है। वही जगह है। प्रसंग का संदर्भ भी वही है। एक भेदबुद्धि से गए तो मूर्छित हुए; एक अभेदबुद्धि से गए तो प्रसन्नता प्राप्त हुई। भरतजी निष्काम प्रवृत्ति से गए हैं तो दृढता प्राप्त हुई। वही दृढता भूले हुए पात्रों को लेकर चित्रकूट तक गई। कार्यक्षेत्र में हम कौन-सा सामान लेकर जाते हैं, हमारे पास बौद्धिक या मानसिक सामग्री कौन-सी है, यह महत्त्वपूर्ण है।

आज मुझे कहना है, युवाजगत का कर्णधार कौन हो सकता है? कैसा होना चाहिए? इस जगत का छलकाता यौवन! आप जहां जाये युवा ही ज्यादा दिखाई पड़े। यह फसल काटी न जाय; उसे पानी पिलाए। उसके मूल का सिंचन कीजिए; प्रेमभाव से। युवा कितना बड़ा काम कर सकते हैं! यह हार्दिक ऐसा कहे कि मुझे ३१ दिसम्बर रामभजन में बीतानी थी! एक ही दृष्टांत है। दही जमाने के लिए दूध की दो बूंदें काफी होती है। दूध जितनी छाछ नहीं होती। एक शुभतत्त्व दही जमा दे, साहब! और विज्ञानरूपी घी निकाल दे। वृद्ध आए पर आशीर्वाद देने के लिए। आपके घर में जवान यूं कहे कि बापू की कथा है, दो दिन हमें जाने दीजिए और आप घर पर रहिए। उस दिन कृपा कर घर रहियेगा। बहू ऐसा कहे कि बा, मोम! समाज की पुत्रवधू कथा में आने की इच्छा रखे तो सास घर पर रहकर कथा में बड़ा योगदान दे सकती है।

तो, युवाओं का कर्णधार कौन हो सकता है? कैसा होना चाहिए? इसका शोषण नहीं, पोषण होना चाहिए। मुझे 'रामायण' में अच्छे पात्र दिखाई दे पर कोई खास रखना हो तो हनुमानजी के सिवा और कोई दिखाई नहीं देता। मैं प्रमाण देता हूं। राम की सेना में कोई वृद्ध नहीं था एक जामवंत के सिवा। मैं धार्मिक दृष्टि से नहीं कहता साहब! मानवीय दृष्टि से देखेंगे तो भी हनुमानजी के जो गुण है उस पर विचार करें तो हमें कहना ही पड़ेगा कि आजके यौवन का कर्णधार हनुमानजी के सिवा दूसरा और कोई हो ही नहीं सकता। युवा निष्क्रिय होते हैं, हतोत्साह होते हैं ऐसे युवाओं को शक्ति प्रदान करे, उन्हें शक्तिमान बनाए जो स्वयं शक्तिमान हो! प्लीज़, धार्मिक दृष्टि से मत लेना। हनुमानजी बंदर नहीं है; हमारी आंख खुल जाय तो हमारी उछलकूद बंद हो जाय ऐसा यह देव है। यह तो ऐसा विग्रह है। किसी ने मुझे वर्षो पूर्वे कहा था कि यह हनुमानजी की पूंछ निकाल डालिए न! यह पूंछ माने पूछनेलायक ठिकाना है। बल माने, केवल शारीरिक बल नहीं, आत्मबल, बौद्धिक बल। आप 'हनुमानचालीसा' का पाठ करते हैं, तो प्रारंभ में ही क्या धमाका है?

बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश बिकार।

राष्ट्र के नेता और कर्णधारों को भी सरहद पर रहते जवानों को बल प्रदान करना चाहिए। आदरणीय प्रधानमंत्री सा'ब का एक निवेदन मुझे पसंद आया था। महाराष्ट्र में चुनाव चल रहा था। चुनावसभा में उन्होंने ऐसा कहा था कि मेरे देश की सरहद पर ऐसा-वैसा होता हो इसका जवाब मुझे नहीं देना है, मेरे देश का जवान जवाब देगा। यह बात पसंद आई। युवाओं का कर्णधार हनुमान बने तो आत्मबल, मनोबल, बुद्धिबल बढ़ेगा। हनुमान पवनपुत्र है। पवन किसी धर्म या मजहब का नहीं होता। सभी को इसकी जरूरत पढ़ती है। अतः निश्चित कीजिए-

और देवता चित्त न धरई।
हनुमंत सेई सर्व सुख करई।।

हनुमान के शरीर को स्वर्णदेह कहा है -

कंचन बरन बिराज सुबेशा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।।

●

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकल गुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।

उसे जंग नहीं लगती। सुवर्ण को जंग नहीं लगती। किसी भी मौसम में जंग नहीं लगती। साहब, अपना कर्णधार ऐसा होना चाहिए कि जिसे स्वयं को जंग न लगी हो। जिसे जंग लगी हो वह दूसरों को क्या मदद कर सके?

उसे किसने इज़ाज़त दी गुलों से बात करने की।
सलीका तक नहीं जिसको चमन में पांव रखने का।

हमें ऐसे मार्गदर्शक का वरण करना है जो सुवर्ण हो। जिसका जीवन शुद्ध सोने का हो। 'दनुजवनकृशानुं' आसुरी विचारों को जलाने में अग्नि कैसा भी हो? हम इन्सान है। यौवन में गलती होती है। हर धर्मने जवान को कमजोरियों के साथ स्वीकार कर लेना चाहिए। उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए कि तू सुधर कर आ। तो फिर तुम्हारे पास आने की जरूरत ही क्या है? क्या गंगा यह कहे कि तू स्नान कर के आ! सुधरकर आ ऐसा नहीं, जैसा आए वैसा स्वीकार कीजिए। सुधारने की दिमाग पच्ची मत करो। स्वीकृति की महेनत शुरू कीजिए। सुधारने से कोई सुधरता नहीं। मलिन विचारों के जंगल को जला डाले, अंधश्रद्धा को निर्मूल कर डाले इसीलिए उसे अग्नि कहा है। वेदों में गुरु को अग्नि कहा है। वेद में तो ऐसा भी कहा कि गुरु मृत्यु है। सच्चा गुरु मिले तो समझने का या मरने का ही है। एक नया पुनर्जन्म हो जाय साहब! माँ की कोख से जो जीव निकले फिर गुरु के गृह से निकले तो शिव बन जाता है। साहब! एक नूतन जीवन प्राप्त होता है।

'ज्ञानिनामग्रगण्यम्'; कर्णधार ज्ञानी होना चाहिए। समझदार होना चाहिए। जिसमें सयानापन होना चाहिए। जिसके पास वचन का विवेक हो, दृष्टि का विवेक हो, हलचल का विवेक हो, उठने का विवेक हो, वही अपना कर्णधार बन सकता है। 'सकलगुणनिधानं'; तुलसीजी थक गए सो कह दिया सकल गुणों के धाम; समग्र गुणों का जो निधान है। भगवान कृष्ण ने 'गीता' में दैवीगुणों की सूची दी है। जिसमें ये सभी गुण हो, ऐसा कोई हनुमंततत्त्व, ऐसा कोई बुद्धपुरुष युवाओं का कर्णधार हो सकता है।

यौवन को भूतकाल तकलीफ देता है, 'मैंने ऐसा नहीं किया, मुझसे ऐसा नहीं हो सका!' चिंता भविष्य की होती है कि मेरा क्या होगा? मेरे केरियर का क्या होगा? तुलसीदास ने 'हनुमानचालीसा' में लिखा -

भूत पिशाच निकट नहि आवै।

भूत माने भूतकाल और पिशाच माने भविष्यकाल। मैंने दूसरे भूत-पिशाच नहीं देखे हैं। 'रामायण' की कृपा से और आपके आशीर्वाद से दुनिया घूमना हुआ पर कहीं नहीं देखा। हमारा पीछा भूतकाल करता है, बाकी कौन-सा भूत?

'वानराणामधीशं'; प्रायः जवानी में ही उछलकूद होती है। ब्याह के समय लड़के बेहूदे ढंग से नाचते हैं! क्या भारतीय रास नहीं ले सकते? अपने यहां कितने अद्‌भुत रास है! हमारी चंचल वृत्तियों का कोई नियंत्रण करे ऐसा कर्णधार होना चाहिए। 'रघुपतिप्रियभक्तं'; अपना कर्णधार राम का भक्त माने सत्य का भक्त। विश्ववंद्य गांधीबापू ऐसा कहते थे कि राम सत्य है। फिर अनुभव के दरवाजे खुले तब कहते थे सत्य ही राम है। जो प्रेम और करुणा से भरा है, ऐसा अपना कर्णधार हो सकता है। 'वातजातं नमामि'; जो पवनपुत्र है। जिसके कर्णधारत्व में संकीर्णता न हो। जो बहता पावन हो। 'चरैवेति चरैवेति' जिसका जीवन सूत्र हो। ऐसा तत्त्व हो किसी भी रूप में वह युवा जगत का कर्णधार बन सकता है।

> युवाओं का कर्णधार कौन हो? कैसा हो? युवाओं का कर्णधार हनुमानजी के सिवा और कोई नहीं हो सकता। साहब, मैं धार्मिक दृष्टि से नहीं कहता। पर मानवीय दृष्टि से देखेंगे तो भी हनुमानजी के जो गुण है उस पर विचार करे तो हमें कहना ही पड़ेगा कि आज के यौवन का कर्णधार सिवा हनुमानजी के और कोई हो ही नहीं सकता। युवा निष्क्रिय होते हो, हतोत्साह होते हो, ऐसे युवाओं को बल प्रदान करे, उन्हें बलवान बनाए। समाज के युवाओं को बलवान वही बना सके जो स्वयं बलवान हो। यह हनुमानजी कोई बंदर नहीं है; हमारी आंख खुले तो हमारी उछलकूद बंद हो जाय ऐसे देव है। यह तो ऐसा विग्रह है। केवल शारीरिक बल नहीं; आत्मबल, बुद्धिबल भी प्रदान करते हैं।

हनुमान को कर्णधार बना सकते हैं। मेरी बिनती है कि हनुमानजी की उपासना करनी हो तो कोई तंत्रपरक कठिन उपासना में मत जाना। हनुमान उपासना के लिए युवा और कुछ न करे तो भी चलेगा। बस, 'हनुमानचालीसा' करे। मैं हंमेशा कहता हूं, सुबह से शाम के बीच काम करते-करते, कोलेज जाते वक्त, जब भी समय मिले; रात को सोने से पहले ग्यारह बार 'हनुमानचालीसा' का पाठ कीजिए। आप कर्णधारत्व का अनुभव करेंगे। ग्यारह नहीं तो नौ, सात, पांच, तीन, एक बार कीजिए या यह भी कठिन लगे तो पहला दोहा लीजिए -

श्री गुरुचरण सरोजरज निजमन मुकुर सुधारि।
बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।

और अंत में -

पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।
रामलखन सीता सहित हृदय बसहु सुरभूप।।

इतना कीजिए। चलिए, यह न हो तो एक बार भी मत कीजिए। जो करते हो उनकी टीका मत कीजिए। आपका 'हनुमान चालीसा' पूरा हो गया। जो करते हैं उनका कम अज कम अनुमोदन तो कीजिए।

'रामायण' के सातों कांड में हनुमंततत्त्व है। प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो अप्रत्यक्षरूप से है। 'बालकांड' में स्तुतिरूप में हनुमानजी है। 'महाबीर बिनवउँ हनुमाना।' 'अयोध्याकांड'में हनुमानजी नहीं दीखते ऐसा आप कहेंगे; पर 'तेहि अवसर एक तापसु आवा। तेजपुंज लघुबयस सुहावा।।' यह 'रामायण' का रहस्यमय प्रसंग है। इसके अनेक अर्थ महात्मा, विद्वान करते रहे। पर मैं अपनी जिम्मेदारी से दो ही अर्थ लगाता हूं कि वह तपस्वी या तो प्रेम था या हनुमान था। उन चौपाईयों में जो लक्षण तपस्वी के बताए हैं ये हनुमान के सिवा और किसी के हो ही नहीं सकते। हनुमान तापस है, तेजपुंज है। हनुमानजी जैसा तेज और कहीं न मिले। 'लघुबयस', यह कभी भी वृद्ध नहीं हो सकते। क्योंकि माँ जानकी के आशिष है। 'कबि अलखित गति' कोई भी कवि इनकी गति को नहीं जान सकता। 'बेषु बिरागी' तन पर सोना, पर परम वैरागी का घनीभूत स्वरूप। 'मन क्रम बचन राम अनुरागी।' ऐसा तपस्वी आया कि जो मन-वचन-कर्म से राम का अनुरागी है। सभी सूत्र हनुमान को लागू पड़ते हैं। 'मानस' के 'अयोध्याकांड' का तापस प्रकाश हनुमानजी की एन्ट्री है। 'अयोध्याकांड' में उनका प्रवेश हुआ है तो 'अरण्यकांड' में वे भाग न जाय। 'अरण्यकांड' में अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देते हैं। 'सुन्दरकांड' तो उनके ही नाम बोला जाता है। 'किष्किन्धाकांड' में प्रत्यक्ष एन्ट्री है। 'लंकाकांड' में तो 'राम को दूत रजपूत'; तुलसी ने राजपूत कहा है। क्षत्रियों को गौरव लेना चाहिए। 'लंकाकांड' में युद्ध का बुद्धत्व। 'उत्तरकांड' में सभी सखाओं को बिदा दी। पर हनुमानजी को रुकने की आज्ञा दी।

रामजी स्वधाम जा रहे थे तब रामजी ने हनुमानजी को धरती पर रहने के लिए कहा। हनुमाजी ने शर्त रखी, 'प्रभु, आपकी कथा होती रहेगी तब तक रहूंगा।' मुझे कई लोग पूछते हैं, आप कथा क्यों करते हैं? तब एक कारण देता हूं कि हनुमानजी चले न जाय इसीलिए कथा करता हूं। सभी वक्ता कथा इसीलिए करते हैं कि धरती पर से हनुमंततत्त्व बिदा न हो जाए। सभी कांडों में, जीवन के सभी पड़ावो में, बाल्यावस्था में, 'अयोध्याकांड' का यौवन हो, 'अरण्यकांड' का उदासीनव्रत हो, 'किष्कन्धा' की मैत्री हो, 'सुन्दरकांड' का सुंदर जीवन हो, 'लंकाकांड' का जीवनसंघर्ष हो, जीवन के सातों कांडों के जवाब मिल जाय ऐसा 'उत्तरकांड' हो; हर बार हनुमान अपना कर्णधार बन सकता है। कोई मुझे कहे, कथा छोड़ दीजिए तो क्या मैं छोड़ दूं? यह मेरा प्राणवायु है। इसीसे तो मैं जीवित हूं। यह मेरा विश्वास है। यह मेरा जीवन है। क्या बाकी रहा! प्रभु की कृपा तो देखिए, साहब!

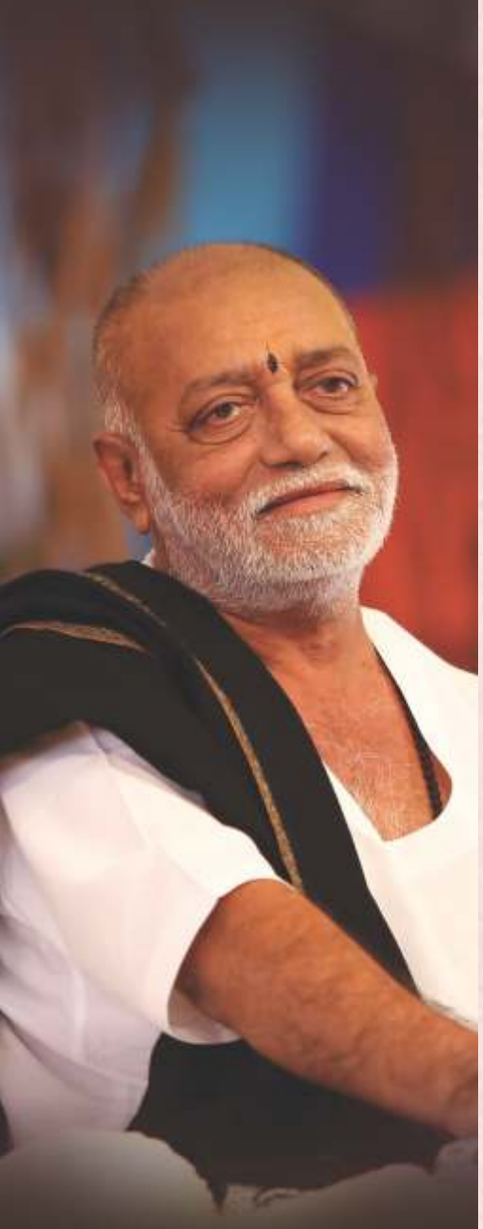

ज्ञान-विज्ञान के कर्णधार आदि कवि वाल्मीकि है

बाप! नौ दिवसीय रामकथा के प्रारंभ में उपस्थित सभी पूज्य चरण, दरगाह से आदर व्यक्त करने पधारे इस्लाम धर्म के धर्मगुरु, अपनी भाषा और कला के उपासक, सभी श्रावक भाईयों-बहनों और अन्य सभी को व्यासपीठ से मेरे प्रणाम। मैं शुक्रिया अदा करता हूं, मेरे अज़ीज, आदरणीय महानुभाव अपने दिल का आदर व्यक्त करने पधारे हैं। न उसको कोई कामना है,न मुझे कोई कामना है। और बाप, प्रेम तो अकारण ही होता है। जहां स्वार्थ है वहां दीवारें हैं, जहां प्रेम है वहां द्वार है। आईए, बाप, आईए, साथ मिलकर हिन्दुस्तान बनाए। ऐसी सुंदर पृथ्वी को और खूबसूरत बनाए।

इस प्रेमयज्ञ में हम सब मिलकर समाज के सात क्षेत्रों के कर्णधार को पहचानने का प्रयत्न करते हैं। इसमें राष्ट्र का कर्णधार कौन बन सकता है? राजा हो या नेता; हमारे छोटे से परिवार का कर्णधार; समाजसेवा क्षेत्र, युवाजगत, धर्मजगत का कर्णधार; धर्मक्षेत्र में भी स्पर्धा होगी तो धर्म कहां रहेगा? सब को कर्णधार होना है! युवाजगत के कर्णधार की बात कल हुई। मेरे केन्द्र में तो युवापीढ़ी ही है। मैं इसे ज्ञानयज्ञ नहीं कहता, यह प्रेमयज्ञ है। ज्ञान की मेरी हैसियत नहीं है। ज्ञान में दीक्षा है, प्रेम में दिशा है! हम तो भाव के मानव है। जिसे दशा बदलनी हो वे मेरे पास आए। ज्ञान में दीक्षा हो; दीक्षा में परंपरा है। भाव में दशा है और दशा में परंपरा की ऐसी की तैसी होती है। इसका मतलब उच्छृंलता नहीं। मीरां नाची पर मर्यादा नहीं तोड़ी। भावदशा स्वयं शिस्त का निर्माण करे तो युवाजगत का कर्णधार कौन? इसकी चर्चा हुई। युवाजगत का कर्णधार हनुमानजी बन सकते हैं; चिर युवा। अब ज्ञान और विज्ञानजगत का कर्णधार कौन? यह संवाद आज हम करेंगे। कल अध्यात्मजगत का कर्णधार-सद्गुरु कैसा होना चाहिए यह देखेंगे।

तो बाप, ज्ञान और विज्ञानजगत का कर्णधार, प्राचीन-अर्वाचीन सभी वैज्ञानिक हम उन्हें कर्णधार माने। पर मुझे तो 'रामायण' के आधार पर कर्णधार ढूंढना है। ज्ञान-विज्ञान एक ही है, फर्क इतना है कि ज्ञान प्राय: सूत्र में होता है, विज्ञान उसे प्रयोग से सिद्ध करता है। H2O यह पानी का ज्ञान सूत्र है। आप इतनी मात्रा में दो वायु का मिश्रण करे तो पानी हो जाय। विद्यार्थी इतना लिखे तो पास करना ही पड़े। यह ज्ञान है। पर विज्ञान माने प्रयोगशाला में जाकर कसनली में दो वायु को प्रमाणित मात्रा में मिश्रित करें तो अपने सामने पानी बन जाय।

'मानस' के आधार पर कहूं तो ज्ञान-विज्ञान के कर्णधार आदिकवि वाल्मीकि है। तुलसीदासजी ने वाल्मीकि को विज्ञान विशारद कहा है। जैसे संगीत विशारद होता है। हनुमानजी भी विज्ञान विशारद है।

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ।।

तुलसीजी कहते हैं, ये विशुद्ध विज्ञानी है। एक कवीश्वर वाल्मीकि और दूसरे कपीश्वर हनुमानजी। विश्व को ऐसे वैज्ञानिक की जरूरत है जो संवेदनायुक्त वैज्ञानिक हो, जो विशुद्ध है। मैं पुन: विश्ववंद्य गांधीबापू को याद करूं कि आपने ऐसा कहा था कि 'संवेदनाशून्य विज्ञान सामाजिक पाप है।' मैं जैन समाज को पूछूं कि आप महावीर स्वामी को वैज्ञानिक नहीं मानते? जो अणुव्रती है। आप अणुव्रत का अर्थ कया करते हैं? सीमित अर्थ मत कीजिए। भगवान बुद्ध वैज्ञानिक थे। उन्होंने प्रयोग करके जगत को प्रमाण दिए हैं। निझामुद्दीन ओलिया, एक दरवेश, एक फकीर, एक पीर, एक वैज्ञानिक है। ज्ञानी वैज्ञानिक होना ही चाहिए। ओशो रजनीशजी ने कहा कि 'भगवान पतंजलि यह अध्यात्मजगत के वैज्ञानिक है।' यह सूत्र मुझे पसंद आया।

मुझे आपके साथ यहां भगवान वाल्मीकि के दर्शन करने हैं। क्योंकि कोई भी 'रामायण' लो उसके मूल में तो वाल्मीकि ही पड़े हैं। 'रामायण' की कोई हद नहीं। समाज यह न भूले। सभी के मूल में वाल्मीकि है। तुलसी भी मानो मूल में वाल्मीकि है। नामाजी ने तो भक्तमाल में ऐसा कह दिया कि 'कलियुग के कुटिल जीवों के लिए वाल्मीकि ही कालांतर में तुलसी बने हैं।' बन सकते हैं। हिन्दु सभ्यता पुनर्जन्म का स्वीकार करती है। अपना सनातन धर्म भी इस पर महोर लगाता है। मैं तो इस मामले में बहुत दृढ हूं, साहब! यहां पुनर्जन्म है, है और है। जो कहते हैं, एक बार में बाजी पूरी हो गई। मेरी आत्मा ना कहती है। शायद मेरा व्यक्तिगत विचार है। यहां दूसरी बार आ सकते हैं। आप कथा में आये हैं, इससे पहले भी कभी आये होंगे। इसलिए आये हो। यह नदी-नाव संजोग नहीं है। यह अकस्मात नहीं है। यह अस्तित्व की व्यवस्था है।

मैंने समाधि में धूप होते देखा है। मैं चमत्कार में माननेवाला बाबा नहीं हूं। मैं चमत्कारों को तोड़नेवाला हूं। पर यहां कुछेक होता है। यह जगत रहस्यपूर्ण है। यहां कोई चेतना काम कर रही है। बाकी इतने मण्डप कैसे बने? राजसूय यज्ञ और अश्वमेघ यज्ञ से भी ये बड़े यज्ञ है। साहब, आप इनके वर्णन पढ़िए! यह कैसे हो? किस तरह से हो? मीरां को आप क्या समझते हैं? प्रेमजगत तो यह कहता है कि मीरां स्वयं ऐसा बोली है कि 'बरसाना मेरो गांव।' मूल गांव तो मेरा बरसाना है। मीरां आ सकती है। मेरे पास भगुभाई रोहडिया की कविता आई; उनकी पुत्री ने भेजी।

मीरांए मंजीरां बांध्यां राणानी तलवारे;
वीरधरानी विरासतने रोपी रामने द्वारे.
करडी धरती, करडा चहेरा, करडी मूछो फरके,
करडी आंखो, करडी वातो, वरवां मोढां मरके.

यह भक्ति है। खड़ग की धार पर मंजीरा बांधकर आए उसका नाम मीरां है। यह कैसी महिला होगी कि राजस्थानी खड़ग पर मंजीरा बांधा! रमेश पारेख ने सच कहा -

गढने होंकारो तो कांगराय देशे,
पण गढमां होंकारो कोण देशे?
राणाजी, हवे तारो मेवाड मीरां छोडशे.

मीरां ने कहा, 'बरसाना मेरो गांव; मैं व्रजांगना थी।' यहां दूसरी बार आने की व्यवस्था है। जिसे उगना हो, उग सकता है। कितने ही महापुरुषों की आंख में आंसू देखे तब लगे चैतन्य उतर आया है। चुपचाप अकेला बैठा हो किसी को पता न चले, अचानक कोई दरार में से झांक जाय, पता चले बुद्ध बैठा है निर्लेप, भोला, निर्दोष हास्य प्रकट होता हो तब लगे कि ठाकुर आया! ध्यानस्थ चुपचाप बैठा हो तो लगे कि रमण वापिस आए! रक्त को दूध में बदल डाले तो लगे महावीर लौट आए!

नाभाजी कहते हैं, वाल्मीकि ही तुलसी बने। अब वाल्मीकि वैज्ञानिक है यह कैसे सिद्ध किया जाय? वह शुद्ध वैज्ञानिक है, संवेदनशील वैज्ञानिक है। लक्ष्मणजी सरिता पट पर जानकीजी को उतार कर गए।

वाल्मीकि सीताजी को देखते हैं तो आंसू आते हैं। वाल्मीकिजी के मूल में संवेदना है। रत्नाकर ही वाल्मीकि बना। ध्यान दीजिए, वाल्मीकि का इतिहास अप्राप्य है। जहां तक मेरी दृष्टि संस्कृत ग्रंथों में जाती है; गुरुकृपा से मैंने जहां तक देखा है या संतों से सुना है, वाल्मीकि के माँ-बाप का नाम नहीं मिलता है। अपने यहां ऐसे वैज्ञानिक हुए हैं जो अपने बारे में लिखते ही नहीं थे। अपने बारे में लिखे तो आत्मश्लाधा आ ही जाती है। या तो आत्मद्वेष प्रकट होता है।

मेरी एक बात याद रखना। किसी भी आदमी का स्वीकार करना हो तो उसकी कमजोरियों के साथ करना। तो ही आप सच्चे प्रेमी है। आदमी में कमज़ोरियां होती ही है। दीक्षित दनकौरी कहते हैं -

या तो कुबूल कर मेरी कमजोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तनहाइयों के साथ।

युवा मित्रो, आपको सिर्फ सीखने जैसा नहीं, जीवन में विचारने जैसा नहीं पर भीतर कहे तो जीवन में उतारने जैसा शे'र है -

लाज़िम नहि है हर काई यहां कामयाब ही।
जीना भी सीख लीजिए नाकामियों के साथ।

जरूरी नहीं कि सबको सफलता मिले। निष्फलता के साथ भी जीना सीख लीजिए। साहब, गांधीजी ने कहा, 'इतना सबकुछ करने के बावजूद देश को अखंड रखने में मैं कहीं कम पड़ा हूं। मेरे दिल के टूकड़े कर डालिए, पर मेरे अखंड भारत के टूकड़े मत कीजिए।' दिल्ली के किल्ले पर राष्ट्रध्वज फहराये तब विश्ववंद्य बापू नोआखली में कत्लेआम हुई तो वहां झोंपडों में जिनकी कत्ल हुई थी उनके आंसू पोंछतें थे! जगत का बाप यह हो सकता है। बाप होना आसान नहीं। घर के लड़के भी बाप नहीं, पप्पा कहते हैं! बाप, बाप कहलाने लायक नहीं रहा! हमारे मेघाणी कहते हैं -

छेल्लो कटोरो झेरनो आ पी जजो, बापु!
सागर पीनारा! अंजलि नव ढोळजो, बापु!
घनघोर वननी वाटने अजवाळतो, बापु!
विकराळ केसरियाळने पंपाळतो, बापु!

वाल्मीकि को लेकर काफी किवदंतियां हैं। वह किसी तुच्छ समाज से आए थे कि ब्राह्मण पुत्र थे? इस वैज्ञानिक का जन्म संवेदना में से हुआ है। वाल्मीकि विशुद्ध वैज्ञानिक है। विज्ञानजगत के कर्णधार हो सकते हें। मैं तो मानता हूं। कहते हैं वाल्मीकि एक अच्छे कुल के बालक थे। संगदोष से सावध रहियेगा। किया-कराया मिट्टी में न मिल जाय! 'गीता' का कहना है -

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ता सुखदुःखसंज्ञै-र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत्।।

'मानस' कहता है -

को न कुसंगति पाइ नसाई।।
रहइ न नीच मतें चतुराई।।

●

बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता।।

नारद ने कहा कि 'यह सब क्या करता है? किसके लिए करता है?' तो कहे, 'मेरे परिवार के पोषण के लिए।' नारद ने पूछा, 'तेरा परिवार तेरे पाप में हिस्सेदार होगा?' वाल्मीकि ने कहा, 'हां, सबके लिए करता हूं तो हिस्सेदार क्यों नहीं बनेंगे?' नारद ने कहा, 'एक बार पूछ तो लो।' रत्नाकर पूछने जाते हैं और परिवार ने कहा, जो कर्म करे वही भोगे। हम भागीदार नहीं बनेंगे। फिर नारदजी की संगति से परिवर्तन आया है। मंत्रदीक्षा मिली। पर बोल नहीं पाए और 'मरा ... मरा' बोलने लगे! अब उनकी वैज्ञानिकता यहीं से शुरू होती है। मेरी कलकत्ता की कथा का वाक्य है, 'परम अव्यवस्था का नाम परमात्मा है।' और यहां 'मानस' में -

उलटा नाम जपत जग जाना।
बालमीक भये ब्रह्म समाना।।

नारदजी का दिया मन्त्र उलटा जपता है। रामनाम मन्त्र अनपढ़ भी बोल सके। पर ये वैज्ञानिक थे। अति सूक्ष्म महामंत्र 'राम' इस वैज्ञानिक के हाथ में आया तो उलटपुलट हो गया!

जान आदि कबि नाम प्रतापू।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।

उलटा, किसी के कबजे में नहीं। फिर भी वह उर्जा है; महाशक्ति है। 'राम' महामंत्र आप 'राम राम' बोले या 'मरा मरा' बोले। यह वैज्ञानिक तत्त्व सिद्ध होता है कि वह तत्त्व है। 'नेति' कह कर खड़े हो जाय। फिर तो वे रामनाम में इतने लीन हो गए कि बमीढ़ा हो गया। शिष्टभाषा में बमीढ़ा को वाल्मीकि कहते हैं; वर्षो के बाद रामनाम की तल्लीनता सें से बाहर आए। बमीढ़ा टूट गया। रत्नाकर वाल्मीकि होकर बाहर निकले। तमसा के तट पर इस वैज्ञानिक की प्रयोगशाला है। वहां बैठे-बैठे लभ्य साधनों से कर्णधार बनकर यह महाऋषि दुनिया का मार्गदर्शन करता है।

एक दिन हाथ में कमंडल है: तमसा तट पर यह ऋषि जा रहा है। परम विशुद्ध वैज्ञानिक वाल्मीकिजी

> मैं अपनी बात कहूं; इसीलिए कि आप भी कुछ ऐसा करे। महुवा में १००८ रामायण थी। हमारे पूज्य नर्मदाशंकर शुक्ला दादा कर्मकांडी यज्ञ के आचार्य थे। यह सन् १९८१ की बात है। कथा का पांचवा-छठ्ठा दिन था। मैंने कहा, 'बापजी, आपका दिल न दुःखे तो मुझे एक उमंग है। समाज ने जिन्हें आखिरी पंक्ति में रखा है, उन्हें कल कथा में आरती करने के लिए बुलाना चाहता हूं। तो आपके दिल को ठेस न पहुंचे अतः आप कल कथा में मत आईयेगा।' पर जब घटना घटित होनेवाली हो तब सब अनुकूल होता जाता है। यह बुज़ुर्ग मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोले, 'बेटा, मुझे ऐसा लगता है, तू जो करता होगा वह ठीक ही होगा। मैं विधि कराऊंगा।' यह मुझे और आपको करना पड़ेगा, साहब!

आते हैं और उसी समय प्रणय-तल्लीन, यद्यपि श्लोक तो है 'काममोहित...' यह इसीलिए लिखा गया है, जीवन का सत्य हमें स्वीकार्य होना ही चाहिए। आदमी जितना विषय की प्रक्रिया में तल्लीन होता है इतना तल्लीन और किसी वस्तु में नहीं होता। भले थोड़े समय के लिए काम की तल्लीनता हो पर वह प्रेम की तल्लीनता आ जाय साहब तो वह ब्रह्म की तल्लीनता से भी ऊंचा दर्जा हो जाय। क्रोंच पक्षी-सारस पक्षी एक-दूसरे की चोंच में चोंच डाले तल्लीन हो गए हैं। सहसा सनसन करता तीर आया और एक बींध गया! प्राण निकल गए। एक ही पक्षी रह गया। आक्रंद करने लगा। इस वैज्ञानिक की संवेदना यहीं से शुरू होती है -

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।

तुझे जगत में किसी भी दिन इज्जत नहीं मिलेगी! बाप, शाप निकल गया! एक वस्तु समझ लीजिए। कोई भी हिंसा अच्छी नहीं है। किसी के प्रेम की हिंसा मत कीजिए। कोई प्रेम से भजन करना हो तो कीजिए। महात्मा गांधी का अद्भुत संदेश! 'मानस' में ऐसा लिखा गया कि -

परम धरम श्रुति बिदित अहिंसा।
पर निंदा सम अघ न गरीसा।।

जगत में श्रेष्ठतम धर्म अहिंसा है। कोई दो व्यक्ति प्रेम से बातें करती हो, मर्यादा टूटती न हो, शील अखंड हो फिर वक्र दृष्टिवाले काफी होते हैं! तो, किसी की प्रेमहिंसा मत करना। कोई प्रेम से भजन करता हो तो निंदा नहीं करनी है। निंदा यह हिंसा है। तो हे निषाद, तू जगत में कहीं भी प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं करेगा। तूने प्रेमरत पक्षी युगल को इस तरह खंडित किया! वाल्मीकिजी के शोक के इस उद्गार को विद्वान कहते हैं, शोक श्लोक में बदल गया और विश्व को प्रथम कविता मिली। वह आदिकवि का आदि श्लोक माना गया। श्लोक संवेदना में से फूटा है। फिर तो वाल्मीकि बहुत ही व्यथित रहे। ब्रह्माजी आते हैं। जब हम व्यथित होते हैं तब किसी का हाथ कंधे पर आए तो बड़ा अच्छा लगता है। साहब, फिर ब्रह्माजी ने पूछा और जाना कि वाल्मीकि की उदासी का कारण क्या है? प्रेरित किया कि एक श्लोक तो निकल

गया कि अब नारदजी से मिलिए वे आपको कोई ऐसे तत्त्व के गुण और लक्षण बताए फिर आप 'रामायण' का सर्जन कीजिए। फिर नारदजी ने अनेक लक्षणों से युक्त पुरुष का वर्णन किया फिर वाल्मीकि ने वर्णन किया।

वाल्मीकिजी ने 'रामायण' की रचना की। पुन: स्वामी सच्चिदानंदजी को याद करूं। वे कहते हैं कि इस वाल्मीकि 'रामायण' की जिज्ञासा 'अथातो मानव जिज्ञासा' है। तुलसी की तीनों जिज्ञासा है। 'किजै सीसु लीला'; मानव जिज्ञासा। तुलसीजी बारबार ब्रह्मपद का स्थापन करते हैं। राम की मानवलीला में जहां-जहां क्रोध या मानवपन आया वहां ब्रह्मपद स्थापित है। 'जासु कृपा छुटई मद मोहा।' ब्रह्म जिज्ञासा। यह 'मानस' है, सो इसे मानव के हृदय को जानने की जिज्ञासा है। तीन जिज्ञासाओं का त्रिवेणी तीर्थ है 'रामचरित मानस'। अत: मेरी दृष्टि में यह धर्मजगत का कर्णधार है। हमारे कोई शास्त्र, कोई भी धर्मग्रन्थ। वनयात्रा में निकले रामजी आश्रम में गए तब उसकी वैज्ञानिकता पुन: प्रकट हुई। इतने सारे ऋषि मिले। भगवान राम ने रहने का ठिकाना वाल्मीकिजी को क्यों पूछा? राम-लक्ष्मण-जानकी अद्‌भुत ऊर्जा है। ऊर्जा को कहां रखे इसकी भूमिका, यह अणुमथक राजस्थान में स्थापित करे या दूसरों में यह भूमिका वैज्ञानिक तय करता है।

राम परम ऊर्जा है। जानकी परम अद्‌भुत ऊर्जा है। लक्ष्मणजी परम जाग्रत ऊर्जा है। उनके रहने की ऊर्जा वाल्मीकि ही बता सके। उन्होंने भक्तिपरक बात कही फिर भी यही जगह ऐसा नहीं कहा। परंतु जो स्थान बताएं वहां पुन: उनकी वैज्ञानिकता सिद्ध होती है। 'मानस' में दो वैज्ञानिक रामजी को रहने के स्थान बताते हैं। एक कुंभजऋषि अगस्त्य -

गावत बेद पुरान अष्टदस।
छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनिजन धन संतनको सरबस।
सार अंस संमत सबही की।।

गावत संतत संभु भवानी।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।

कुंभज ऋषि वैज्ञानिक है। वे रामजी को दंडकारण्य जाने को कहते हैं, इस शक्ति को वहां रखिए। इस ऊर्जा का केन्द्र पंचवटी में रखिए। क्योंकि चारों ओर इस ऊर्जा का उपयोग करने जैसा स्थान है। यह भी एक वैज्ञानिक सत्य है कि घडे में से जन्म हुआ। आज का विज्ञान कसनली में से बच्चा पैदा करे यह घटज का नवसंस्करण है। यह कुंभजऋषि कुंभ में से जन्मे हैं। अपने पास ऐसी विद्या थी, ऐसा सिद्ध होता है। वाल्मीकिजी ने रामजी को निवास के लिए चौदह स्थान बताए। यह ऊर्जा कहां रहेगी? यह भगवान की कथा है और वह महान ऊर्जा है। इसे कहां रखे? यह गुरुकृपा हो तो ही हजम हो सके। नहीं तो थोड़ी-सी जानकारी मिलने पर हमारे कदम यों...! कोई भी तत्त्व बगैर गुरु के हजम नहीं होता। कोई भी कला-विद्या बगैर गुरु के हजम नहीं होती। गुरु पाचकतत्त्व है। पचे नहीं तो वह तंदुरस्त न कहलाए। पेट फूल जाए वह तंदुरस्त नहीं है!

वाल्मीकि की वैज्ञानिकता 'मानस' के प्रसंगों द्वारा जानकारी में लेते हैं। हनुमानजी भी वैज्ञानिक है। इसरो में 'सुन्दरकांड' का पठन हो रहा था। इसरो में वैज्ञानिको के यहां 'सुन्दरकांड' का पाठ! मुझे अच्छा लगा। मुझे एक बार निमंत्रण मिला। मैं वहां गया। फिर मुझे कहा गया। 'रामायण' के विज्ञान पर कुछ कहिए। मैंने कहा, राम की सेना में बंदर थे और दसों दिशा में जानकी-शोध का अभियान शुरू किया। सभी दिशा में सब चल पड़े। उसमें भी दक्षिण दिशा में जो टुकडी भेजी जिनके नामक अंगद है और मार्गदर्शक जामवंत है। सीता माने भक्ति और भागवतकार ने भक्ति की उत्पत्ति दक्षिण दिशा में बतलाई। वहां मिल जानी चाहिए। ऐसे तात्त्विक अर्थ में दक्षिण दिशा का निर्देश किया। एक चौपाई आप जानते हैं -

पाछे पवनतनय सिर नावा।
जानि काज प्रभु निकट बैठावा।।

श्री हनुमानजी ने सबसे आखिर में प्रभु के चरणस्पर्श किए। ये जितने-जितने चरणस्पर्श कर रहे थे

उन सबको प्रभु देख रहे थे। बराबर परीक्षण कर रहे थे कि यह समूह तो निकला है पर इनमें से सीताजी की खोज कौन कर लायेगा? सबसे अंत में हनुमानजी ने चरणस्पर्श किए। कभी-कभी आखिर का आदमी उपयोगी सिद्ध होता है। इसलिए कभी आखिर में रहना पड़े तो चिन्ता मत कीजिए। मालिक हमें यश दिला दे। आज दिन तक हमने अमुक लोगों को आखिर में रखे इसका हिन्दुसमाज दण्ड भुगत रहा है! 'आप मंदिर में जा ही नहीं सकते! पोथी की पूजा कर ही नहीं सकते! आपको श्लोक बोलने का अधिकार नहीं है! हम जहां से निकले वहां से निकल नहीं सकते!' ये भेद की दीवारें टूटनी चाहिए।

मैं अपनी बात कहूं ताकि आप भी कुछ ऐसा कर सके। महुवा में १००८ 'रामायण' थी। हमारे पूज्य नर्मदाशंकर शुक्ल दादा कर्मकांडी और यज्ञ के आचार्य। साहब! पूरे पंथक से उन्हें न्योता जाए। उनका स्वरूप भी हमें अच्छा लगे। लगे कि पुन: ऋषि ने अवतार लिया है! यह १९८१ की बात है। कथा का पांचवा-छठ्ठा दिन था। मैंने कहा, 'बापजी, आपका दिल न दु:खे तो मेरे हृदय में एक उमंग आई है। कल कथा में समाज ने जिनको अंतिम पंक्ति में स्थान दिया है उन्हें आरती के लिए बुलाना चाहता हूं। तो आपके दिल में दु:ख न हो इसलिए केवल कल आप कथा में न आए।' जब ऐसी घटना घटनेवाली हो तब सब अनुकूलता हो जाती है। इस आदमी ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'बेटा, तू जो करता होगा वह ठीक ही होगा। मैं विधि कराऊंगा।' साहब, यह हमें करना ही पड़ेगा!

मेरी बात यह है कि हनुमानजी वैज्ञानिक है, ऐसा तुलसी ने कहा है। इतने सारे बंदरों में से राम ने हनुमानजी की पसंदगी क्यों की? वहां मुझे पुन: वाल्मीकिजी का विज्ञान दिखता है। सीता महान ऊर्जा है, शक्ति है, अंबा है। उद्‌भव-स्थिति-संहारिणी है। ऐसी ऊर्जा संहार भी कर सकती है। उसका सद्‌उपयोग हो तो सर्जन करे; सर्जित, पोषित करे। रावण जैसा आदमी ऊर्जा का अपहरण करके चला गया है। जब ऊर्जा की चोरी हो जाय तब उसकी शोध वैज्ञानिक के अलावा कोई नहीं कर सकता। इसीलिए हनुमानजी पसंद हुए। ऊर्जा कहां है यह हम नहीं खोज सकते।

हम यहां वाल्मीकि को केन्द्र में रखकर बातें कर रहे हैं। तब वही सीता; यद्यपि तुलसीजी ने यह प्रसंग लिया नहीं है। इस प्रसंग के मूल में विवाद है। तुलसी को संवाद स्थापित करना था। तुलसी वाल्मीकि का अवतार है। उन्होंने संमार्जन किया। वक्ता वही है समय-समय पर संशोधन करे और ज्यादा से ज्यादा परिष्कृत करे। अब सीताजी सगर्भा है। एक आदमी ऐसा-वैसा बोला और वन में भेजने की बात आई। उस समय रामराज्य स्थापित हो चुका था। जो दूर-दूर मुनि थे वे भी नजदीक आकर आश्रम बनाकर रहने लगे थे। भय नष्ट हो गया था। इतने नजदीक आश्रम आ गए थे तो जानकीजी को वाल्मीकि के आश्रम में ही छोड़ने का निर्णय क्यों हुआ होगा? वैज्ञानिक ही ऊर्जा को पोषण दे सकता है। नहीं तो क्या पता कब विस्फोट हो जाय! सीता के गर्भ में बालक रूप में विस्फोट हुआ ये मस्तक विच्छेद करनेवाले नहीं थे, परंतु वीणा बजाकर सुननेवालों के सिर डुलानेवाले निकले। इतना वैज्ञानिक परिवर्तन आया है। नहीं तो योद्धा कैसे? परमात्मा का प्रतिबिंब ऊतरा था, साहब!

यह दो शक्ति, लव और कुश समाज में विघटन न कर बैठे अत: वाल्मीकि वैज्ञानिक ने सूर दिये, स्वर दिए। हथियारों के बदले वाद्य दिये। एक परमऊर्जा के विस्फोट के हाथ में वाद्य दिया। यह वैज्ञानिक की संवेदनशीलता का प्रमाण है। उन्होंने ऊर्जा का कला में रूपांतर किया। ऊर्जा को विद्या में बदली। मैं भी अपने हनुमान को प्रार्थना करूं कि इक्कीसवीं सदी में हथियार जाए और वाद्य आए। किसी के हाथ में वीणा तो किसी के हाथ में सितार हो। यह जगत सूरीला बने। जगत शब्दमय हो।

वाल्मीकि ही ऊर्जा को रहने के लिए स्थान बता सकते हैं। वाल्मीकि ही ऊर्जा का संरक्षण कर सके। वाल्मीकि ही सूक्ष्मतम तत्त्व का उलट-पुलट भरा खेल समझ सके। 'राम राम' की जगह 'मरा मरा' बोल सके। ये सभी वैज्ञानिक सूत्र वाल्मीकिजी ने प्रस्थापित किए हैं। इसीसे वे शुद्ध वैज्ञानिक हैं। इस युग में विनोबाजी ने विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय करने की बात कही। धर्म और विज्ञान जुड़े; इसीसे छठ्ठे क्षेत्र के कई कर्णधार हो सकते हैं। पर ज्ञान-विज्ञान क्षेत्र का कर्णधार वाल्मीकि ही है।

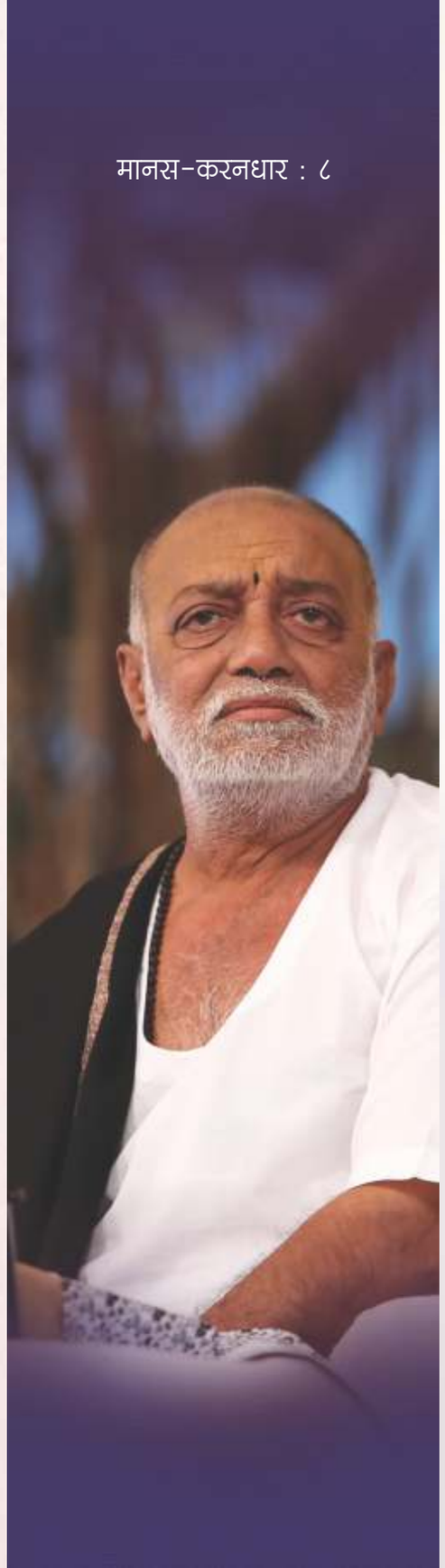

गुरु हमें अंधेरे में नहीं, उजाले में रखते हैं

'मानस-करनधार', जो इस नौ दिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विचार है; जिसका हम साथ मिलकर सात्त्विक-तात्त्विक संवाद कर रहे हैं। सीमित समय में सीमित सूत्रों में सात क्षेत्रों के कर्णधार कैसे होने चाहिए इसकी खोज के प्रयत्न हम कर रहे हैं। छ: क्षेत्रों के कर्णधार के बारे में हमने बातें की। आज और कल का दिन, दो दिन के लिए सातवां कर्णधार; जिसे तुलसी सद्‌गुरु कहते हैं, जो समग्र अध्यात्मजगत का, उसकी छाया में रहे हुए धर्मजगत भी, राष्ट्र भी, समाज भी, युवावर्ग भी, हमारा छोटा-सा परिवार इन सभी का कर्णधार। ये समझ में न आए तो यह आखिरी कर्णधार सब पूर्ण करे; ओल इन वन। हम जीव है; हम और आप सामान्य हैं। अत: प्राप्त नहीं कर सकते, परख नहीं पाते। सो हमें अलग-अलग कर्णधार खोजने पड़ते हैं। परंतु मेरी दृष्टि से कोई बुद्धपुरुष प्राप्त हो तो सभी कर्णधारों की पूर्ति कर देता है। इसीलिए गुरुरूपी कर्णधार का आखिर में वर्णन करना रखा है। वह सर्वस्व है।

नृदेह माध्यमं सुलभं सुदुर्लभं
प्लवं सुकल्पं गुरु कर्णधारं।

परमहंसों के परमहंस शुकदेवजी का 'भागवतजी' में यह वाक्य है, गुरु कर्णधार है। उन्होंने भाष्य नहीं किया है। परंतु गुरुओं के प्रकार बताए। अपने आश्रित परीक्षित को बताए। इन सात दिनों में उन्होंने समझ लिया कि शायद यह भी मुझे समझ चुका होगा अत: मुझे गुरु कर्णधार की ज्यादा चर्चा करने की जरूरत नहीं। हमें तो परखना रहा। बाप, चारों ओर कलि का प्रभाव है। कितने ही घटक हमारे जीवन में स्पीड ब्रेकर बनकर बैठे हैं! कभी परिवार, कभी समाज, कभी अपनी कुटिलता, कभी अपने खुद के कषाय! कितकितने सायों से अपनी डगर धिरी हुई है! यह कलि प्रभाव है, बाप! जो मुझे और आपको घेर कर बैठा है। तुलसीजी ने सुंदर उद्‌घाटन किया -

नित जुग धर्म होहिं सब केरे।
हृदयँ राम माया के प्रेरे।।

मेरे गोस्वामीजी ने अद्‌भुत काम किया! हमें ऐसा समझाया कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग मुझ में और आप में राम द्वारा सतत घूम रहा है। हमारा उस पर ध्यान नहीं है। एक पल का उजियारा, फिर अंधेरा है। इसमें हम मोती पिरो लें।

अपने दैनिक जीवन में कभी सतयुग, कभी द्वापर, कभी त्रेता तो कभी कलियुग रहता है। तुलसी ने इसका एक स्पष्ट चित्र दिया है। यदि हमें इस बात का अन्दाजा लग जाय तो अपनी स्थिति समझ में आ जाय। इस भयानक कलिकाल में भी जीवन में सतयुग का निर्माण कर सके ऐसी सामग्री अपने पास है।

सुद्ध सत्व समता बिग्याना।
कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना।।

बाप, चार ही वस्तु, नकद! वन, टु, थ्री, फोर। मेरे और आपके जीवन में जिस दिन, जिस प्रहर, जिस घडी, जिस पल शुद्ध सत्त्व गुण हो; शुद्ध सत्त्वगुण क्या? बहुत ही सरल अर्थ है; आंख में जब कभी भी असत्य दर्शन न हो, चित्त भटकता न हो। मन विचारों की फेक्टरी है; टेढ़े-मेढ़े विचार करता न हो; मुझे और आपको पता न चले ऐसे जीभ हरिनाम लेती हो तो समझना मुझ में शुद्ध सत्त्व गुण ऊतरा है। इसमें पद्मासन लगाकर बैठ जाना, ऐसा नहीं है! अपने आपको पहचानिए।

कल चर्चा कर रहे थे। ज्ञान सूत्र प्रदान करे, विज्ञान रिज़ल्ट प्रदान करे। प्रयोग कर सिद्ध करे। जब गुरुकृपा से मिला ज्ञान, जीवन में 'इति सिद्धम्' होने लगे तब समझना कि हम सतजुग में है। अपनी समता बराबर अखंड हो, समझने का सतजुग में है। जब मन प्रसन्न हो; हम गौर नहीं करते पर कभी अपना मन बिना किसी वजह प्रसन्न रहता है। कई बार कितने कारण एकत्र करे तो भी मन! मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूं, आज आठवां दिन चल रहा है। क्या आपका मन प्रसन्न है?

अंधेरा आया था भीख मांगने रोशनी की।
मैं अपना घर ना जलाता तो क्या करता?
-जलालपुरी

मुझे ऐसा लगता है कि सप्ताहभर से आप प्रसन्न है। यह मेरा वहम या विश्वास हो सकता है। एक चिठ्ठी है, 'बापू, जल्सा हो गया है! आप कहे तो पूरा बड़ौदा जिल्ला गोद ले ले ऐसे पड़े हैं! यह स्वच्छता अभियान, जो राष्ट्रीय स्तर पर चलता है उसमें और अधिक काम हो सकता है। मेरे ५१००० रूपये लिख लीजिए।' मैं यहां कहां चन्दा इकठ्ठा करने आया हूं? मैं तो दे सकूं उतना जीवन का योगदान दे रहा हूं। मेरे अस्तित्व ने मेरे हिस्से की ड्यूटी सौंपी है। बाप, मेरी सेवा मान लेना! विचार अच्छा है। जिसने यह लिखा, राजूभाई से मिले। स्वच्छता अभियान में योगदान दे सकते हैं। राजूभाई से भी मिलने की जरूरत नहीं है। इतने पैसों से आपके आसपास एक-दो शौचालय कर डालिए न यार! सब अपने-अपने ढंग से करे और मुझे कहे तो मुझे प्रसन्नता होगी कि आपने इतना किया। मैं व्यवस्था का आदमी नहीं हूं। पर इतना मैं निश्चितरूप से कहूं कि मेरी पसंददीदा जगहों पर तलगाजरडा की ओर से मैं अपने ढंग से जरूरत लगेगी यहां ग्यारह शौचालय करवा डालूंगा। मेरे साथ ये लड़के हैं उन्हें योग्य लगे वहां करवा देगा। समय मर्यादा और कम खर्च में पूरा करेंगे। हम अपनी हैसियत के अनुसार करेंगे। राजू अपनी हैसियत से करे और आप अपनी हैसियत के मुताबिक कीजिए।

हमारा मन प्रसन्न रहता है इसीलिए हम सतयुग में है। आठ दिनों से हम सतयुग में है। किसीने शिकायत नहीं की है। जब यहां हम शुद्धतत्त्व में होते हैं, समान होते हैं और श्रवण प्राप्त सूत्रों को प्रयोग करने के लिए दिल से कुछ करने के लिए तैयार है और मन प्रसन्न हो तब मेरा तुलसी कहता है, प्रत्येक व्यक्ति को समझना चाहिए। हम सतयुग में जी रहे हैं। अब हम त्रेता में कब होते हैं?

सत्त्व बहुत रज रति कर्मा।

अपनी मानसिकता चेइन्ज हो, हममें सत्त्वगुण काफी हो, अच्छे विचार चलते हैं, दृष्टि मलिन न हो, प्रलोभन या बिना भय के मुंह से हरिनाम निकलता हो तो समझना सत्त्वगुण में है। पर उसमें थोड़ा रजस् गुण मिश्रित हो, नए-नए कर्म करने की रुचि जगे; भले सद्प्रवृत्ति हो यह रजस् गुण की विचारधारा है। सत्त्वगुण कम हो जाय, रजस्गुण बढ़ जाय, यह कीजिए, वह कीजिए! और उसमें थोड़ा तमस् गुण मिश्रित हो जाय।

तामस बहुत रजो गुण थोरा।
कलि प्रभाव बिरोध चहु ओरा।।

कलियुग में हम कहां जी रहे हैं यह तुलसी स्पष्ट रेखांकित करते हैं कि अपने मन में तामसता होती ही है। युवा भाईयों और बहनों, जरा सोचिए। आपको किसी के दोष पर रोष आए यह क्षमायोग्य है। परंतु रोष के कारण सभी में दोष नज़र आए यह अक्षम्य है। कलियुग में कौन जीता है? सबके साथ जब विरोध ही हो! क्योंकि रोष में से दोष जनमते हैं। जब रोष ऊतर जाय तब उसमें गुण भी दिखाई पड़े यह कलि प्रभाव है।

गुरु कर्णधार होता है पर हम परख नहीं सकते। मैं विश्वास के साथ कहता हूं, इस जगत में बुद्धपुरुष न हो तो यह जगत खतम हो गया होता, साहब! यह आकाश किसके सहारे टिका है? इस अस्तित्व को कौन कन्ट्रोल करता होगा? कोई तत्त्व है। हमें पहचानना है। जब शुकदेवजी को ख्याल आया कि परीक्षित को पता चल गया है। इसलिए कर्णधार की लंबी व्याख्या में न गए। हमें समझना होगा। अब हम इसकी खोज करें। 'रामचरित मानस' में तीन बार 'करनधार' शब्द का उपयोग हुआ है -

करनधार सदगुर दृढ़ नावा।
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।

●

करनधार तुम्ह अवध जहाजू।
चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।

●

सोह न राम प्रेम बिनु ग्यानु।
करनधार बिनु जिमि जलजानु।।

राम के प्रेम के बिना ज्ञान शोभा नहीं देता, ज्यों बिना कर्णधार के जहाज शोभा नहीं देता। भूल हो सकती है। शास्त्र में डींग नहीं हांकनी चाहिए! एक बार मुझ से भूल हुई थी। भगवान को चित्रकूट पर ले जाना ही भूल

गया था! 'करनधार' शब्द तीन बार त्यों 'सद्गुरु' शब्द चार बार आया 'रामचरित मानस' में। 'बालकांड' में -

सदगुरु ग्यान बिराग जोग के।

बिबुध बैद भव भीम रोग के।।

यहां हमें सद्गुरु की व्याख्या प्राप्त होती है कि जो सद्गुरु मुझे और आपको ज्ञान और वैराग्य दान करे यह 'बालकांड' का महत्त्वपूर्ण लक्षण है। गुरु हमें भ्रमित न करे, उजाले में रखे। ज्ञान माने प्रकाश। शास्त्रों ने कहा है कि ज्ञान से मुक्ति मिलती है। 'मानस' में भी यही लिखा है -

ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।

जो हमें न बांधे वह बुद्धपुरुष है। ऐसे किसी महानपुरुष को परखे। आज शैक्षणिक संस्थाएं भी अपने पंथ में विद्यार्थीयों को बांधती रही है! मेरा कहना है आप फीस ज्यादा लीजिए पर आपके यहां आते विद्यार्थीयों को फ्री रखे। शिक्षक बनने के लिए मैं एक वर्ष पढ़ा हूं। ट्रेनिंग ली है। मैं क्वालिफाइड हूं! मेरे पास पी.टी.सी. की डिग्री है! फिर कुछ और किया सी.पी.टी.सी। मैं डिग्रीधारी हूं! हरीशभाई, वह रमेश पारेख की कौन-सी पंक्ति है?

अहीं पयगंबरनी जीभ जुओ, वेचाय छे बब्बे पैसामां,
ने लोको बब्बे पैसानी औकात लईने आव्या छे.
आ मनपांचमना मेळामां सौ जात लईने आव्या छे,
कोई आव्या छे सपनुं लईने कोई रात लईने आव्या छे.

कहीं भी जाइए उनकी प्रशंसा करनी ही पड़े! केवल दो पैसे में अपनी जीभ बिक गई! शील के साथ सत्य बोलना चाहिए। फी लीजिए पर बच्चों को फ्री रखिए। नारिकेल को बोए तब दो के बीच में थोड़ा अंतर रखते हैं फिर नारिकेल को कौन-सी बाजू विकसित होना है वह उसकी स्वतंत्रता होती है। उसे बांध नहीं सकते। यों विद्यार्थीयों को शिस्तबद्ध लाईन में रखिए पर उसका विकास तो उसकी आंतरिक चेतना के अनुसार होना चाहिए। तो, सबको अपने-अपने पंथ में रहने दीजिए। शैक्षणिक संस्थाएं यह चूक गई है। मैंने लड़कों से क्या कभी कहा कि आप माला फेरे? क्या मैंने कहा कि आप यह मंत्र जपिए? ऐसा तिलक कीजिए; नेवर। वे मेरे साथ राम भजते हैं इतना काफी है। मैं कहूं तो करे। अपने माँ-बाप का ना माने इतना मेरा मानते हैं! आप सबको फ्री रखे। गुरु वह है जो अंधेरे में न रखे, उजाले में रखे।

'सदगुरु ग्यान बिराग जोग के।' सद्गुरु विराग देता है। विराग माने सब फेंककर निकल जाना नहीं है। अपने समर्थ भागवत कथाकार नरेन्द्रबापा, वे ऐसा कहते थे, त्याग का नाम बैराग हीं है। पर शुभ का ग्रहण करना उसका नाम बैराग है। अच्छी वस्तु का स्वीकार करना। यह बात मुझे पसंद आई। गांठ में बांधने जैसी बात है। शुभ को हम स्वीकार लेते हैं तब अशुभ अपनेआप अलग हो जाता है। जैनाचार्य चित्रभानु ने विरक्ति छोड़ी और अमरिका में स्थिर हुए। स्वाभाविक समाज में ऐसा हुआ कि साधु नहीं रहे! मेरा तो उनके साथ स्नेहादर रहा है। मुझे अच्छा लगता है। मुझे देरी से समझ में आया कि वेद के साधु रहने से बेहतर है वृत्ति के साधु बने। इस वक्तव्य के लिए साधुवाद कहा। मन ही मन कहा वाह, मुनिराज धन्य हो!

एक रागात्मिका भक्ति है। ईश्वर में विशेष प्रकार का राग उत्पन्न हो उसका नाम विराग है। जो आसक्ति हमारी संसार में है वह यदि हरि में लग जाय। क्या मैं यह कहूं कि कल कथा पूरी हो जाय तो गिरनार भाग जाय! क्या मेरे कहने से आप जानेवाले हैं? लेकिन जो पल मिली है, ये सभी वैकुंठी पल है। गुरु वह है जो अपने राग को आशीर्वाद से दीक्षित करे। जो लड़का स्कूल की दीवारों पर टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें खींचता हो उसे मत मारना। उसे चित्रकला सीखा दे, दीक्षित कर दे। उसकी वृत्ति बदल डालनी है। महामुनि विनोबाजी ऐसा कहते थे कि कुम्हार का लड़का हो उसे दूसरी दिशा मत दिखाइए। जिसमें उसकी वृत्ति हो उसी में जाने दीजिए तो उसे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। साधु के लड़के को तबला सीखाने की ज़रूरत नहीं होती। वे चाय-चीनी के डिब्बे बजाकर ही बड़े होते हैं! वे ताल जानते ही हैं। कुछेक चीजें जीन्स में आती है। आप उसका विकास कीजिए। जो स्वभाव में पडी संपदा है उसमें वृद्धि करो, वह वैराग है।

वैराग जहां तक स्वभाव न बने तब तक प्रभाव डालने का काम करता है। सद्गुरु हमें ऐसा प्रशिक्षित करे कि वैराग्य स्वभाव बन जाय। हमारी समझ बढ़ाये, हमारा सयानापन बढ़ाये। हमें अच्छा वैराग सीखाता है। शुभ ऐसे पकड़ा दे जिससे अशुभ अपने आप निकल जाए। ऐसा कोई गुरु मिल जाए तो समझिए कि कर्णधार मिल गया। 'बालकांड' में आया हुआ यह 'सद्गुरु' शब्द। फिर सीधे 'किष्किन्धाकांड' में शरद का वर्णन किया।

भूमि जीव संकुल रहे गए सरद रितु पाई।

सदगुर मिलें जाहिं जिमि संसय भ्रम समुदाइ।।

पल पक्व हो। उसके साथ बैठे तो भ्रम निकल जाय। ज्यों वर्षाऋतु में अनेक छोटे जीवों का समूह शरदऋतु आते ही भाग जाते हैं।! सद्गुरु मिलने पर हमारे संशय-प्रेम के कीडे भाग जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। तुलसीजी ने दूध-सी सद्गुरु की व्याख्या दे दी! कौन सद्गुरु? जिनके सान्निध्य में बीताए दो पल, जिनकी दृष्टि, जिनके दो बोल मेरे और आपके भ्रम को आमूल नष्ट कर दे, संदेह दूर कर दे। तो बाप, जिनका सान्निध्य हमारे संशय-भ्रम को मिटा दे, कुछ भी करना न पड़े। शरदऋतु आई और जीवजन्तु भाग गए। सद्गुरु मिले और संशय-भ्रम गए! तुलसीजी ने कितना सहज और सरल कर दिया! हमारे खगपति गरूड ने कागभुशुंडि का संग किया, थोड़ा सत्संग किया। उसी समय -

गयउ मोर संदेह सुलेउ सकल रघुपति चरित।

संदेह स्वयं में उठे और भ्रम औरो में हो। इतना छोटा-सा तात्त्विक फर्क है। हमारे अंदर जो उठता है कि ऐसा होगा, वैसा होगा! हमारी बीमारी का नाम संशय है। भ्रम दूसरों को हो कि यह रज्जु है या सर्प? मैं सरलता से वेदांत की बातें करता हूं। भ्रम आरोपित होता है दूसरों में। संदेह निजी समस्या है। विनोबाभावे जैसे बुद्धपुरुषों से मिले तो कुछ पूछना न पड़े साहब! ऐसे कितने बुद्धपुरुष अपने यहां हुए! सद्गुरु वही जो हमारे ज्ञान और समझदारी में वृद्धि करे। हमें अच्छा बैराग सीखाए। वह अपना कर्णधार बन सके। जो अपने संशयों को उनकी उपस्थिति से टाल दे। उनके होने से घटना घटित हो। उन्हें अपना कर्णधार बना सके। जो अपने संशयों को उनकी उपस्थितियों से टाल दे। उनके होने से घटना घटित हो।,उन्हें अपना कर्णधार मानना। तीसरा शब्द 'सद्गुरु' जो लिया वह है अपनी नाव को तट पर लाए, जो हमें पार लगाए। लौका बने। चौथी बार 'मानस' में 'सद्गुरु' शब्द आया है मानस-रोग के वर्णन में -

सदगुर बैद बचन बिस्बासा।

संजम यह न विषय कै आसा।।

सद्गुरु से हमारे भ्रम-संशय नष्ट हो जाते हैं। हमें अपनी मंझिल तक पहुंचाये वह हमारा सद्गुरु है। कुंए में उतारकर रस्सी काट न दे वह अपना सद्गुरु है। चौथा सद्गुरु बैद है, डोक्टर है। वह हमारे मानसिक रोग का बैद है। तो हमें क्या कहना है? वहां तुलसीजी ने थोड़ी शर्त रखी है। प्रथम लक्षण बताया कि हमारे सद्गुरु ऐसे बैद बने जिनके वचन पर हमें विश्वास हो। हमारी तकलीफ क्या है कि हमें सद्गुरु के वचन में विश्वास नहीं है! हम भी जीव है। यह कोई आलोचना नहीं है। युवा भाई-बहन, ऐसा सद्गुरु मिले, तो कोई ऐसी शर्त नहीं रखी है कि उन्हें फूल चढाइए, माला फेरे, चंदन कीजिए। यह सब जरूर कीजिए। पर ऐसा यहां लिखा तो नहीं है। इतना ही कहा कि उनके वचन का पालन कीजिए। न पाल सके तो कम अज कम भरोसा तो कीजिए कि मैं कर नहीं सकता यह मेरी कमजोरी है पर बोला यह ठीक है; इतना तो स्वीकार कीजिए।

अध्यात्मजगत में बोलिंग छोड़कर बेटिंग करनी। बेटिंग कर निंदा-अस्तुति की सिक्सर मारिए और उसे बाउन्डरी से बाहर फेंकिए! हम कितने वाइड बोल फेंकते हैं! मेरी तो यह नौ-नौ दिन की टेस्ट मेच ही है। इनके अम्पायर बाप हनुमान बैठे हैं। अभी तक उसने आउट नहीं दिया है। वह जिस दिन आउट करेगा उसी वक्त मैं यहां से ऊतर जाऊंगा। अभी तक उसने खेलने दिया है, ऊंगली ऊपर नहीं उठाई है। हम निंदा न करे, नो-बोल न डाले। हमारे गुरु ने दिए हुए बेट से निंदा की बोलिंग को बाउन्ड्री से बाहर फेंक दे, इससे तो तालियां मिलती है।

सद्गुरु की गेंद पर भरोसा रखिए। जिसकी गेंद पर भरोसा जग जाय वही अपना कर्णधार है। उनकी नाव में बैठकर हमें हाथ में पतवार नहीं लेनी होती। वही आगे ले जाता है। हम आराम से सो जाय। आप किसी अच्छे ड्राईवर को गाडी सौंप दे फिर हमें तो पीछे की सीट पर सोना होता है। व्यर्थ नहीं कहना कि लेफ्ट लो, अब राइट लो!

'संजम यह न विषय कै आसा।' उसे पता चले कि मेरे वचन का पालन कर रहा है। अत: वह थोड़ा संयम सिखलाता है। गुरु कौन-सा संयम सिखाता है? संयम इतना ही सिखाये कि बेटा, ज्यादा विषय की आशा मत रखना। इतना ही बस। विषय के कई अर्थ होते हैं। बेटा, हरि को भजना। पर हरि को भजूं तो इस विषय में सफलता मिले! मैं हरि को भजूं तो मेरे हाथ में इतइतने विषय आ जाय! यह सब छोड़ दो। तुझे हरि भजने की इच्छा हुई यही तेरा फल है। यहां 'यह' शब्द पर वजन दिया है।

मुझे सद्गुरु के रूप के बारे में और कुछ कहना है, पर वह फिर कभी। आज जो थोड़ा समय है उसमें कथा का क्रम लें। अयोध्या में रामजी का प्राकट्य हुआ। सुमित्रा ने दो पुत्रों को और कैकेयी ने एक पुत्र को जन्म दिया। उत्सव के साथ नामकरण हुआ वशिष्ठजी द्वारा। 'हे राजन, पूरे विश्व को जिनके नाम से आराम और विश्राम मिलेगा तथा जो सुख का धाम है ऐसे इस कौशल्या के सांवरे पुत्र का नाम राम रखता हूं। इनका नाम मंत्र बनेगा। इनका नाम भाव से या कुभाव से लेंगे तो आसपास के वातावरण में शुभ आंदोलन शुरू होंगे। जिनके नाम से जगत का लालनपालन होगा, ऐसे कैकेयी के पुत्र का नाम भरत रखा। 'हे राजन्, जिसके स्मरण से दूसरों के प्रति दुश्मनवृत्ति का नाश होगा। शत्रु नहीं, पर शत्रुता का नाश होगा। दुश्मन नहीं, पर दुश्मनी का नाश होगा, ऐसे सुमित्रा के पुत्र का नाम शत्रुघ्न रखता हूं। जो सभी अच्छे लक्षणों का भंडार है, शेष के अवतार स्वरूप पृथ्वी को धारण करनेवाला, राम का अत्यंत प्रिय ऐसे सुमित्रा के पुत्र का नाम लक्ष्मण रखता हूं।'

चारों कुमारों की अवस्था हुई। यज्ञोपवित संस्कार हुआ। गुरु के आश्रम में आकर अल्पकाल में विद्या प्राप्त की। फिर विश्वामित्र का आगमन होता है। उन्होंने कहा, 'वन में जाकर यज्ञ-याग करते हैं, अनुष्ठान करते हैं पर मारीच और सुबाहु नामक आसुरी वृत्ति ये तत्त्व हमारे अनुष्ठान को सफल नहीं होने देते। राजन्! मुझे अनुज सह राम दीझिए।' यह पक्ष मुझे अच्छा लगा। भारत का ऋषि-साधु सम्राट से संपत्ति नहीं मांगता, संतति मांगता है। साधु किसी से कुछ नहीं मांगता। बुद्धपुरुष साधु आप से कुछ मांगे तो पूरे घर में उत्सव मनाइए कि आज हम न्याल हो गए साहब! अब हमें कुछ कमी नहीं है! एक दरवाजा बन्द हो तो गुरु सौ दरवाजे खोल देता है। मेरी समझ में नहीं आता हमारे भजन कमजोर पड़ गए इसीलिए मांगना पड़े, नहीं तो धर्म को मांगने की जरूरत न पड़े। धर्म तो दूसरों को तृप्त करे। क्या उन्हें कहना पड़े कि तू इतना कर देना या इतना भेज देना?

> अध्यात्मजगत में बोलिंग छोड़, बेटिंग करे। बेटिंग में निंदा–अस्तुति की सिक्सर लगाइए। उसे बाउन्डरी से बाहर फेंकिए। मेरा तो यह नौ दिन का टेस्ट मेच है। इसका अम्पायर यह बाप हनुमान बैठा है। अभी तक उसने आउट नहीं दिया है। जिस दिन वह आऊट कर देगा उसी समय मैं यहां से ऊतर जाऊंगा। अभी तक तो उसने खेलने दिया है। ऊंगली ऊपर नहीं उठाई है। हम निंदा न करे, नो बोल न फेंके। निंदा की बोलिंग को हमारे गुरु ने दिए हुए बेट से बाउन्ड्री बाहर धकेल दें; बदले में तालियां मिलती है।

वशिष्ठजी की आज्ञा हुई। दशरथजी ने राम-लक्ष्मण को आज्ञा दी। राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ निकले हैं। रास्ते में ताड़का का निर्वाण किया। दूसरे दिन यज्ञ का आरंभ हुआ। मारीच-सुबाहु विघ्न डालते हैं। मारीच को बिना धार का बाण मारकर शतजोजन दूर फेंका। सुबाहु को निर्वाण दिया। विश्वामित्र ने कहा कि राघव, यह एक यज्ञ तो पूरा हुआ। एक दूसरा बाकी है। वह अहल्या का है। फिर तीसरा यज्ञ मिथिला में धनुषयज्ञ है। रामजी ने आज्ञा शिरोधार्य की। पदयात्रा शुरू हुई। एक आश्रम आया। रामजी ने जिज्ञासा की, यहां क्यों कोई नहीं है? यह पथ्थर की तरह शून्यमनस्क कौन बैठा है? विश्वामित्र ने कथा सुनाई। यह गौतम-पत्नी अहल्याजी है। गौतम के शाप से पथ्थरदेह हुई है। शिलावत् हुई है। अहिल्या का उद्धार हुआ। ठाकोरजी पतित पावन कहलाए। वहां से यात्रा आगे बढ़ी। गंगा के पास आए। गंगास्नान किया। फिर जनकपुर पहुंचे। नाम-रूप को मिथ्या माननेवाले जनक रूप में डूब गए! नाम पूछने प्रेरित हुए। विश्वामित्रजी ने पहचान करवाई। निवासस्थान नगर में दिया। भोजन-विश्राम किया। शाम को नगरदर्शन किया। पूरी नगरी उनके रूप में डूब गई। दूसरे दिन पुष्पवाटिका में पहली बार राम और सीताजी मिलते हैं। फिर जानकीजी ने गौरी की पूजा की। पार्वती ने वरदान दिया कि 'हे जानकी, तेरे मन में जो सांवरा बस गया है वह तुझे मिलेगा।' यहां राम-लक्ष्मण पुष्प लेकर आए।

दूसरे दिन धनुष यज्ञ है। द्वीप-द्वीप और खंड-खंड से राजवी पधारे हैं। विश्वामित्र राजकुमारों के साथ राम-लक्ष्मण को लेकर आए हैं। एक के बाद एक राजा खड़े हुए। निष्फल गए। जनकजी व्याकुल हुए! वे बोल पड़े, धरती वीर विहीन है! लक्ष्मणजी आंदोलित हुए! विश्वामित्र ने रामजी को संकेत किया। भगवान राम ने गुरु को प्रणाम कर इष्टदेव को याद कर धनुष की ओर बढ़े। दूसरे राजा इसीलिए निष्फल हुए क्योंकि वे अपने इष्टदेव को याद करते हैं पर गुरु को साथ नहीं लाए हैं। रामजी ही गुरु के साथ है। जिनका गुरु साथ में हो उनका अहंकार का धनुष टूटता है। साहब! राघव ने क्षणार्ध में धनुष तोड़ा! जयजयकार हुआ। सीताजी जयमाला पहनाती है। परशुराम महाराज आए। अंत में परशुराम को राम की महिमा का ख्याल आया। अपना अवतारकार्य पूरा मानकर राम की स्तुति कर निकल गए।

दशरथजी बारात लेकर पधारे हैं। वेद और विधि अनुसार ब्याह संपन्न हुआ। वशिष्ठजी ने जनकजी से कहा कि आपकी तीन पुत्रियां अनब्याही है। आपकी सहमति हो तो समर्पित हो। भरत को मांडवीजी, लक्ष्मणजी को ऊर्मिला, शत्रुघ्न को श्रुतकीर्ति अर्पित हुई। बिदाई का समय आया। बारात अयोध्या आ पहुंची। आनंद छाया है। सुख-समृद्धि बढ़ने लगी है। महेमानों ने बिदा ली। आखिर में विश्वामित्र बिदा मागते हैं। साधु गृहस्थ के प्रसंग में जाए यह मुझे अच्छा लगता है। परंतु प्रसंग पूरा हो जाने पर साधु को अपने भजन में लौट जाना चाहिए। वहां ज्यादा समय रूकना नहीं चाहिए। घर से कोई संत बिदा ले तब क्या बोलना चाहिए यह दशरथ ने हमें सिखाया है। दशरथजी ने हाथ जोड़े, 'बापजी, ये मेरी रानियों, ये मेरे पुत्र और पुत्रवधूएं, ये सेवक, ये मेरी अयोध्या की पूरी समृद्धि आप ही की है।'

नाथ सकल संपदा तुम्हारि।
मैं सेवक समेत सुत नारि।।
करेहु सदा लरिकन्ह पर छोहू।
दरसन देत रहब मुनि मोहू।।

'बच्चों को स्नेह करते रहिए। भजन में से समय मिले तब हमें दर्शन दीजियेगा।' विश्वामित्र बिदा हुए। ये रथ में भी न गए। जैसे आये थे वैसे ही निकल गए! यह साधुता का शिखर है।

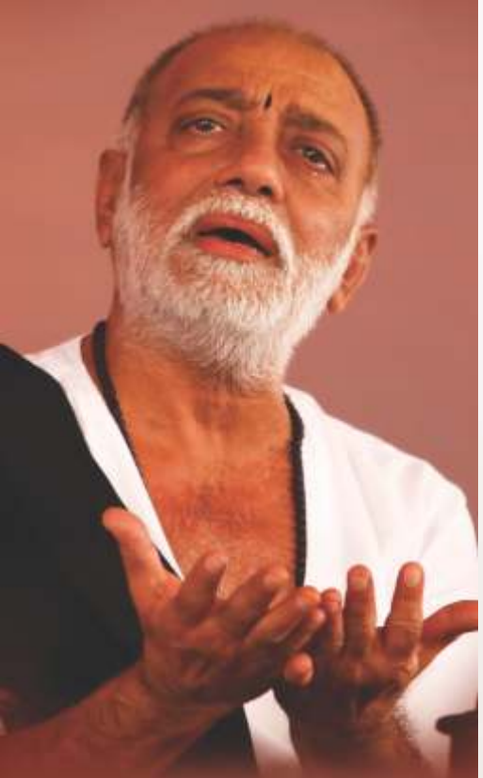

सद्गुरु स्वयं दु:खी होते हैं, किसी को दु:खी नहीं करते

'रामचरित मानस' के 'अयोध्याकांड' और 'उत्तरकांड' से एक पंक्ति लेकर, इसका नौ दिवसीय रामकथा का केन्द्रीय विचार बनाकर हम सबने मिलकर चर्चा की। मेरे सद्गुरु भगवान की कृपा से, शास्त्रकृपा से विद्वानों और विचारपुरुषों के साथ बैठकर, सुनकर, बातें कर और मुझे भी इनमें से जो प्राप्त हुआ, ऐसी बातें संवाद के रूप में सात्त्विक-तात्त्विक रूप में आपके सामने रखता हूं।

'रामचरित मानस' के आधार पर समाज में से सात कर्णधारों की खोज का एक विनम्र प्रयत्न था कि राष्ट्र का कर्णधार कौन बन सके और वह कैसा होना चाहिए? समाज सेवा के क्षेत्र में पड़े महानुभावों में हमें प्रेरणा दे सके ऐसा अपना कर्णधार कौन बन सके? अपने छोटे परिवार का गुरुजन-कर्णधार कैसा हो? युवाओं का कर्णधार कैसा होना चाहिए? ज्ञान और विज्ञान से इक्कीसवीं सदी को शगुन मिल रहा है, ऐसे क्षेत्र में अपना कर्णधार कौन हो? उसकी बातें की। कौन-सा बुद्धपुरुष, आध्यात्मिक या सभी क्षेत्रों में अपना कर्णधार बन सके? इसकी भी हमने बातें की 'मानस' के आधार पर और अन्य संदर्भों से खोज शुरू की। कल चार बार 'मानस' में आए 'सद्गुरु' शब्द की चर्चा की। आज उपसंहार के रूप में मुझे जो सूझे वह कहूं, इससे पहले थोड़ा कथा क्रम आगे बढ़ाए।

कल हमने 'बालकांड' पूरा किया। तुलसीजी का दूसरा सोपान 'अयोध्याकांड' है। उनके मंगलाचरण में मुझे लगता है कि यौवन की ओर संकेत है। पहला मंत्र -

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके

भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।

भगवान महादेव की पत्नी सह वंदना की है। विश्व के यौवन को गोस्वामी यों कहना चाहते हैं कि जवानी में तेरा ब्याह होगा; तेरी पत्नी तेरे साथ होगी। तू गृहस्थी बनेगा। तू मौज कर। मर्यादा में रहना है। पर तेरे मस्तक पर विवेक की गंगा बहती रखना। तेरे विचार गतिहीन न हो जाय। भाल में महादेव को वक्रचन्द्र है। हे युवक, तेरा भाल तेजस्वी होना चाहिए। दूसरों को तपाए ऐसा नहीं पर शैत्य होना चाहिए। तेरी बुद्धि कलंक मुक्त रहे। भूल से भी मत समझना कि तू पूर्ण हो गया है। अत: बीज का ही चन्द्र रहना। जिससे वृद्धि का मौका रहे। जब अमृत समुद्र से निकला तो थोड़ा छलक गया। विष कहीं छलका नहीं। अकेले महादेव को पीना पड़ा। अत: हे युवक, विषम परिस्थिति में तुझे अकेले ही पान करना पड़ेगा। तेरी स्वतंत्रता अखंड रहेगी। समझ में आए और सत्य लगे तो जरूर जीवन में उतारना। यहां कोई फी नहीं और आप सब फ्री है। नहीं तो दुनिया फी भी लेती है और फ्री भी नहीं रहने देती! साहब, दक्षिणा भी ले ले और गला भी दबाए!

दूसरे श्लोक में तुलसीजी ने कहा कि राम को राजपद की खबर मिली तो चेहरे पर कोई प्रसन्नता की रेखा नहीं आई। वन में जाने की बात आई तो ग्लानि की कोई रेखा नहीं आई। हे युवक, जीवन में ऐसे कई अवसर आयेंगे; असफलता के साथ तू जीना सीख लेना। 'अयोध्याकांड' के आरंभ में अतिशय सुख का वर्णन है। मेरे भाई-बहनों, सुख का स्वागत, पर अतिशय सुख का ध्यान रखना। क्योंकि उसके बाद बनवास तैयार है। मुझे कई बार पूछा गया है कि चौदह साल का बनवास ही क्यों? इसका सबसे बड़ा कारण जो मुझे दिखाई देता है वह आप सबकी शुभकामना से कि चौदह वर्ष के बनवास में प्रभु ने सागरमंथन किया है। एक-एक वर्ष एक-एक रत्न निकाला है। जो पौराणिक नहीं, मानवीय रत्न है। यों प्रभु ने चौदह रत्न निकाले हैं। तुलसी संकेत करते हैं। प्रेमरूपी अमृत निकालने के लिए राम और भरत का विरहरूपी मंदराचल रखा और भरतरूपी समुद्र को भगवान ने मथ डाला। जिससे जगत को प्रेमरूपी अमृत प्राप्त हो।

दशरथजी ने वशिष्ठजी से पूछा कि राम हर तरह से लायक है, मैं उसे उत्तराधिकारी नियुक्त करूं? वशिष्ठजी ने अद्भुत बात कही कि राम को राज्य सौंपना हो तो जिस दिन राम को भाल में तिलक हो वही उत्तम मुहूर्त है, विलंब मत कीजिए। दशरथजी ने एक दिन की मोहलत मागी। इस एक दिन की मोहलत में चौदह वर्ष रामराज्य दूर धकेल दिया गया! इसका अर्थ यह हुआ कि शुभ विचार आए तो देरी नहीं करनी चाहिए। तो, दशरथ ने एक दिन की मोहलत मांगी, ममता की रात आई। ममता अंधकार ही करे। साहब, उस रात को पूरा वातावरण बदल गया! कैकेयी दो वचन मांगती है। कैकेयी मांगे ऐसी माँ नहीं है, दे ऐसी है। मांगनेवाली के पेट से भरत का जन्म नहीं हो सकता, साहब! परंतु कुसंग काम करता है। मेरे युवा भाई-बहन, सोहबत का ध्यान रखना। एक मंथरा के कुसंग से बात बदल गई। कैकेयी भवन में दशरथजी आते हैं। थोड़ा विशेष आकर्षण ह, ऐसा तुलसी का मत है। 'देखहु काम प्रताप बड़ाई।'

मैं एक प्रश्न पूछुं, लंका में काम है, अयोध्या में नहीं? लंका में क्रोध है, अयोध्या में नहीं? लंका में लोभ है, अयोध्या में नहीं? मात्रा में फर्क है। अहोभाव और अधोभाव एक ओर रखकर मूल्यांकन होना चाहिए। लंका राक्षसों की नगरी है। वहां सभी रोषयुक्त है। तामसी है तो क्या अयोध्या में नहीं है? अयोध्या में पूरा कोपभवन है। सभी में काम, क्रोध, लोभ होते ही है। साहब, मात्रा में फर्क होता है। तुलसीदर्शन के आधार पर कह सकते हैं, लंका में राक्षस के रूप में काम, क्रोध, लोभ है। अयोध्या में रोग के रूप में है। राक्षसों को मार डाले; रोग का निदान होना चाहिए। रोगी को मार डालना नहीं है। इसीसे तुलसी ने अयोध्या के काम, क्रोध, लोभ का निदान कर बताया।

राम का बन में जाना निश्चित हुआ। सीताजी ने लक्ष्मण को बहुत समझाया। वे नहीं माने। तीनों उदासी व्रत लेकर निकले। प्रभु प्रजा को समझाते हैं पर प्रजा मानती नहीं है। तमसा तट पर प्रथम रात्रि मुकाम हुआ है। सबको सोया देखकर रामजी ने करुणावश सुमंत को गुपचुप आगे जाने के लिए बिनती की। सुबह हुई। लोग जगे। लौट आए। राम का रथ शृंगबेरपुर पहुंचा। सुमंत की बिदाई दी। भगवान गंगा पार हुए। वहां एक रात रूके। भगवान भरद्वाज के आश्रम में आगे बढ़े। आए वाल्मीकि के आश्रम में। वाल्मीकि ने रहने के लिए चौदह आध्यात्मिक स्थान बताए। फिर राम-लक्ष्मण-जानकी चित्रकूट में निवास करते हैं। रामवनगमन के बाद दशरथजी कैकेयी भवन से कौशल्याभवन आए हैं। जिस प्रथम चौपाई का हमने आश्रय लिया वह चौपाई यहां है। कौशल्या को लगा कि सूर्यवंश का सूर्य अब अस्त होनी की तैयारी में है। रामजननी बोली -

करनधार तुम्ह अवध जहाजू।

चढ़ेउ सकल प्रिय पथिक समाजू।।

पर दशरथजी राम के वियोग में धैर्य न रख सके। 'राम राम' छ: बार बोलकर प्राणत्याग करते हैं। अवध अनाथ हुई। भरतजी शंकित मन से वायुगति से पधारते हैं। महाराज की अंतिम क्रिया हुई। अयोध्या में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सभा हुई। जिसमें चर्चा के अन्त में निर्णय हुआ कि भरतजी के साथ सब चित्रकूट जायेंगे। वहां पर जो निर्णय हो सबको स्वीकारना है। भरतजी सबको लेकर चित्रकूट जाते हैं। परमप्रेम में निमग्न सब एक-दूसरे से मिलते हैं। सभाएं होने लगी। यहां जनकजी पूरी जनकनगरी लेकर आए। चित्रकूट में दो नगरी अवध-जनकपुरी इकठ्ठी हुई है। बड़ी-बड़ी सभाएं हो रही है।

आखिर निर्णय हुआ कि राम जैसा कहेंगे वैसा सब करेंगे। निर्णय हुआ, भरत को लौटना है। भरत अश्रुसिक्त आंख से खड़े हैं। भगवान ने कृपा कर चरणपादुका दी। भरतजी लौटते हैं। अयोध्या में रहकर अपने भीतर बन खड़ा किया है। भगवान ने कृपा कर चरणपादुका दी है। भरतजी लौट आते हैं। भवन में रहकर बन जैसा जीवन जीना यह कितना बड़ा गृहस्थजीवन का संकल्प है! अयोध्या के बाहर नंदिग्राम में कुटिया बनाई है। 'अयोध्याकांड' पूरा होता है।

'अरण्यकांड' में रामजी करीब-करीब तेरह वर्ष चित्रकूट के बाद स्थान बदलते हैं। फिर अत्रि ऋषि के आश्रम में आते हैं। अत्रिस्तुति करते हैं। यह वन्य संस्कृत है। इसमें शब्द संस्कृत के संस्कृत की ही रचना पर एकदम बनवासी संस्कृत। लोक और श्लोक इकठ्ठे लिए है -

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं।।

वहां से भगवान आगे बढ़े। अनेक ऋषिमुनियों से मिलते-मिलते, कुंभजजी से विचार-विमर्श करते हुए भगवान गोदावरी तट पर पंचवटी में पधारे हैं। रास्ते में गीधराज जटायु से मैत्री की। यह राम का अभियान है। जिसे कोई नहीं अपनाता था उन्हें अपनाते-अपनाते पूरी यात्रा आगे बढ़ी। रामराज्य तो देरी से आया। पहले इतने पायदान चढ़ने पड़ते हैं, साहब! पंचवटी में निवास। एक दिन लक्ष्मणजी पांच प्रश्न पूछते हैं। लक्ष्मण जाग्रत है। पर राम के साथ आध्यात्मिक वार्तालाप के बाद विशेष जागृति आई। लक्ष्मण के जीवन में शूर्पणखा आई। जब मानव ज्यादा जाग्रत हो तभी शूर्पणखा की एन्ट्री होती है। साहब, जिनमें विवेक है उन्हें ही विघ्न आते हैं। शूर्पणखा आई है। वह दंडित होती है। उसने खर-दूषण को उत्तेजित किया। चौदह हजार राक्षसों को प्रभु ने निर्वाण दिया है। शूर्पणखा रावण के पास जाकर उसे उत्तेजित करती है।

रावण सोचता है, मुझसे माला फेरना संभव नहीं! मैं तो वैर बांधकर हरि को प्राप्त करूं। निर्वाण का संकल्प किया है। मारीच से कहा, चल मेरे साथ। मैंने योजना बनाई है। परंतु रामजी ने इससे पूर्व योजना बनाई है। लक्ष्मणजी फल-फूल लेने गए तब राम ने जानकीजी से कहा, 'हे जानकी, मैं ललित नरलीला करना चाहता हूं। आप तो अंबा है। रावण आपको छू तक न सके। आपकी दिव्यचेतना को अग्नि में समाविष्ट करके अपना प्रतिबिंबित रूप रखिए।' रावण की योजना अनुसार मारीच मृग बनता है। प्रभु मारीच के पीछे जाते हैं। मारीच को निर्वाण देते हैं। प्रभु लौटते हैं। यहां रावण आता है; सीताजी कुटिया में अकेली है। रावण ने जानकी का अपहरण किया है। जटायु ने शहादत ली है। रावण अशोकवन में सीताजी को सयत्न रखता है। मृग को मारकर प्रभु लौटते हैं। विरहलीला शुरू होती है। कल्पांत करते हैं। जानकीजी की खोज में निकलते हैं। जटायु को दिव्यगति दी। कबंध का उद्धार कर प्रभु शबरीजी के आश्रम में पधारे हैं। शबरी प्रभु के धाम में जाती है। प्रभु पंपासरोवर आए; नारदजी मिलने आए। 'अरण्यकांड' पूरा हुआ।

'किष्किन्धाकांड' में राम-हनुमान का मिलन हुआ। हनुमान द्वारा सुग्रीव से मैत्री हुई। फिर जानकीजी की खोज का अभियान शुरू हुआ। दक्षिण में अंगद की राहबरी में एक टुकडी तैयार हुई। साथ में वयोवृद्ध जामवंत है। आखिर में हनुमानजी ने चरणस्पर्श किए। रामजी ने मुद्रिका दी। वे खोज में निकले। स्वयंप्रभा मिली। संपाति मिला। जानकारी मिली कि जानकीजी अशोकवाटिका में है। प्रश्न हुआ, कौन जाय? सभी ने अपनी-अपनी शक्ति का उद्घोष किया। हनुमानजी चूप रहे। तब जामवंतजी ने पूछा, 'हनुमानजी आप चूप क्यों है?' हनुमानजी पर्वताकार बनते हैं। जामवंत से मार्गदर्शन लेकर जानकीजी को संदेश देने की तैयारी करते हैं। फिर 'सुन्दरकांड' शुरू होता है -

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

रास्ते में दो-तीन विघ्न पारकर हनुमानजी लंका में प्रवेश करते हैं। विभीषण के भवन में गए। दो भक्तों का मिलन हुआ। विभीषण ने जानकी के पास जाने की युक्ति कही। हनुमानजी जानकी के पास पहुंचते हैं। जानकी को व्यथित देखकर मुद्रिका डालते हैं। मिलन हुआ। जानकीजी ने आशीर्वाद दिए। मधुर फल खाए। अक्षयकुमार आया। उसका क्षय हुआ। इन्द्रजित हनुमान को बांधकर राजसभा में ले आया। रावण क्रोधित हुआ। मृत्युदंड का एलान किया। वहां विभीषण ने आकर नीति की घोषणा की कि दूत अवध्य है। कोई और सजा दीजिए। पूछ जलाने का निर्णय हुआ। हनुमानजी खुश हुए। यूं भी समाज में हमारी बहुत प्रशंसा-पूछना हो इससे बहेतर है जल जाय! भक्ति तक जो पहुंच जाय, सत्य तक जो पहुंच जाय, प्रेम तक जो पहुंच जाय, उसे समाजरूपी लंका जलाने तक की कोशिश करते हैं। पर हनुमंत जैसा तत्त्व होगा तो मान्यताओं को जला देगा, स्वयं अक्षुण्ण रहेगा। लंका जलाई, समुद्र में स्नान किया। माँ के पास आए। चूडामणि संदेश दिया।

हनुमानजी लौट आए। मित्रों के साथ राम को संदेश दिया। प्रभु ने कहा, अब देरी नहीं करनी है। अभियान शुरू हुआ। समुद्रतट पर प्रभु की सेना आई। यहां रावण ने विभीषण का त्याग किया। विभीषण प्रभु की शरण में आया। समुद्र को कैसे पार करे? प्रभु ने कहा, आपके कुल में समुद्र वरिष्ठ है। सो तीन दिन प्रार्थना करे। समुद्र मान जाय तो बल प्रयोग नहीं करना है। पर समुद्र नहीं माना। रामजी ने लक्ष्मण को धनुष देने को कहा। समुद्र में खलबली मच गई! ब्राह्मण का रूप लेकर शरण में आया, 'सेतु बनाइए।' प्रभु को जोड़ने का मंत्र दिया।

> ये सभी मोक्ष मागते हैं। मोक्ष माने क्या? मोक्ष माने मोह का क्षय। जो वस्तु हमारे बिना कारण के मोह का क्षय करे वही मोक्ष है। यह मोक्ष क्या होगा? मोक्ष नामक सोसायटी होगी? तो ये श्रीमंत लोग ही ले ले! यहां प्रेम, नीति, प्रामाणिकता और आनंद से जी लेना। साहब, इससे बड़ा मोक्ष कौन-सा है? मोक्ष की बातें करते हैं उसके चेहरे पर रूक्षता होती है! पहले अपनी रूक्षता का तो मोक्ष कर! यह पृथ्वी जीने जैसी है। जिस रीति से विज्ञान ने सुविधा दी है तो मुझे लगता है, बहुत जीना है। मेरे हिस्से का मोक्ष आपको दक्षिणा में! बांटकर खाईयेगा! फिर भी कोई मोक्ष का मार्ग बताए और हमारी रुचि हो तो जरूर उस मार्ग पर जाना चाहिए।

'लंकाकांड' का आरंभ होता है। सेतु निर्माण हुआ। राम की समग्र सेना जुट गई। विघटन नहीं करती। रामेश्वर की स्थापना हुई। सभी सेतु से पार हुए। दूसरे दिन अंगद 'राजदूत' बनकर गया। संधि निष्फल हुई। युद्ध अनिवार्य हुआ। एक के बाद एक राक्षस को निर्वाण प्राप्त हुआ। रावण को इकत्तीस बाण द्वारा प्रभु वीरगति देते हैं। रावण पहली और आखिरी बार 'राम' ललक के साथ बोला है। तुलसीदासजी कहते हैं, प्रभु के चेहरे में रावण का तेज समा गया। रावण की क्रिया हुई। विभीषण को राज मिला। जानकीजी से पुनर्मिलन हुआ। पुष्पक तैयार हुआ। प्रभु सबको लेकर शृंगबेरपुर पहुंचे। भगवान ने केवट को साथ लिया। खबर देने के लिए हनुमानजी अयोध्या भेजे गए। 'लंकाकांड' पूरा हुआ।

हनुमानजी भरत से मिले। वायुयान अयोध्या की धरती पर ऊतरा। भगवान ने यहां अपनी ऐश्वर्य लीला शुरू की। इतने सारे लोग मेरा साक्षात्कार चाहते हैं, सो प्रभु ने अमित रूप धारण किया है। जिसका जैसा भाव उसीके अनुरूप प्रभु उनसे मिले हैं। सर्व प्रथम माँ कैकेयी के भवन में गए। सुमित्रा से मिले; कौशल्या से मिले। वशिष्ठजी ने कहा, 'आज ही राजतिलक कर दे। अब कल की राह न देखे।' वशिष्ठजी ने दिव्य सिंहासन मंगवाया है। राम सिंहासन के पास नहीं गए, सिंहासन राम के पास आया। सत्ता सत् के पास आई। यह विचार बहुत अद्भुत था! भगवान राम धरती को, प्रजाजनों को, भगवान भास्कर को, माताओं को और गुरुजनों को प्रणाम कर और सिंहासन पर बिराजमान। जानकीजी बिराजमान हुए। त्रिभुवन में रामराज का उद्घोष होता है, भगवान के भाल में तिलक किया। तुलसी ने चौपाई लिखी -

प्रथम तिलक बसिष्ठ मुनि कीन्हा।
पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा।।

सर्व प्रथम वशिष्ठजी ने तिलक किया। रामराज्य माने प्रेमराज्य की स्थापना हुई। छः माह बीते। मित्र बिदा हुए। हनुमानजी रूके हैं। जानकीजी ने दो सुंदर पुत्रों को जन्म दिया। मानो हरि का प्रतिबिंब ऊतरा है! उसी तरह अन्य तीन भाईयों के यहां भी दो-दो पुत्रों का जन्म हुआ। यहां रघुवंश की कथा पूरी हुई। तुलसी के 'मानस' में जानकीजी का दूसरीबार का त्याग, इसका वर्णन नहीं है। यह विवादास्पद है। तुलसी संवाद की स्थापना चाहते हैं। इसीलिए नहीं लिखा। इसके बाद के प्रकरणों में

कागभुशुंडिजी का जीवनचरित्र है। गरुडजी ने कागभुशुंडिजी से सात प्रश्न पूछे। आखिरी प्रश्न मानसिक रोग का था, हे सद्गुरु, मुझे कुछ बताइए। कागभुशुंडि मानसिक रोगों की सूचि गरुड को देते हैं। फिर उपचार के लिए औषधि बताते हैं। तब कथा के केन्द्रवर्ती विचारवाली चौपाई-कर्णधार की आती है -

करनधार सदगुर दृढ़ नावा।

दुर्लभ साज सुलभ करि पावा।।

अध्यात्मजगत में या जितने क्षेत्रों की हमने चर्चा की वह सद्गुरुरूपी कर्णधार में समाहित है। किसी बुद्धपुरुष में सभी कर्णधार आ जाते हैं। राम ने अपने प्रवचन में कहा है कि सद्गुरु कर्णधार बने।

सद्गुरु कैसा होना चाहिए? लाओत्सु का एक सूत्र है, मुझे पसंद है। राजा चार प्रकार के होते हैं। एक उसकी हयाती ही काफी होती है। दूसरा, जिसे लोग पूजते हो। तीसरा, एक ऐसा राजा जिसे सब प्रेम करे, चौथा जिससे लोग डरे। इस बात का मैं आधार लेता हूं। मुझे लगता है कि बुद्धपुरुष भी चार प्रकार के होते हैं। जैन परंपरा में आचार्यों के लिए 'शासनसम्राट' शब्द ही प्रयुक्त होता है। कौन सद्गुरु, कौन अपना कर्णधार? ऐसा कौन-सा बुद्धपुरुष जो हमारा पोषण करे, शोषण नहीं। हमारे यहां कुलगुरु, धर्मगुरु, सद्गुरु और जगद्गुरु शब्द है।

यह राजाओं के संदर्भ की बातें हुई। अपना कर्णधार कैसा सद्गुरु बन सके, इसकी थोड़ी बात कर कथा को विराम की ओर ले जाय। राजा सारे राष्ट्र को सुव्यवस्थित रखता है। सभी उनको देखे तो पहचानते हैं पर उसके मूल मर्म को न जान सके। ऐसा एक तत्त्व, जिन्हें जगद्गुरु कहते हैं, अध्यात्मजगत का शासक कहते हैं। जगद्गुरु व्याप्त होता है। वे हमें नाम से बुलाते हैं पर उनको हम पा नहीं सकते। हमें ऐसा लगे कि वे हम जैसे ही है। हमारी तरह खाए, पीए, बोले उनका होना ही प्रभावशाली होता है। कभी-कभी हमें लगे कि ये बुद्धपुरुष होंगे? तुलसी ने इसे जगद्गुरु कहा है। राम जगद्गुरु है। इनके द्वारा ही सब कुछ होता है। उनकी कृपा से ही सब कुछ होता है। पर हमें एहसास न होने दे। जिससे हम पंगु न बन जाए। हमें पुरुषार्थी बना रखे। साहब, जगद्गुरु ऐसा तत्त्व है जिनका होना ही पर्याप्त है।

राजा की दूसरी व्याख्या है लोग उनकी पूजा करे। इस गुरुपरंपरा में जो कुलगुरु है, लोग उन्हें पूजे। तीसरा, धर्मगुरु; लोग उनसे डरते हैं। तथाकथित में ऐसा ही होता है! सद्गुरु स्वयं दु:खी होता है पर किसी को दु:खी नहीं करता। उद्यान में रहकर एक भी पर्ण तोड़ता नहीं है। पुष्प को मूर्जाने न दे। हमारे बीच ही रहे। पर हमारा शोषण न करे। तथाकथित धर्मगुरुओं से जगत डरता है। कुलगुरु को लोग पूजते हैं। जगद्गुरु व्याप्त है। चौथा शासक जिसे सब प्रेम करते हैं। ऐसा गुरु जो पूजनीय की इच्छा नहीं रखता। उसे लोग प्रेम करते हैं। यही सद्गुरु है। सद्गुरु की लोग पूजा नहीं, प्रेम करते हैं। बुद्धपुरुष को पूजनीय बनने की लालसा नहीं होती।

कल हमने एक वाक्य की सुंदर चर्चा की। लोग पधारने को कहे, पधारना। आने नहीं देते, पधारने को कहते हैं! गुरु तो आना चाहिए। गुरु को लगे, मैं यहां आऊं। मुझे ठीक लगे तब आऊं। मैंने हरीन्द्रभाई दवे से कहा था 'पधरामणी', शब्द रजस् गुण रखता है। गुरु को आने दीजिए। माधव रामाजुज ने लिखा है -

एक एवुं घर मळे आ विश्वमां,

ज्यां कशा कारण वगर पण जई शकुं.

जहां बेवजह जाया जाय ऐसा एक महोल्ला मिले। लोगों ने बुद्ध को प्रेम किया। महावीर, तुकाराम, नरसिंह, संतों को प्रेम किया। ये सभी सद्गुरु है। उपनिषद में 'गुरु' शब्द है, 'सद्गुरु' शब्द है ही नहीं। गुरु को आगे-पीछे विशेषण की जरूरत ही नहीं। पर मध्यकालीन संतों ने 'सद्गुरु' शब्द का बहुत प्रयोग किया, क्योंकि उन्हें 'असद्' दिखे होंगे! घी के डिब्बे पर 'शुद्ध' लिखा हुआ होता है। 'शुद्ध' लिखने की जरूरत नहीं। डालडा आया इसीलिए कम्पलसरी लिखना पड़े कि यह शुद्ध है!

आज जाते समय भी स्पष्ट करूं कि मैं किसी का गुरु नहीं हूं। मेरा कोई शिष्य नहीं है। बड़ी तादाद में मेरे श्रोता है। यह मेरा खुलेआम निवेदन है। श्रोता है। मेरी ममता मेरे श्रोता में है। आप नौ-नौ दिन से निष्ठा के साथ सुनते हैं तो किसको ममता न हो? और यह ममता बंधन में डाले तो हजार बार बंधन में जाने की तैयारी है। यह सभी मोक्ष मागते हैं। मोक्ष माने क्या? आप इस जगत के बगीचे में रहकर फूल-पत्ते न तोड़े यह मोक्ष है। सर्वस्व त्याग करे, परंतु पत्ते तोड़े तो यह 'भीतर मोह भरपूरजी'

है। मोक्ष माने मो+क्ष। मोह का क्षय। जो वस्तु अपने बिना कारण के मोह का क्षय करे वही मोक्ष है। वह मोक्ष क्या है? साहब, मौज में रहिए न! मोक्ष नामक सोसायटी होगी? तो यह श्रीमंत लोग ही ले ले! यहां प्रेम, नीति, प्रामाणिकता, आनंद से जी लेना है। इससे बढ़कर मोक्ष क्या होगा? मोक्ष की बातें करनेवाले के चेहरे पर रूक्षता होती है। पहले अपनी रूक्षता का तो मोक्ष कर! यह पृथ्वी जीने योग्य है, जैसे विज्ञान ने सुविधाएं दी है। मुझे तो होता है कि अभी बहुत जीना है। मेरे हिस्से का मोक्ष आपको दक्षिणा में दिया, आप बांटकर खाना! फिर भी कोई मोक्ष का मार्ग बताए और आपकी इसमें रुचि हो तो जरूर उस मार्ग पर जाइए। हमने नौ दिनों तक भजन और भोजन में जो लिज्जत पाई है, वह अनोखी है! बड़ौदा के इतिहास में इतना बड़ा भंडारा पहली बार होगा! आज एक लाख-पच्चीस हजार भोजन करेंगे ऐसी धारणा है, जिसे सच बनाइयेगा! आज तो भरपेट खाईए कि रसोई कम पड़ जाय! यही तो स्वर्ग है। मोक्ष और क्या होगा? मेरा भरत मुक्ति नहीं मागता -

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।

जनम जनम रति राम पद यह बरदानु न आन।।

नरसिंह महेता कहते हैं -

हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जनम जनम अवतार रे;

नित सेवा नित कीर्तन ओच्छव, निरखवा नंदकुमार रे;

बाप, प्रेम से जी ले। मोक्ष मिल जाय तो फिर आप करेंगे क्या? एकदम फ्री हो जायेंगे! 'गीता' का कहना है, बिना कर्म के आदमी जी नहीं सकता। यह तय है कि वहां कथा नहीं है। वहां हरि होंगे पर हरिकथा नहीं होगी! वहां चाय नहीं है! हां, वो है!

तो, ऐसा कोई सद्गुरु मिले तो अपना कर्णधार बन सके। सात प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। फिर कागभुशुंडि ने गरुड के पास कथा को विराम दिया। याज्ञवल्क्य महाराज ने भरद्वाज के पास कथा पूरी की या नहीं, स्पष्ट नहीं है। कैलास की ज्ञानपीठ पर से भगवान महादेव पार्वती के पास कथा को विराम देते हैं। कलिपावनावतार तुलसीदास कथा को विराम देते वक्त तीन सूत्र देते हैं -

यह कलिकाल न साधन दूजा।

जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा।।

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि।

संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।।

तुलसी कहते हैं इस कलियुग में हम कहां योग साध सकते हैं? तपस्या कर सके; जप, तप, व्रत, पूजा कहां होते हैं? हम रामस्मरण कर सकते हैं? सत्य, प्रेम, करुणा का सेवन करे। राम को गाईए, राम को सुनिए। यह 'सुमिरिअ' शब्द मुझे 'सत्य' लगता है। जहां गाना वहां प्रेम होता है। प्रेम से गाना होता है। 'संतत सुनिअ।' बिना करुणा श्रवण नहीं होता, साहब! तुलसी ने भी कथा को विराम दिया। इन चारों आचार्यों की प्रासादिक छाया में बैठकर इस बड़ौदा की भूमि पर नौ दिनों की कथा मैंने तलगाजरडी जीभ से गाई। अब इस कथा को विराम देने जा रहा हूं तब मुझे प्रसन्नता हो रही है। पुन: एक बार चौदह साल के बाद बड़ौदा की इस विशाल जनमेदनी के सामने भगवान की कथा गाने का अवसर प्राप्त हुआ। बाप! भगवद्कृपा से एक सुंदर आयोजन हुआ। यह राजू और उसका परिवार, आप सबका सहयोग, मीडिया ने भी काफी सहयोग दिया। मैं जो बोलूं वही शब्द छापे, इसी तरह यह मेसेज ठेठ तक पहुंचाने में मदद की है। सुरक्षाविभाग भी। सभी पक्ष सफल रहे हैं। यह कथा २०१४ में शुरू की थी। वह ठेठ २०१५ में पूरी हुई! दो वर्ष! आप सब श्रोताओं के प्रति मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। व्यासपीठ के प्रति आपका आदर और मान, इसके बारे में क्या कहूं? आप सबको प्रणाम करता हूं। इस परिवार ने कथा का आयोजन किया। ऊंचा मनोरथ लेकर किया। मैं आशीर्वाद तो क्या दूं? मेरी क्या हैसियत? मुझे जिन पर बहुत भरोसा है, ऐसे मेरे हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करूं कि इस परिवार में 'वंशे सदैव भवतां हरिभक्तिरसस्तु।' इसकी परंपरा में भगवान ऐसे उत्तम कार्य करने की शक्ति प्रदान करे।

मेरे भाई-बहन, आपके हृदय तक कोई बात पहुंची हो और आत्मा को कबूल हो तो यह बात आपकी हो जाती है। मैं इस पोथी को बांध रहा हूं। आपको अपने जीवन के मोड़ पर इस पोथी को खोलनी पड़ेगी। जीवन का 'बालकांड', 'अयोध्याकांड' आदि भ्रष्ट हो तो इस ग्रन्थ के सोपान आपकी सहायता करेंगे। आपके जो गुरु हो, मंत्र हो उसी के साथ रहियेगा। जो रुचिकर लगा हो उसे जीवन के साथ जोड़ना। बाप, नौ दिवसीय रामकथा 'मानस-करनधार' विश्राम लेती है। 'रामकथा' का सुकृत जगत के बुद्धपुरुषों के चरणों में समर्पित करें। मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं, खुश रहिए, खुश रहिए, खुश रहिए।

मानस-मुशायरा

शबभर रहा खयाल में तकिया फ़कीर का।
दिनभर सुनाउँगा तुम्हें किस्सा फ़कीर का।

हिलने लगे हैं तख्त उछलने लगे हैं ताज,
शाहों ने जब सुना कोई किस्सा फ़कीर का।

– विजेन्द्रसिंह 'परवाज़' साहब

उसे किसने इज़ाज़त दी गुलों से बात करने की।
सलीका तक नहीं जिसको चमन में पांव रखने का।

–मासुम गाज़ियाबादी

या तो कुबूल कर मेरी कमजोरियों के साथ,
या छोड़ दे मुझे मेरी तनहाइयों के साथ।

लाज़िम नहि है हर काई यहां कामयाब ही।
जीना भी सीख लीजिए नाकामियों के साथ।

– दीक्षित दनकौरी

जिस दीये में हो तेल खैरात का,
उस दीये को जलाना नहीं चाहिए।

जिस बुलंदी से इन्सान छोटा लगे,
उस बुलंदी पे जाना नहीं चाहिए।

–शहूद आलम आफ़ाकी

किस पर पथ्थर फेंके 'कैसर', कौन पराया है?
शिशमहल में हरएक चेहरा मुझ-सा लगता है।

– 'कैसर'

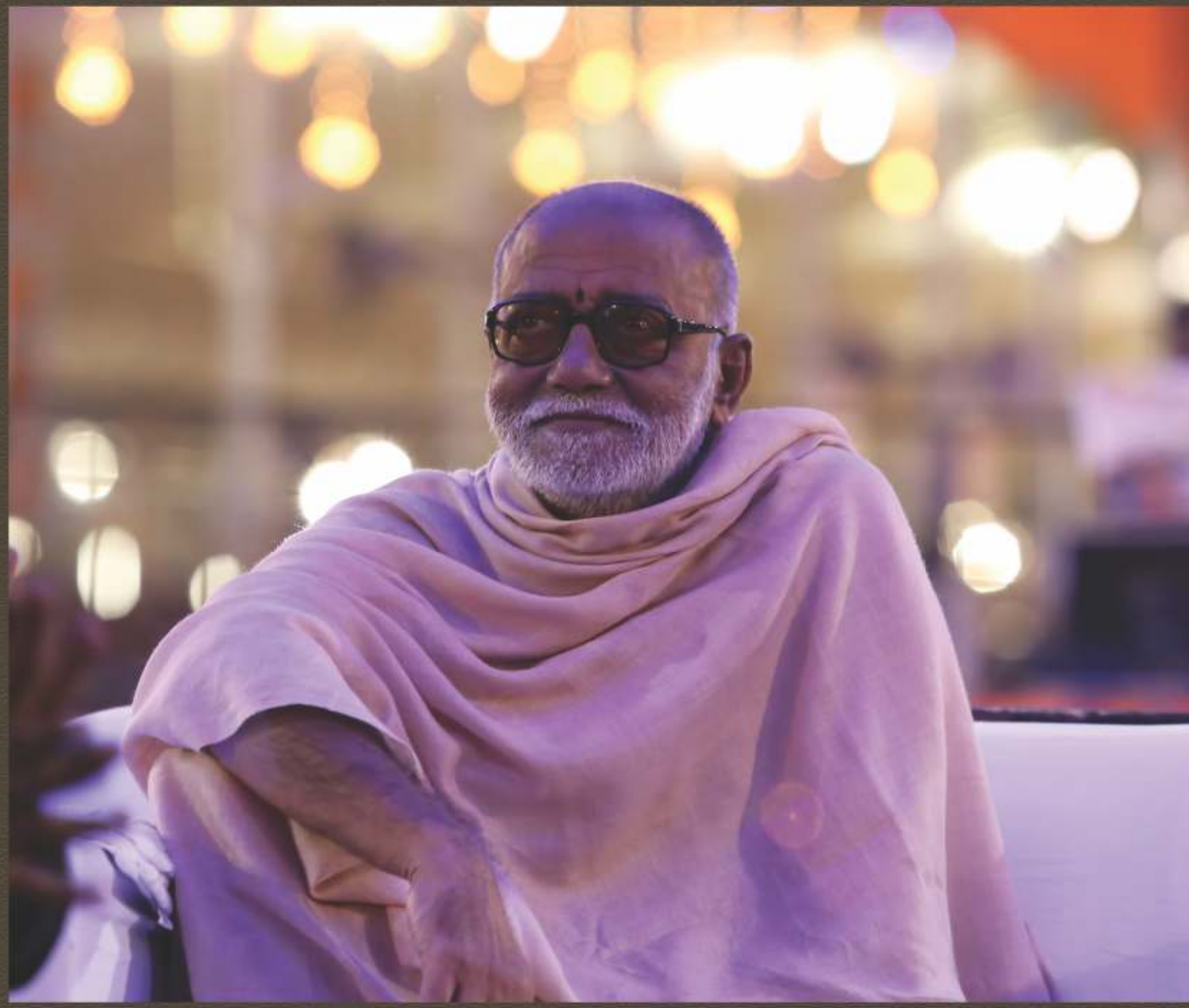

'फूलछाब' पंचतत्त्व की वंदना करता है

'फूलछाब' अवॉर्ड-२०१४ अर्पण समारोह में मोरारिबापू का प्रासंगिक उद्‌बोधन

'फूलछाब' दैनिक द्वारा प्रतिवर्ष एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायी कार्य हो रहा है। इसमें सम्मिलित होने का अवसर मिला इसका मुझे आनंद है। कल विश्ववंद्य पूज्य राष्ट्रपिता गांधीबापू का जन्मदिन था। लालबहादुर शास्त्रीजी का भी जन्मदिन था। आप सब जानते हैं कि २, अक्टूबर यह 'फूलछाब' का भी प्राकट्य दिन है। उस दिन मैं प्राय: आता ही हूं। इस बार भी मैंने कौशिकभाई से कहा कि मैं तारीख दो को आऊंगा। 'दुर्ग कथा' एक घंटा जल्दी पूरी करके मैं पहुंचूंगा ही। परंतु एक दूसरा विचार भी आया। मुझे फिर लौटना पड़े क्योंकि यह तीन तारीख को पूरा होता है। मैंने बिनती की इसमें थोड़ा परिवर्तन कर तीसरी तारीख को रखे तो अच्छा रहेगा। पर यह संभव न हो तो मैं दो तारीख को आऊंगा। 'फूलछाब' का घराना बहुत ऊंचा है। घराने की एक महत्ता होती है। ऊंचे घरानेवालों को शील का पता होता है। उन्होंने मुझे अनुकूलता कर दी कि बापू तीसरी को रखें। शायद दो तारीख के कार्ड छप चूके थे ऐसा मुझे कार्ड मिला उस पर से लग रहा था। फिर भी मुझे पता नहीं लगने दिया! साहब, जीतना सरल है, समझकर हारना बहुत मुश्किल है। एक शे'र है -

इस खेल में कोई दानिस्ता मुझ से हार गया।
बस यही एक एहसास मुझे जिंदगीभर मार गया।

दानिस्ता माने जानबुझकर हारनेवाला। वह जीतनेवाला था, परंतु जानकर भी हार गया। यही बात खटकती है। मुझे अनुकूलता कर दी यह उनका शील है। मुझे तो कई जगह जाना होता है। सभी कार्य अच्छे होते हैं। पर पक्षपात या क्या कहूं? 'फूलछाब' के कार्यक्रम में न आ सकूं तो मुझे दु:ख होता है। मैं आ सका इसका मुझे आनंद है। मुझे अनुकूलता कर दी इसके लिए 'फूलछाब' के शील को नमन। आज के इस प्रेरणादायी कार्यक्रम में उपस्थित 'फूलछाब' परिवार के गुरुजन, जिन्होंने चयन समितिकाकार्य किया है ऐसे तीनों आदरणीय गुरुजन, जिनकी हमने वंदना की ऐसे ८३ वर्षीय केर साहब, पुत्री, गुरुजन, इन सभी को मेरे नमन।

मेरी मान्यता रही है कि सबके सन्मान होते हैं। बडी उम्र में होते हैं; होने चाहिए। पर मंगला आरती भी होनी चाहिए। राजभोग की आरती भी होनी चाहिए। शृंगार की आरती भी होनी चाहिए। यह 'फूलछाब' कर रहा है। 'फूलछाब' ने आज कितनी सुंदर मंगला आरती की! शृंगार आरती और तमाम वय की वंदना आज यहीं पर हुई। ऐसे कार्यक्रम में साक्षी होना कौन पसंद न करे? यह कार्यक्रम तो हमसाया है। बिलकुल अंधेरा हो जाय तब साया अलग हो जाता है। जब सो जाना हो, लाईट बंद कर दे तभी साया नहीं होता। बाकी प्रोग्राम सतत साया बनकर चलता है! इसका आनंद है। कुछेक क्षेत्र स्वीकार लें तो शिकायत न करें! या तो वह क्षेत्र छोड़ दो या सहर्ष स्वीकार कर लो। हमें समझना चाहिए कि किसी भी प्रसंग पर लोग हमारी मांग क्यों रखते हैं? साहब, इस देश की सवा सौ करोड बस्ती है। इसमें कुछेक विशिष्ट लोगों को ढूंढते हैं तब उनकी भी जिम्मेदारी है।

कहां से शुरू करूं? मैं इन पांचों को देखता था। इनका परिचय पाता था। विज्ञान और अध्यात्म सिद्ध कर चुका है। 'रामचरित मानस' की पंक्ति है -

छिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम सरीरा ।।

पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि। इन पांचों से पिंड-शरीर बना है। यह ब्रह्मांड भी पांच का बना है। विज्ञान भी सिद्ध करता है, स्पेस में कहीं हवा नहीं है। फिर दूसरे ग्रह के गुरुत्वाकर्षण में जाय तो वहीं खींचे जाए। पिंड हो या ब्रह्मांड, पंच महाभूतमय है। हमारे शरीर में भी पांच है। हम में अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी तत्त्व है।

मुझे लगता है 'फूलछाब' ने पंचतत्त्व की वंदना की है। मेरी दृष्टि में ये पांचतत्त्व समाज के रत्न है। 'बहुरत्ना वसुंधरा।' कहीं विदुरनीति में भी मिलता है। चाणक्य भी रत्नों की बात करते हैं। अपने सौराष्ट्र का एक दोहा भी है कि तुरंग और नदी ये सभी अपने यहां के रत्न है। वसुंधरा रत्नों से भरी है। पर अपनी सौराष्ट्र की भाषा में ऐसा भी कहा जाता है, किसीको हम इस ढंग से देखें कि वह कहे कि यह कौन है? तो कहे कि 'नंग' है! उसे कहां पर रखे यह हमें पता नहीं! समाज में भी 'नंग' होते हैं! उनमें से रत्न खोज निकालने हैं। मुझे पता है कि आपके आशीर्वाद से, ईश्वर की कृपा से, किसी बुद्धपुरुष ने दी विवेकबुद्धि से तलगाजरडा में भी निमित्तमात्र ऐसे कार्य होते रहते हैं।

मुझे पता है समाज में से वंदना योग्य पात्र खोजना मुश्किल कार्य है। कुंदनभाई, मैं तो कहीं हस्तक्षेप करूं ही नहीं। मैं तो दूर ही बैठूं। कहूं, वह अपना काम नहीं; यह तो आप ही संभालिए। अवॉर्ड के लिए नाम निश्चित हो समिति द्वारा, फिर भी कोई नापसंद करे, किसी के प्रति ज्यादा राग हो, किसी के प्रति द्वेष ज्यादा हो, यह सब होता रहता है। आखिर आदमी तो ही है। फिर जो दोषारोपण हो सब मुझ पर होता है कि भाई, यह तो वही करे, उनका ईशारा काफी होता है! भद्रायुभाई,

आप वरिष्ठजन जिन्होंने यह कार्य किया है, मैं देख रहा हूं। जय को बीस वर्ष पहले यह हुआ। जय का सन्मान आकाश का सन्मान है। एक युवा जिसके पंख नहीं है, पैर नहीं। पर साहब, उड़ान पंखों से नहीं, होंसले से होती है।

एक ज़ख्मी परिन्दा है, वार मत करना।
पनाह मांग रहा है, शिकार मत करना।

एक ऐसी व्यक्ति जिसे कुदरत ने कुछ खामियां दी है। उसके पास हास्यरस है। इसे व्यक्त करने उसके पास अपने शब्द है। मुझे लगता था, यह छोरा क्या बोलेगा? सबकी ओर से क्या प्रतिभाव देगा? पर गज़ब है! शब्द साधना करता है। शब्द आकाश की संतान है। इसलिए कुंदनभाई, इस छोरे की वंदना 'फूलछाब' ने की यह जय की नहीं, आकाश की वंदना है। साहब, वेदांत में आकाश के कई प्रकार है। यह तो महाकाश है। हमारे आंगन की दीवार या अपना घर हो, दीवार के अंदर एक अवकाश है; यह भी आकाश ही है, जिसे महाकाश कहा। हमारे घर में पानी का घडा भरा हो पर पानी न हो तो उसे घटाकाश कहते हैं। आध्यात्मिक जगत में आकाश के कई कार्य है। छोरा छोटा है, हैसियत बड़ी है। हौंसले से उड़ रहा है; उड़ेगा, इसका हमें आनंद है। मेरी दृष्टि से 'फूलछाब' ने आज आकाश की वंदना की है, आकाश का पूजन किया है। मैं इस दृष्टि से जय को मिले अवॉर्ड का मूल्यांकन करता हूं।

'छिति जल पावक', जिन्होंने कृषि में-पर्यावरण में इतना सारा कार्य किया। आपने अवॉर्ड के विभाग पसंद किए ये विस्तृत है। मैं शब्द का उपासक हूं। शब्द का व्यर्थ उपयोग करूं तो माँ सरस्वती श्राप दे। फिर इसका कोई प्रायश्चित्त नहीं होता, साहब! आपने पांच महत्त्वपूर्ण क्षेत्र तय किए हैं। कृषि-पर्यावरण की बात में प्रेमजीभाई ने तपस्या की है। यह अवॉर्ड प्रेमजीभाई को नहीं पर पृथ्वीतत्त्व को गया है। आज समस्या पृथ्वी की है, पर्यावरण की है। धरती सूख रही है। दुनिया की विकृतियां पृथ्वी को ही सहन करनी पड़ी है। शास्त्रों की बात ले तो यह बात सत्य है कि पृथ्वी को ही परेशान होना पड़ा है। 'रामचरित मानस' में लिखा है कि रावण के आतंक के सामने सबसे पहले पृथ्वी त्राहिमाम कर गई। ऐसे समय कृषि-पर्यावरण के लिए तपस्या करते प्रेमजीभाई को वंदन करता हूं। 'फूलछाब' और आप सबने की यह मेरी दृष्टि से पृथ्वीतत्त्व की वंदना है।

केरसाहब प्रोफेसर और समाजसेवी! जब तक आदमी पानी जैसा पतला नहीं होता तब तक समाजसेवा नहीं कर सकता। आदमी पानी की तरह पतला होना चाहिए। पानी थोड़ी-सी जगह मिले तो अपना रास्ता कर लेती है।

खूटी तोये पाषाण सरवाण वहेतां,
नमो हिंदना पाटवी संत नेता ...

ऐसे शब्द गांधीजी के लिए लिखे गए। केरदादा का काम! उम्र ७१, मुझ से दो साल बड़े, कितना सारा कार्य किया! हम तो वहीं के वहीं पड़े हैं! साहब, कल्पना तो कीजिए, साहब! आपकी वंदना की गई है। मुझे लगता है कृष्ण जैसा इस जगत में कोई समाजसेवक नहीं हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण समाजसेवा का कोई क्षेत्र चूके नहीं है। इसीलिए शायद भारतीय मनीषा उन्हें पूर्णावतार मानती है। बाप, आपका कार्य मेरी दृष्टि से जलवंदना है। इतनी सूक्ष्मदृष्टि से समाज सेवा करनी, समाज की प्रगति करनी और युवावस्था में ही नौकरी छोड़ देनी और निरंतर इस कार्य में प्रवृत्त रहे!

ये सभी तपस्वी हैं। पंचकेशी और भस्मधारी ये सभी प्रणम्य तो है ही, वे तो तपस्वी है ही। उनके पास मजबूती और मजबूरी दोनों होती है। क्या ये तपस्वी नहीं है? इस लड़के को तपस्वी न कहूं तो किसे कहूं? इक्कीसवीं सदी का यह लड़का तपस्वी है। यह केर बापजी भी तपस्वी है। जिन्होंने जल की तरह सूक्ष्म समाजसेवा पसंद की है। प्रेमजीबापा ने पर्यावरण की बातें की। जिन्होंने सेवा के लिए जमीनतत्त्व का स्वीकार किया। माने पृथ्वीतत्त्व की सेवा की। ये तपस्वी हैं। ऐसे तपस्वी ढूंढने होते हैं। जो तपस्वी थे उन्हें नहीं ढूंढना है। ये सब आश्रम में जाकर बैठ गए हैं! सभी अपनी जगह है! अच्छा है। तपस्या करने से शांति मिले और हमें भी ओर प्रकार की शांति मिले! इन तपस्वियों का कोई युनिफार्म नहीं होता। पायजामा, चड्डी में भी हो सकते हैं। उन्हें युनिफोर्म नहीं, किरदार होता है।

चेहरा तो तुझ से भी हसीन खोज़ लूंगा,

लेकिन किरदार तेरी मिसाल का कहां से लाउं? सवाल किरदार का है। सवाल जीवनमूल्यों का है। वह कहां से लाउं? अत: हमने पृथ्वी की वंदना की।

उद्योगतत्त्व की वंदना हुई, साहब। उद्योग तत्त्व; 'छिति जल पावक गगन समीरा।' उद्योगत्व मेरी दृष्टि से वायु की वंदना है। उद्योगक्षेत्र में जिसने काम किया वह वायु की वंदना है। ऐसा क्यों कहता हूं? वायु एक जगह नहीं रहता, विहार करता है। वायु को बांध नहीं सकते। वही स्थिति उद्योग में काम करनेवाले की है। उपनिषद में कहा गया है, 'उद्यमो भैरव:।' शंकर के साथ काल भैरव हो या शांत भैरव या फिर अलग-अलग रीति की साधना पद्धति, मुबारक! शिव की कल्याणकारी विचारधारा का भैरव कौन? शास्त्र कहते हैं, 'उद्यमो भैरव:।' उद्यम उसका भैरव है। कोई भी व्यक्ति उद्यम करे।

कहे कबीर कछु उद्यम कीजे।

हर्ष ब्रह्मभट्ट साहब की गज़ल है गुजराती में। एक पंक्ति पसंद है, पूरी याद नहीं।

श्रम करो ओ संतजी, आश्रम नहीं।

मेरी दृष्टि से यह वायुतत्त्व की वंदना है। एक आदमी ने वायु की तरह यहां उद्योग की स्थापना की। यहां-वहां स्थापना की। फिर उद्योग के परोपकारी पवनत्व ठेठ तक पहुंचना चाहिए। सब में बांटना चाहिए। 'तेन त्यक्तेन भूंजीथा:।' मरीज़ साहब की बहुत प्रसिद्ध गज़ल है।

बस एटली समज मने परवरदिगार दे.
सुख ज्यारे ज्यां मळे त्यां बधांना विचार दे.

उद्योग करनेवाले वायु की उपासना करते है। वायु को बांध नहीं सकते इसका विस्तार होता है। बहने दीजिए। झोंपडी तक पहुंचाइए। आखिरी आदमी को फायदा पहुंचे ऐसा करना चाहिए। उद्योग क्षेत्र में कार्यरत परसोत्तमभाई को नमन करता हूं। आपने जिस तरह से खोज की, मैंने देखी; बहुत प्रसन्न हूं, बाप!

खेलकूद क्षेत्र का अवॉर्ड पुत्री रीना को मिला। गांव की लड़की! धन्य है उसके माँ-बाप! जहां उसकी सगाई हुई है, सास-ससुर ने उसे अनुकूलता कर दी। कहा बेटा, तू ये सब करती रहना। सुरेश दलाल कहते थे, 'सासु अने चोमासु क्यारे आवे' कहा नहीं जाता! कब आ जाय कुछ कहा नहीं जा सकता! बेटी को चारों ओर से अनुकूल वातावरण मिला। खेलकूद क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया है। बहुत अवॉर्ड मिले हैं। अपने ही रेकर्ड तोड़े ऐसी हनुमानजी से प्रार्थना करता हूं। रीना की वंदना मेरी दृष्टि से तेज की वंदना है। कवि गंग की कविता है -

रति बिन राज, रति बिन पाट।
रति बिन मानव लागत फीको।
रति बिन साधु, रति बिन संत।
रति बिन जोग न होय जती को।

रति न हो, तेजस्विता न हो, ओजस न हो, हीर न हो तो, बिना नूर का आदमी फिका लगता है।

कवि गंग कहे सुनु शाह अकबर,
रति बिन मानव एक रति को।

बिना रति के इन्सान की कीमत एक कौडी की होती है! इस पुत्री ने तेज की आराधना की है। वह तेजगति से दौड़ी है। इसकी त्वरा है, उसमें तेजस्विता है।

'फूलछाब' द्वारा जो पांच विशेष अवॉर्ड दिए जाते हैं वह मेरी दृष्टि से प्रतिनिधित्व करते जगत के

पंचमहाभूतों की अवॉर्ड से वंदना हुई इसमें मैं इस बार भी आ सका। यह मैं अच्छा लगाने नहीं कहता। इसमें क्या? आप मुझे समझ सकते हैं। यदि न समझ सके तो ऐसी आशा रखनी व्यर्थ है कि सभी हमें समझ सके! इसमें हम धोखा खा जाय! एकांगिता आ जाय। मैं तो प्रसन्न होता हूं। कुंदनभाई ने कहा, सौ साल नज़दीक है। फिर से दोहराऊं कि मेरा आना पक्का हो गया है! ठीक है न? हमें और भी जीना है यह पक्का हो गया। यार, मरना किसे है? मरे मेरी बला! पूरे ब्रह्मांड में ऐसी वनस्पति होगी या नहीं? पानी होगा? मनुष्य होगा? सांई मकरंद तो मंगल तक की बात करते कि वहां भी कुछ होना चाहिए। जो भी हो। विज्ञान कुछ भी बाकी नहीं रखता। थोड़े समय में साफ हो जायगा। बराबर? हमें भविष्यवाणी करने की जरूरत नहीं है। सब कुछ सामने आ जायगा। पर अभी हमें कुछ पता नहीं है। शून्य पालनपुरी ने कहा -

छुं शून्य ए न भूल ओ अस्तित्वना प्रभु;
तुं तो हशे के केम, पण हुं तो जरूर छुं.

अपनी पृथ्वी पर तो सब कुछ है। ऐसी पृथ्वी छोड़कर मरने की इच्छा किसकी हो? कई लोग 'मर गए, मर गए!' कहते हैं और वो डोक्टरवाली बात। यमराजा के यहां गए, लौट आए और ऐसे जीवित है! यार, हमें जीना है! 'फूलछाब' सौ साल पूरा करे, भगवान करे, वैसे अपनी इच्छा है। वैसे कुछ विपरीत हो जाय तो हमसे कुछ नहीं हो सकता, पर इच्छा है। अच्छा विचार फलता है। तो यह अखबार सौ वर्ष की ओर गति करता है। भद्रायुभाई, ओशो ने ऐसा लिखा है कि मैं जापान गया या जापान से उनके कोई मित्र आए। उन्होंने मुझे बुद्ध की मूर्ति दी। इसकी विशेषता यह थी कि एक हाथ में तलवार और एक हाथ में दीया। मैंने मित्र से इस छोटी-सी मूर्ति का रहस्य पूछा। बुद्ध और तलवार! दीया तो समझ में आता है पर यह क्या है? ओशो लिखते हैं, मेरे मित्रने कहा, आप इस ओर से देखेंगे तो एक हिस्सा धारदार लगेगा ज्यों तलवार मारक, धारदार रहती है। दूसरी ओर

देखेंगे तो उसी बुद्ध का चेहरा अति सुकोमल, शीतल प्रकाश सा दिखाई देगा। एक छोटी-सी भेंट में ऐसा देखा।

मैं शिल्पी, मूर्तिकार, चित्रकार नहीं हूं। हनुमानजी का चेहरा चित्रित कर सकता हूं। मैं मूर्ति बनाऊं और 'फूलछाब' को देनी हो तो दो हाथ में फूल हो ऐसी मूर्ति दूं। साहब, फूल जैसी धार और किसी में नहीं है। तलवार घिस जाती है, तलवार का चलानेवाला बूढ़ा हो, कायर हो, उसमें शूरवीरता न हो तो! 'फूलछाब' हंमेशा दो हाथ में फूल रखकर, बहुत उच्च घराने में रहकर, इतनी लम्बी यात्रा तय की है यह पूरा समाज जानता है। यह अखबार शतायु होने जा रहा है तब मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। यह कृत्रिम नहीं है। आप तो कहेंगे, बापू ज्यों-त्यों कर आए पर मुझे आना था सो आ गया। इसका मुझे बहुत आनंद है। 'फूलछाब' यूं ही अपनी यात्रा आगे बढ़ाए। हम जानते हैं कि आज स्पर्धा का युग है। जूठा सब बोला जाता है, लिखा जाता है! ऐसी एक विषम परिस्थिति में से हम गुजर रहे हैं।

कथा में आपने सुना होगा कि राजगाव गाम से चिठ्ठी मिली। एक श्रोता ने दी। उसमें लिखा था कि पच्चीस साल पहले आप इस गांव में कथा करने आए थे उस समय स्कूल में नौकरी करते थे। आप स्कूल में ठीक वक्त पे पहुंच नहीं सके तो आपके बदले भगवान वहां ड्यूटी भर आए, यहां ऐसी बातें होती है! मैंने कहा, उस समय मुझे १२७ रूपये पगार मिलती थी, उसमें मैं भगवान को भेजूं? उसे भेजूं तो वो इसमें से कितना ले जाय! मैंने कहा, ऐसी अंधश्रद्धा फेंक दीजिए, यार! पर ऐसा छपता है, लिखा जाता है; उसमें न तो सत्य होता है, न तथ्य। खैर! कीचड़ के बीच कमल खिले यों सभी वस्तु से यों असंग रहकर 'फूलछाब' अखबार खिलता रहे। मैं तो कहूंगा, भगवान करे ऐसा होगा ही नहीं, चिन्ता मत कीजियेगा; पर कदाचित पन्ने कम करने पड़े तो चिन्ता मत कीजिए पर हैसियत कम न होने देना।

बस, इससे ज्यादा क्या कहूं? मुझे कितनी मिनट बोलना यह लिखा नहीं था तो शायद ज्यादा भी बोलना हो गया होगा। मुझे अपने भाव व्यक्त करने थे। अगले वर्ष तो मैं ऐसा आयोजन करूंगा कि २ अक्टूबर को कहीं पर कथा ही न हो। मैं अपना रीजर्वेशन कराता हूं! मुझे आमंत्रित न करे ऐसा हो ही नहीं सकता। पर ऐसा होता भी है! मैंने फंक्शन में कहा था कभी, पता नहीं। एक जगह बहुत बड़े उद्घाटन में मेरा नाम था। भद्रायुभाई, बहुत बड़ा उद्घाटन, विशिष्ट गुरुजनों थे। मेरे बदले सोमनाथ चेटर्जी मिल गए। उस समय लोकसभा के अध्यक्ष थे। मेरा नाम निकाल दिया! बापू तो परोपकारी है न! उन्हें कोई निन्दा-अस्तुति जैसा कुछ होता ही नहीं! मैं कितने किलोमीटर दौड़कर गया! वहां जाकर पता चला कि मेरा प्रोग्राम तो शाम को है! मैंने कहा, सुबह का लिखा है! मुझे लालसा नहीं थी कि मैं उद्घाटन करूं। आप पचासबार आ चुके थे! साहब, ऐसा भी अच्छी तरह से हुआ! कितने बड़े आदमी चेटर्जी साहब। कुंदनभाई जानते हैं कि वे कितने बड़े हैं। इतने वर्षो तक सांसद रहे। लोकसभा के स्पीकर बने। तो मेरे लिए भी तो कुछ करना पड़े न! लोग तो चालाक है, इसका मुझे पता चल गया है! मुझसे कहा, 'बापू, आपको सुबह जल्दी पहुंचना न पड़े इसीलिए आपके लिए तीन बजे होल के पास ही एक मुख्य रीडिंग रूम है, उसका उद्घाटन आपको करना है।' अब मैं क्या ना बोलूं? उनका खराब न लगे, मेरा घराना लज्जित हो जाय।

('फूलछाब' एवोर्ड अर्पण समारोह-२०१४ में राजकोट (गुजरात) में प्रस्तुत मोरारिबापू का वक्तव्य : ता. ३-१०-२०१४)

सांध्य-प्रस्तुति

शंकर महादेवन्

अतुल पुरोहित

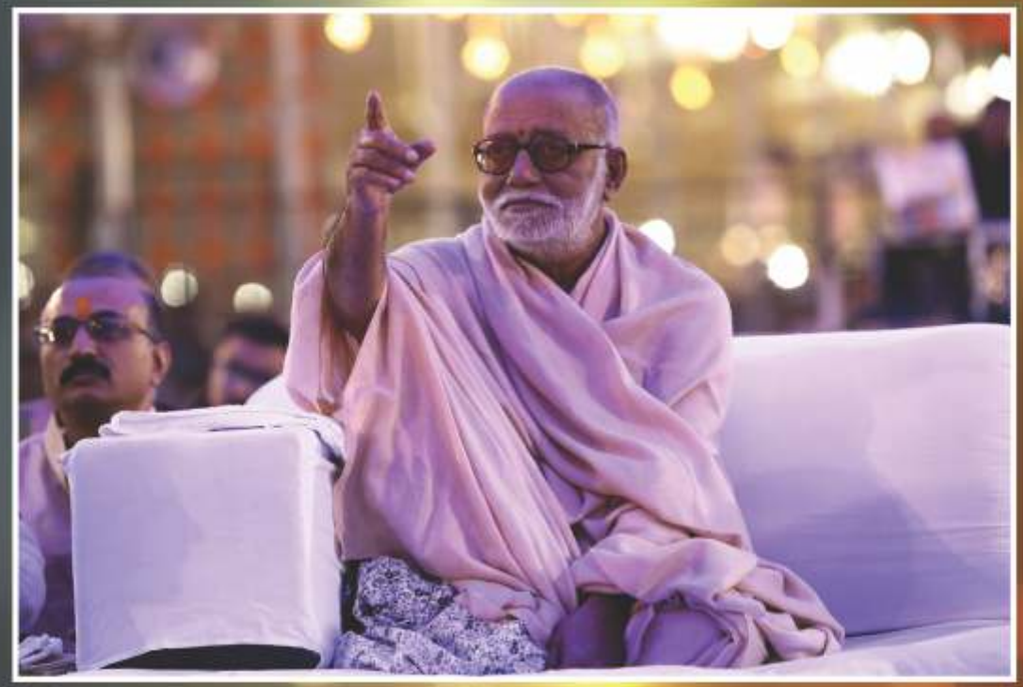

ज्योति नूरान

सुलताना नूरान